जनवरी–मार्च, 2017
वर्ष-15 अंक-2

सुगन्ध

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

संपादकीय

काश कुछ ऐसा ही हो...

अक्सर हम सुनते हैं कि हम अपने कर्मों से ही महान बनते हैं अथवा अपनी महानता का कारण हम खुद होते हैं। लेकिन हमें यह भी समझना बहुत जरूरी है कि हमारा व्यक्तित्व (आत्म) अपना अकेले का उत्पाद नहीं होता। इसे बहुत से लोग मिलकर तैयार करते हैं और यह बात शासन-सत्ता के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में भी उतने ही कारगर ढंग से लागू होती है, जितने कि एक खास आदमी और एक आम आदमी के स्तर पर...।

हाँ! यह बात अलग है कि एकलव्य जैसे कुछ लोगों के आत्म के निर्माण में उनकी भूमिका बहुत अधिक हो सकती है और अर्जुन जैसे कुछ लोगों के निर्माण में उनके आत्म के साथ-साथ सत्ता और व्यवस्था से जुड़ी सारी शक्तियाँ उनके अनुकूल सहयोग करती हैं। फिर भी आत्म विकास अथवा व्यक्तित्व निर्माण के विकास की मूल भावना अपने सिद्धांत पर ठीक बैठती है। यह बात विद्रोही कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' और राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के मामले में भी सटीक प्रतीत होती है, क्योंकि आलोचना करने के बावजूद भी दिनकर के लिए तालियाँ मिलीं और धूमिल को .....।

नव उदाहरणार्थ **15** फरवरी **2017** को इसरो द्वारा एक साथ सौ से अधिक उपग्रहों को प्रक्षेपित करने की सफलता की पृष्ठभूमि को देखा जाए, तो पता चलेगा यह सफलता इसरो के मात्र कुछ वैज्ञानिकों की वजह से ही प्राप्त नहीं हुई, बल्कि इसके पीछे इसरो के पूर्व वैज्ञानिकों, वर्तमान व पूर्ववर्ती सरकारों, विश्व समुदाय के वैज्ञानिकों, देशी-विदेशी शिक्षण संस्थानों के साथ-साथ भारत की असंख्य जनता आदि का सहयोग किसी न किसी रूप में रहा है। विचार मंथन से इसरो की स्थापना वर्ष **1969** से लेकर अब इस मुकाम पर पहुँचने और दुनिया के अग्रणी संगठन के रूप में उभरने की कथा में उपरोक्त सभी अंशधारकों के सहयोग की भूमिकाएँ रेखांकित होती हैं।

हाँ! इस बात को भी नकारा नहीं जा सकता कि देश अथवा समाज ने जिस वैज्ञानिक समूह को इसके लिए तैयार किया है, उस समूह ने अपने अंशधारकों (सहयोगकर्त्ताओं) को निराश नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपनी समस्त शक्तियों का संपुष्ट उपयोग करते हुए भारतीय अंतरिक्ष अभियान को उस शीर्ष पर पहुँचा दिया कि आज समस्त देशवासी उन पर नाज करते नहीं अघाते। अत: वे विशेष बधाई के पात्र हैं।

बात आत्म निर्माण से शुरू हुई है, इसलिए इस मुद्दे पर बात को आगे बढ़ाना जायज होगा। इसरो सरीखे भारत के बहुत से संगठन दुनिया के लिए मिसाल बने हुए हैं। इसका मतलब यह है कि संगठनों को भी जब आत्मनिर्माण के लिए अपने समस्त अंशधारकों से ईमानदार सहयोग प्राप्त हो, तो वे भी एकलव्य अथवा अर्जुन सरीखे बन जाते हैं। उदाहरण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े भारतीयों की कर्मठता, भारत के निर्वाचन आयोग द्वारा बेहतर ढंग से चुनाव कराना, भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा पल्स पोलियो अभियान, चेचक उन्मूलन कार्यक्रम आदि के माध्यम से देश को बीमारियों से बचाने जैसे अभियानों की पूरी दुनिया में प्रशंसा होती है।

इन्हीं अभियानों की तर्ज पर काश! कुछ ऐसा ही राजभाषा हिंदी के विकास हेतु भी हो... इस संदर्भ में एक व्यापक फ्लैगशिप कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए, ताकि भारत की सांस्कृतिक विरासत को दीर्घायु बनाने के साथ-साथ भारत की भाषाई एवं सांस्कृतिक एकता को पूर्णता प्रदान की जा सके। यह काम न तो असंभव है और न ही दुरूह। इसके लिए भरपूर जन समर्थन प्राप्त है और यदि उसी अनुपात में सत्ता का समर्थन भी मिल जाए तो यह कार्य क्रम भी सफल हो सकता है।

इसी सांगठनिक आत्मनिर्माण के उद्देश्य से राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र के तत्वावधान में **24-25** जनवरी **2016** को 'सुगंध रचनाकार सम्मेलन' आयोजित हुआ। सम्मेलन में सुगंध परिवार के संस्थापक सदस्यों, रचनाकारों, चित्रकारों, स्तंभकारों आदि ने भाग लिया और इसे सफल भी बनाया। लेकिन संगठन के शीर्ष नेतृत्व का जो सहयोग मिला, वह सबसे महत्वपूर्ण बात थी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु संगठन का पूरा तंत्र सक्रिय था। संगठनों में हिंदी की विकास धारा की जब-जब बात चलेगी, तब-तब राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के अध्यक्ष-सह- प्रबंध निदेशक श्री पोन्नपल्लि मधुसूदन एवं उनके सहयोगी निदेशकों श्री पी सी महापात्रा, श्री डी एन राव, श्री प्रवीर राय चौधरी एवं श्री के सी दास व अन्य वरिष्ठ प्राधिकारियों का उल्लेख होता रहेगा। वस्तुत: यह कार्यक्रम आत्मनिर्माण प्रक्रिया का जीता-जागता प्रमाण था। राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड वास्तव में राजभाषा के कार्यक्रमों को देशसेवा मानता है और यह कार्यक्रम उस क्रम का एक प्रतीक है।

आपके निरंतर सहयोग एवं सुझाव से फलीभूत होकर 'सुगंध' प्रौढ़ता की ओर अग्रसर हो रही है और राष्ट्रसेवा में अपनी भूमिका के लिए धरातल तलाश रही है। 'सुगंध' की इस तलाश में भी आप सभी सुधी पाठकों, रचनाकारों और अन्य सभी अंशधारकों से अनवरत सहयोग की अपेक्षा है।

संपादक

विषयसूची

'सुगन्ध'

वी एस पी की त्रैमासिक गृह-पत्रिका

वर्ष-15 अंक-2 जनवरी-मार्च, 2017

संपादक

ललन कुमार

उप-संपादक

वी सुगुणा

गोपाल

संपादकीय कार्यालय

राजभाषा विभाग

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र

विशाखपट्टणम-530 031

दूरभाष व फैक्स: 0891-2518471

मोबाइल: 9989317329 & 9989888457

ई-मेल: vspsugandh@gmail.com

vspsugandh@rediffmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

'सुगंध' पत्रिका हमारे संगठन के वेबसाइट ëwww.vizagsteel.comí के ëPublicationsí लिंक में भी उपलब्ध है।

सृजनात्मक स्तंभ

कहानी

चाँदी की सौत	श्रीमती सुधा गोयल	9
मुक्ति	श्री शैलेंद्र तिवारी	16
मजबूर (लघुकथा)	श्री एस के मिश्रा	30
मूल्यांकन	श्री दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'	31
प्रॉमिस	श्री राजेश कुमार 'बादल'	42
महादान	श्रीमती अनिता रश्मि	47

बाल-सुगन्ध

किसान, बेटियाँ (कविताएँ)	सुश्री आकांक्षा मिश्रा	37
आम का पेड़, विज्ञान (कविताएँ)	सुश्री सुप्रिया कुमारी	37-38
साथी, वक्त (कविताएँ)	सुश्री अनूपा कुमारी	38

कविता

श्री 'अंविकेश' की कविताएँ	22-23
श्री मनमथ परिडा की कविता	23
श्रीमती किरण कंचन की कविताएँ	24-25

लेख

एक सकारात्मक पहल: डिजिटल इंडिया	श्री गोपाल	5
गुप्त जी एवं दिनकर जी के काव्यों में नारी चेतना	डॉ दादूराम शर्मा	13
इस्पात उत्पादन व खपत में सामंजस्य	श्री विजय कुमार पांडेय	19
उड़त अबीर गुलाल, अवनी अंबर छायी	श्री रामभवन सिंह ठाकुर	29
मूर्धन्य साहित्यकार (व्यंग्य)	श्री पूरन सरमा	34
इस्पात खपत के तीन घटक ...	श्री एस एन डेहरिया	45

मानक स्तंभ

अध्यात्म - मोह	39
संगीत सरिता	28
वी एस पी के बढ़ते कदम - प्रशिक्षण व मानव संसाधन विकास	35-36
आओ भाषा सीखें	49
कार्य-कलाप	26-27
सुगंध रचनाकार सम्मेलन	40-41
कार्य-कलाप (जारी...)	51

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 127वीं बैठक का आयोजन

6 मार्च, 2017 को आर आई एन एल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 127वीं बैठक आयोजित की गई, जिसमें सभी निदेशकगण एवं समिति के अन्य सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन की विभिन्न गतिविधियों की समीक्षा की गई। क्षेत्रीय व शाखा कार्यालयों के अंतर्गत हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखनेवाले कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने, सभी अधिकारियों द्वारा टिप्पणियों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने, वेबसाइट के हिंदी संस्करण में सुधार लाने, कर्मचारियों का पहचान कार्ड द्विभाषी बनाने तथा प्रचालन व अनुरक्षण कार्यकलापों से संबंधित प्रक्रिया कागजात को हिंदी में अनूदित करने से संबंधित निर्णय लिए गए।

आपकी पाती ✉ हमारी थाती

श्री किशोर चंद्र दास जी,
आपके संगठन की गृह-पत्रिका 'सुगंध' का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में विभिन्न विषयों पर हिंदी भाषा में लिखे गये लेख, कविताएँ, कहानियाँ आदि रुचिपूर्ण और सूचनापरक हैं। पत्रिका से जुड़ी टीम को मेरी हार्दिक बधाई।

- *श्री टी के सेन गुप्ता,* एम एम टी सी, नई दिल्ली

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका 'सुगंध' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। सुंदर मुखपृष्ठ और प्रेरक प्रसंग 'जरा गौर करें' के साथ प्रकाशित 'सुगंध' की प्रति सुखद अनुभव देती है। कहानी, बाल सुगंध, कविता, लेख, अध्यात्म और कार्य-कलाप शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत, व्यवस्थित व कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल को साधुवाद। पत्रिका के माध्यम से आपके उद्यम में संपन्न राजभाषा गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हुई। इस्पात क्षेत्र से संबंधित तकनीकी जानकारी, व्यंग्यपरक लेख व अन्य सामान्य लेख भी पठनीय हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की शुभकामनाओं सहित...

- *श्री होमनिधि शर्मा,* भारत डायनामिक्स लिमिटेड, हैदराबाद

त्रैमासिक गृह पत्रिका 'सुगंध' का सितंबर 2016 का अत्याकर्षक मुख पृष्ठवाला अंक पाकर बहुत अच्छा लगा। संपादकीय में व्यक्त विचार अच्छे लगे। राजभाषा हिंदी के विषय में प्रस्तुत लेख 'हमारी राष्ट्रभाषा: कुछ अनछुए पहलू' बहुत ज्ञानवर्धक है। सभी कहानियाँ रोचक और मार्मिक हैं। कविताएँ पठनीय हैं। इस्पात विषयक लेख महत्वपूर्ण है। सभी साहित्यिक लेख विचारणीय हैं। स्तंभ 'आओ भाषा सीखें' में हिंदी से तेलुगु सीखने के विषय उदाहरण सहित प्रस्तुत जानकारी उपयोगी है। संयंत्र के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी सराहनीय है। अंक समग्र रूप से पठनीय और स्तरीय है।

- *श्री विष्णु वर्मा,* ककोली

'सुगंध' का सितंबर, 2016 अंक भी अपने पूर्व अंक की तरह साहित्यिक छाप लिये हुए है। 'कुछ आस कुछ जज्बात' के अंतर्गत महाश्वेता देवी तथा लच्छू महाराज के माध्यम से जो मुद्दा आपने उठाया है, वह हम सभी के लिए विचारणीय है। अपनी माटी और परिपाटी के साथ समझौता न करने का संकल्प हम सभी को लेना होगा। अंक में डॉ दादूराम शर्मा का लेख 'हमारी राष्ट्रभाषा... पहलू' जानकारी पूर्ण तो है ही, रोचक भी है। बाल सुगंध के अंतर्गत प्रकाशित कवियों मास्टर आशीष कुमार, हिना खान तथा पल्लवी मंडल का विशेष अभिनंदन। उन जैसों से हिंदी का भविष्य सुरक्षित है। कुंवर जावेद की गजलें अच्छी लगीं।

- *श्री कांति कनाटे,* ग्वालियर

दिल्ली के समारोह में आर आई एन एल की गृह पत्रिका 'सुगंध' का जून 2016 अंक प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस पठनीय और स्तरीय पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई स्वीकार करें। इस पत्रिका की मुख्य विशेषता है 'आओ भाषा सीखें'। हिंदी और तेलुगु साथ-साथ सीखें। तेलुगु लिपि के साथ-साथ देवनागरी लिपि में भी तेलुगु भाषा का ज्ञान कराया गया है। कभी तेलुगु की कविताओं को भी इसी प्रकार प्रस्तुत करें। इससे हिंदी भाषी तेलुगु काव्य का भी आनंद ले सकेंगे। 'बाल सुगंध' स्तंभ इस पत्रिका की विशेष उपलब्धि है। नई पीढ़ी को प्रकाशन का अवसर प्रदान करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। बच्चों के निबंध, कहानी और कविताएँ सराहनीय हैं। इन बाल रचनाकारों को आशीर्वाद। श्री राम प्रसाद यादव और राजेंद्र तिवारी जी की कविताएँ स्तरीय हैं। अन्य रचनाएँ भी प्रशंसनीय हैं। मुखपृष्ठ आकर्पित करने में सफल रहा है। मुद्रण त्रुटिरहित है। कुशल एवं प्रभावी संपादन के लिए पुन: बधाई।

- *डॉ हरि सिंह,* नई दिल्ली

'सुगंध' अक्टूबर-दिसंबर-16 का अंक सम्मान समारोह में प्राप्त हुआ। संपादकीय श्री ललन कुमार की विद्वता की झलक है, जिनकी निगाह केंद्र से लेकर हाशिये तक बिखरी है। अतीत में भी बेजोड़ लेख लिखते आये हैं। उप संपादक विदुषी श्रीमती वी सुगुणा तथा इंजीनियरिंग का ढाँचा साहित्य में खड़ा करनेवाले श्री गोपाल जी एक अधिकारी के बजाय अनुज और अनुजा की तरह व्यवहरित हुए। उक्त लोगों जैसी सजग चेतना, समदर्शिता, समरसता और दूर दृष्टि ईश्वर सबको उपहार में दें। पत्रिका में श्री सुरेश चंद्र शर्मा की कहानी 'एक रिश्ता ऐसा भी' तथा डॉ मंजू शर्मा की कहानी 'किसका घर' हृदय पर छा गई। सुश्री मोनिका कांबले की बाल कविताएँ तथा डॉ सुरेश उजाला की काव्य शैली अच्छी लगी। तकनीकी रचनाएँ मेरे ज्ञान से परे हैं। साहित्य से रति रखनेवाला कितना आत्मसात करेगा। हाँ अंत में किसी शुभ कार्य आरती की तरह डॉ श्रीराम परिहार की रचना 'राष्ट्र पिता-राष्ट्र ध्वज' उनके राष्ट्रीय विमर्श और देश-प्रेम की भावना को पल्लवित करती है। पत्रिका कलेवर बड़ा हो और साहित्यिक सामग्री बढ़े तो उसकी गुणवत्ता में चार चाँद लग जायेंगे।

- *डॉ रामप्यारे प्रजापति,* सुलतानपुर

'सुगंध' के कई अंक मिले, आपको धन्यवाद। हर बार पढ़ता तो हूँ कुछ रचनायें, प्रतिक्रियायित भी होता ही हूँ, पर लिखते-लिखते किसी और पुस्तक-पत्रिका को पलटने लग जाता हूँ या अपना ही कुछ ... और छूट जाता है 'सुगंध' पर कुछ लिखना। बहरहाल एक छोटी यात्रा पर निकला तो सुगंध के कुछ अंक साथ लेकर। कहानियों ने पहले पकड़ लिया। 'माँझी माँ', 'एक रिश्ता ऐसा भी', 'किसका घर', 'आवाज', 'करवा चौथ', 'छोटई कहार' पाठक को बाँध लेती हैं और सामाजिक चेतना भी जगाती हैं। 'आवाज' बहुत ही मार्मिक है, झिंझोड़ती भी है। आपके साथ रचनाकार को भी बधाई। कविताएँ जब पढ़ूँगा, तब...। बाल कविताएँ इतनी पुष्ट और परिपक्व हैं कि बच्चों की काव्यधर्मिता की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। पर संपादक के रूप में Ghost writing को बढ़ावा न मिले तो और अच्छा रहेगा। संदर्भ है 'पिता हैं तो', यह आकांक्षा कुमारी की कविता है तो ठीक, वरना इसे उज्जैन के हास्य कवि शायद हरिओम व्यास चोटी वाले यू ट्यूब पर कई बार पाठ करते सुने जाते। पता नहीं, किसकी लाड़ली है। बहरहाल कुल मिलाकर स्वस्थ परंपरा को निभा पा रहे हैं, इसके लिए बधाई। एक विभागीय पत्रिका इतनी सुरुचि संपन्नता के साथ निकाल पाना किसी चुनौती से कम नहीं है। आपकी साहित्यिक सोच को प्रणाम...

- *श्री श्यामसुंदर निगम,* कानपुर

सुगंध का दिसंबर अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की पूरी सामग्री वैसे भी अच्छी रहती है, लेकिन इस बार संपादकीय में उठाया हुआ एक प्रश्न मन को छू गया। अक्सर बिना चकाचौंध और सीधी-सादी जिंदगी जीनेवाले लोगों पर कलम को कम ही लोग चलाते हैं। लेकिन आपने संपादकीय में 'अनुपम मिश्र' के योगदान और उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है।

- *श्री राम प्रसाद यादव,* विशाखपट्टणम

सुगंध के संपादकीय 'और तालाब न सूखने पाएँ...' में स्वर्गीय अनुपम मिश्र को नमन करने के बहाने माडर्न और तथाकथित 'न्यू लाइट कल्चर' की अच्छी खबर ली गई है। पिछले कुछ संपादकीयों में देखने को मिला है कि हर अगला संपादकीय लीक से हटकर लिखा जा रहा है, हालांकि आधा रास्ता तय करने के बाद यह लीक रूपी गंगा या गंगा की लीक अपने गंतव्य हिंदी के विकास एवं संवर्धन रूपी गंगा सागर में ही मिलती है। कहानियों को देखकर लगता है समीक्ष्य अंक कुछ अधिक ही जल्दबाजी में प्रकाशित किया गया है। फिर भी डॉ मंजु शर्मा की विडंबनापूर्ण कहानी 'किसका घर' अति मर्मस्पर्शी बन पड़ी है। श्रीमती आभा सिन्हा द्वारा मानवीय विडंबना पर लिखित 'बोझ' कहानी संतोपजनक है। 'मेरा घर' अच्छी व सामयिक लघुकथा है। श्रीमती सुगुणा का लेख 'इस्पात उत्पादन...' अच्छा भी लगा और समझ में भी आया। श्री गोपाल जी के साथ संयंत्र भ्रमण न करता तो शायद समझ में नहीं आता। शेष लेख भी श्रेष्ठ हैं। श्री सुभाष सेतिया का लेख 'अनूठा समाज सुधारक' राजा राम मोहन राय के बारे में अनूठी जानकारी देता है। श्री सुधीर निगम का 'वह बाँसुरी वाला' कम शब्दों वाली सर्वाधिक सशक्त रचना है। डॉ श्रीराम परिहार जी लेख 'राष्ट्र-पिता राष्ट्र-ध्वज' काबिले तारीफ है। कुल मिलाकर एक अच्छा अंक है। भले ही इस अंक ने अपना रिकार्ड न तोड़ा हो, पर दूसरों का तो तोड़ा ही है।

- *डॉ ओम प्रकाश मंजुल,* पीलीभीत

लेख

एक सकारात्मक पहल: डिजिटल इंडिया

- श्री गोपाल -

पहले कंप्यूटर फिर इंटरनेट और उसके बाद दोनों के समन्वय से तेज भागती जिंदगी। यूँ लगता है किसी ने जिंदगी में पलीता लगा दिया हो और लोग अपने आप को बचाने लिए बेतहाशा दौड़ रहे हों। कुछ ऐसी ही जिंदगी हो गई है अब। जो बुजुर्ग हैं वे अवाक हैं। जो प्रौढ़ हैं वे संघर्ष कर रहे हैं और जो नव जवान हैं, वे बड़े ही आश्वस्त हैं। उन्हें लगता है दुनिया और तेज गति से भाग सकती है और वे इसी उपक्रम में लगे हुए भी हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी और संचार के क्षेत्र में भारी बदलाव आ चुके हैं। इस बीच सबसे अधिक चर्चा का विषय है 'डिजिटल इंडिया'।

डिजिटल इंडिया भारत के लिए नया हो सकता है, लेकिन दुनिया के विकसित देश दो दशक से पहले ही इसके प्रभाव में आ चुके हैं। डिजिटल अभिशासन से लोगों के जीवन में कितना सुधार आया, इस बात की जानकारी लेने हेतु कुछ शोधकर्त्ताओं ने तो **2003** में वैश्विक स्तर पर कुछ नगरपालिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया था। बाद में **2005** के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ की सहभागिता से अमेरीका की स्टेट यूनिवर्सिटी न्यू जर्सी के शोधकर्त्ताओं ने डिजिटल रूप से सुविधाएँ प्रदान करने वाली दुनिया की **100** नगरपालिकाओं की सुविधाओं का अध्ययन किया और सियोल, न्यूयार्क, संघाई, हांग-कांग एवं सिडनी जैसी पाँच नगरपालिकाओं को सर्वश्रेष्ठ पाया। ये आँकड़े तो मात्र वैश्विक स्तर पर डिजिटल अभिशासन के अतीत बताते हैं। अब विगत **13-14** वर्षों में कंप्यूटर नेटवर्क की जाल बहुत फैल चुकी है और इसके उपयोग के प्रति सरकारों एवं जनता में काफी उत्सुकता बढ़ी है। विगत **4-5** वर्षों में तो लोगों की मानसिकता में इतना बदलाव आ चुका है कि **15-20** वर्षों पहले विरोध करने वाले लोग भी अब मानने लगे हैं कि सूचना क्रांति के बिना अब कोई काम होने वाला नहीं है।

डिजिटल अभिशासन की मूल भावना में भी जनता को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं को उन तक आसान व त्वरित गति से पहुँचाना और शासन की भागीदारी में जनता को जोड़े रखना ही है। लेकिन इसमें तकनीक और इंटरनेट का बखूबी इस्तेमाल होता है। भारत जैसे कम साधन-संपन्न देश में अभिशासन की पारंपरिक सुविधाओं को जन-जन तक पहुँचाना बहुत ही कठिन है। क्योंकि क्षेत्रफल, जनसंख्या, भाषा, अन्य विविधताओं एवं संचार सुविधाओं के कारण समस्त सुविधाओं और कार्यक्रमों की जानकारी प्रत्येक नागरिक तक पहुँचाना एक बहुत ही दुष्कर काम है। नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा के आदिवासी इलाकों, आतंकवाद प्रभावित कश्मीर घाटी, पूर्वोत्तर के राज्यों तथा गुजरात के आदिवासी इलाकों में बसने वाले लोगों को किसी सेवा अथवा जानकारी के लिए अक्सर बड़े शहरों में जाना पड़ता है। लेकिन डिजिटलाइजेशन के कारण काफी सेवाएँ अब अपने गाँव अथवा घर में बैठे ही मिलने लगी हैं।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में दूर-दराज के मरीजों के लिए डिजिटलाइजेशन की सुविधाएँ किसी दैविक वरदान से कम नहीं हैं। अब तो लोग मोबाइल 'एप्प' के माध्यम से अपने स्वास्थ्य की जानकारी घर बैठे प्राप्त करने लगे हैं। इसका ताजा उदाहरण कैंसर के इलाज के लिए विख्यात टाटा मेमोरियल अस्पताल के डाक्टरों द्वारा तैयार किया गया मोबाइल एप्लीकेशन है, जिसके माध्यम से मोबाइल में 'एप्प' डाउनलोड करने के बाद एप्लीकेशन में माँगी गई सूचनाओं को भरने पर यह जाना जा सकता है कि मरीज को कैंसर है या नहीं और अगर है तो उसका स्तर क्या है? ऐसे 'एप्प' के माध्यम से सामाजिक विषमताओं में कमी आई है एवं खर्चे, आवागमन की समस्याओं से निजात मिली है और प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनों की बचत भी हुई है।

भारत में वर्तमान 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम की तर्ज पर पिछले कई वर्षों से प्रयास चल रहा था। लेकिन जब से नई सरकार ने केंद्र में सत्ता संभाली है, इस पर काफी तवज्जो दिया जाने लगा है। क्योंकि यह माननीय प्रधानमंत्री के द्वारा घोषित महत्वपूर्ण कार्यों में से एक प्रमुख कार्य है। इसीलिए इसका भरपूर ब्रांडिंग भी किया जा रहा है, ताकि सरकार की नीतियों से लोग वाकिफ हो सकें और डिजिटल सुविधाओं का भरपूर लाभ भी उठा सकें। मूलत: डिजिटल इंडिया एक इंटरनेट, नेटवर्किंग, हार्डवेअर, मोबाइल, कंप्यूटर, सॉफ्टवेअर के समन्वय से बनाया गया एक ऐसा तंत्र है, जो देश के नागरिकों को सरकार से सीधा जोड़ता है, और जन सुविधाओं के उपयोग को सरल बनाने के साथ-साथ सरकारी सुविधाओं अथवा सेवाओं की जानकारी भी प्रदान करता है। प्रधानमंत्री की पहल की वजह से इसे शीघ्रता से विस्तार दिया जा रहा है और इंटरनेट सुविधा की गति एवं पहुँच को तेजी से बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। क्योंकि 'डिजिटल इंडिया' अभियान की सफलता देश में एक प्रभावी डिजिटल ढाँचे की स्थापना करने, सेवाओं व सुविधाओं को डिजिटल रूप में प्रदान करने और डिजिटल साक्षरता बनाने जैसे तीन प्रमुख बातों पर टिकी है।

इसके लिए दोतरफा डिजिटल प्लेटफार्म का निर्माण किया जा रहा है, ताकि सेवा-प्रदाता और उपभोक्ता परस्पर लाभान्वित हो सकें। इसे सफल बनाने के लिए शीर्ष स्तर पर एक समिति गठित है, जो इस विषय से जुड़ी अंतर मंत्रालयीन गतिविधियों एवं समस्याओं की जायजा लेती है। इसके तहत सभी मंत्रालय और विभाग, जन स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा, बैंकिंग, वाणिज्य, न्यायिक इत्यादि सेवाओं को डिजिटल रूप में उपलब्ध कराते हैं।

इस सुविधा का लोग अधिकाधिक उपयोग कर सकें, इसके लिए पूरे देश में **4** लाख इंटरनेट केंद्र, **2.5** लाख गाँवों में ब्रॉडबैंड सुविधा, **2.5** लाख विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में वाई -फाई सुविधा, नागरिकों के लिए सार्वजनिक वाई-फाई क्षेत्र उपलब्ध कराने की योजना है। वैसे तो आधिकारिक रूप से इस योजना को निम्नलिखित नौ प्रमुख अनुभागों में बाँटा गया है।

1. ब्रॉडबैंड हाइवे

इसके तीन प्रमुख अनुभाग हैं।

- **ग्रामीण ब्रॉडबैंड :**

  इस योजना के अनुसार वर्ष **2016** के अंत तक देश की लगभग ढाई लाख ग्राम पंचायतों को नेशनल ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क के तहत ब्रॉडबैंड से जोड़ने की योजना थी। लेकिन यह कार्य कितना सफल हुआ है, आधिकारिक रूप से आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। फिर हाल ही में एक टी वी कार्यक्रम में बताया गया कि अभी तक मात्र **65000** गाँव ही ब्रॉडबैंड इंटरनेट सेवा से जुड़ पाए हैं।

- **सबके लिए ब्रॉडबैंड-प्रहरी:**

  इसके तहत शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधा के घनत्व को बढ़ाया जाना है और आगे नगर व शहर के भावी विकास के क्रम में बनने वाले भवनों एवं इमारतों में संचार सुविधा के बुनियादी ढाँचों के प्रावधान को अनिवार्य बनाने की योजना है।

- **राष्ट्रीय सूचना संरचना:**

  इस अनुभाग द्वारा देश में नेटवर्क और क्लाउड संरचना के एकीकरण का काम किया जाएगा, जिससे सरकारी विभागों के लिए पंचायत स्तर तक तीव्र गति की इंटरनेट सुविधा सुनिश्चित हो सके।

2. मोबाइल सिग्नल की सर्वसुलभता:

डिजिटल इंडिया अभियान की सफलता के लिए प्राथमिक रूप से आवश्यक है कि देश में मोबाइल कनेक्टिविटी की निरंतरता बनी रहे। इसके लिए देश के सभी भागों को पर्याप्त सिग्नल वाले मोबाइल नेटवर्क से जोड़ने की योजना है। किंतु अभी भी **55,619** गाँव ऐसे हैं, जो मोबाइल की सुविधा से वंचित हैं। ये ऐसे गाँव हैं, जो देश के दूर-दराज एवं दुर्गम इलाकों में बसे हुए हैं। अब इस समन्वित विकास योजना के तहत देश के उत्तर-पूर्व के गाँवों में तेजी से कार्य किया जा रहा है।

3. जन इंटरनेट उपलब्धता योजना:

सार्वजनिक सेवा केंद्र एवं डाकघर इस कार्यक्रम के दो उप-घटक हैं, जो बहुउद्देशीय सुविधा केंद्रों के रूप में कार्य करेंगे। इस योजना के तहत एक ओर जो ढाई लाख गाँवों को इंटरनेट सेवा से जोड़ने की बात कही है, इसके अतिरिक्त देश भर में फैले लगभग **1,50,000** डाकघरों को बहुउद्देशीय सुविधा केंद्र के रूप में बदला जा रहा है। इससे सरकार के डिजिटल अभिशासन और जनता को सुविधाएँ प्रदान करने जैसे दोनों उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी।

4. ई-अभिशासन:

ई-अभिशासन के मार्फत सरकार को जवाबदेह बनाने और उसके काम-काज में पारदर्शिता लाने की योजना है। सरकारी काम-काज के सुधार की दिशा में यह एक बहुत ही प्रभावशाली पहल साबित हो सकती है। इससे सरकारी प्रक्रियाएँ सरल एवं जन सुविधाएँ जनता के लिए सुगम बन सकती हैं। इससे सरकारी कामकाज की हीला-हवाली से निजात तो मिलेगी ही, साथ ही कागजी कार्रवाई में खपत होने वाले कागज की मात्रा में कमी आएगी। इससे निम्नलिखित लाभ होंगे:

- सरकारी आवेदन पत्र व प्रपत्र सरल एवं छोटे हो जाएंगे, क्योंकि उनकी प्रविष्टियों में कम विवरण माँगे जा सकेंगे।
- आवेदन-पत्रों के ऑनलाइन भरे जाने से उसे भरने वालों को आवेदन की स्थिति के विषय में ऑनलाइन जानकारी मिलेगी।
- नागरिकों के लिए उनकी शिक्षा, पहचान व अन्य प्रमाणपत्रों को ऑनलाइन कोष अर्थात ई-लॉकर में जमा करना अनिवार्य कर दिया जाएगा, ताकि जब कोई विभाग इन्हें देखना चाहे तो वह डिजिटल रूप में ऑनलाइन देख सके और आम नागरिक को लाल फीताशाही से निजात भी मिले।
- आधार योजना, भुगतान गेटवे, मोबाइल सेवा, डाटा आदान-प्रदान इत्यादि सभी सेवाओं का एकीकरण करना और राष्ट्रीय व राज्य डिलिवरी गेटवे को एकीकृत व परस्पर-उपयोगी सेवाएँ नागरिकों और व्यापारिक कार्यों हेतु उपलब्ध कराना अनिवार्य किया जा रहा है।

5. ई-क्रांति:

डिजिटल इंडिया का यह अनुभाग सबसे महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य जनता को सरकार की विभिन्न योजनाओं व सेवाओं का लाभ इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्रदान कराया जाना है। इस कार्यक्रम के

तहत सभी मिशन मोड परियोजनाओं के लिए 'गवर्नमेंट प्रॉसेस इंजीनियरिंग' का पालन करना अनिवार्य होगा। वर्तमान में ई-क्रांति के तहत **44** मिशन मोड परियोजनाओं को चिन्हित किया गया है। यह सरकारी सेवाओं और परियोजनाओं में पारदर्शिता लाने एवं उन्हें निष्पक्ष व प्रभावी बनाने का सशक्त हथियार बनेगा और बहुत हद तक भ्रष्टाचार को रोकने में सहायक होगा।

6. सूचनाओं की उपलब्धता:

यह अनुभाग सरकारी जानकारियों को जनसामान्य तक सुलभ कराने के उद्देश्य से बनाया गया है और इसके लिए सरकार द्वारा एक वेबसाइट बनवायी गयी है, जिसमें ओपन डाटा प्लेटफार्म का एक पोर्टल है। इस पर विभिन्न मंत्रालयों और विभागों द्वारा खुले प्रारूप में आँकड़े व जानकारियाँ डाली जाती हैं, जिनका सामान्य नागरिक भी उपयोग, पुनर्युपयोग या पुनर्वितरण कर सकते हैं। इसके अलावा सोशल मीडिया और वेब आधारित पोर्टल पर सूचना देने तथा वार्तालाप के उद्देश्य से mygov.in नाम से पोर्टल बनाया गया है। यह शासकीय व्यवस्था के सुधार में नागरिकों को भागीदार बनाने की एक अनूठी पहल है। इसके द्वारा नागरिक और सरकार के बीच विचारों एवं सुझावों का आदान-प्रदान किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन संदेशों के माध्यम से सरकार विभिन्न अवसरों पर नागरिकों से संपर्क बनाये रख सकेगी।

7. इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद निर्माण:

विश्व में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों की माँग **22%** वार्षिक दर से बढ़ रही है और संभावना है कि यह माँग वर्ष **2020** तक **400** खरब अमेरीकी डालर की हो जाएगी। इस माँग का एक बड़ा हिस्सा भारत आयात करता है, जिससे न सिर्फ विदेशी मुद्रा कोष में कमी आती है, बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। घरेलू बाजार में माँग और आपूर्ति को देखते हुए सरकार देश में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के निर्माण को प्रोत्साहन दे रही है और निर्णय लिया गया है कि इसके आयात को वर्ष **2020** तक शून्य किया जाए। इसके लिए ही मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत सेट-टॉप बाक्सेस, वीसैट, मोबाइल, कैमरा, चिकित्सीय व अन्य उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, स्मार्ट एनर्जी मीटर, स्मार्ट कार्ड, माइक्रो ए टी एम इत्यादि के निर्माण पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

8. नौकरियों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी:

सरकार के प्रमुख एजेंडों में देश को बेरोजगारी की समस्या से उबारना भी है। अन्य ब्रांड कार्यक्रमों की तरह ही 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम के माध्यम से भारी मात्रा में रोजगार सृजन करने की योजना है। इसके लिए युवाओं को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षित करके उन्हें नौकरियों के लिए तैयार किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की विशेष बात यह है कि इसमें छोटे नगरों और गाँवों के युवक व युवतियों को केंद्र बिंदु बनाया गया है। योजना के अनुसार **5** वर्षों के भीतर छोटे नगरों और गाँवों के एक करोड़ से अधिक युवक व युवतियों को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अतिरिक्त **3** लाख ट्रेनिंग डिलिवरी सर्विस एजेंट तैयार किए जाएँगे और **5** लाख ऐसे कुशल लोगों को तैयार किया जा रहा है, जो भविष्य में दूरसंचार और उससे संबंधित सेवाओं की माँग को पूरा कर सकेंगे। साथ ही उत्तर-पूर्व के राज्यों में काल-सेंटरों की स्थापना पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

9. अर्ली हार्वेस्ट कार्यक्रम:

'डिजिटल इंडिया' योजना के अनुरूप एक ऐसा कार्यक्रम भी बनाया गया है, जिसे 'अर्ली हार्वेस्ट कार्यक्रम' नाम दिया गया है। इस कार्यक्रम में वे योजनाएँ शामिल हैं, जिन्हें सीमित अवधि में लागू करना है, जिसमें सर्वाधिक प्रमुख गुमशुदा और लावारिस बच्चों की पूरी जानकारी देने वाली वेबसाइट का निर्माण करना है, ताकि इसके माध्यम से मिली जानकारी के अनुसार उन बच्चों को उनके घर वालों से मिलाया जा सके। इसके अतिरिक्त इसमें सरकारी शुभकामना संदेशों को पूर्णत: इलेक्ट्रॉनिक तरीके से भेजा जाना, बायोमेट्रिक उपस्थिति, विश्वविद्यालयों व सार्वजनिक क्षेत्रों में वाई-फाई, सरकारी ई-मेल और सुरक्षित करना, सरकारी ई-मेल डिजाइनों का मानकीकरण, विद्यालयों में ई-बुक्स को लागू करना, मौसम, आपदा आदि की जानकारी ई-संदेशों से दिया जाना इत्यादि शामिल हैं।

जैसा कि हम जानते हैं, योजनाओं का निर्माण और

उनका कार्यान्वयन दोनों अलग-अलग पक्ष होते हैं। बल्कि यूँ कहें कि कार्यान्वयन पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है, तो अनुचित नहीं होगा। सरकार ने निश्चित ही एक साहसिक कदम उठाया है और संभवत: सरकार को इसकी चुनौतियों का अनुमान भी होगा। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए सरकार को देश के सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप कई मोर्चों पर जूझना भी पड़ेगा।

अभी हमारा देश पूरी तरह से साक्षर भी नहीं है। आज भी निरक्षरों की संख्या लगभग **37%** है। सबसे पहले तो यही बहुत बड़ी चिंता का विषय है कि जब देश की आबादी की इतनी बड़ी संख्या निरक्षर है तो उसे डिजिटली साक्षर बनाना कितना मुश्किल होगा। इसी प्रकार हमारे देश में मात्र **14%** लोग ही स्मार्ट फोन का उपयोग करते हैं और ब्रॉडबैंड की सुविधा का उपयोग तो और भी चौंकाने वाला है। अमेरीका की एक मैनेजमेंट एंड बिजनेस कंसल्टेंसी फर्म मेसर्स बोस्टन कंसल्टेंसी गुप (बी सी जी) की रिपोर्ट के मुताबिक इंटरनेट उपयोग के मामले में विश्व के **166** देशों में भारत का **129**वाँ स्थान है। इसी प्रकार देश के **100** नागरिकों में से मात्र **1.2** लोग ही ब्रॉडबैंड की सुविधा का उपयोग करते हैं, जबकि इसका वैश्विक स्तर **9.4%** है। इसके अलावा **4** जी के ब्रॉडबैंड की गति **2** जी के बराबर भी नहीं मिल पाती। अभी तक देश के उपभोक्ता कॉल ड्राप जैसी समस्या से नहीं उबर पा रहे हैं। लेकिन बी सी जी ने यह भी अनुमान लगाया है कि सन् **2020** तक देश में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या में पर्याप्त इजाफा होगा और यह लगभग साढ़े इकतीस करोड़ लोगों की पहुँच के भीतर होगा। फिर भी भारत को अपने भौगेलिक और सामाजिक, कई स्तर पर संघर्ष करना होगा। क्योंकि भारत के भौगोलिक रूप दुर्गम इलाकों, अशिक्षित और कम आय वर्ग के लोगों, महिलाओं आदि को 'डिजिटल इंडिया' मुहिम से जोड़ना बहुत आसान नहीं होगा। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं और सामाजिक रूप से कमजोर वर्गों की जनता में तो ठीक से अभी तक यह संदेश ही नहीं पहुँचा है। ग्रामीण क्षेत्रों में औसतन मात्र **2%** महिलाएँ ही ब्रॉडबैंड का उपयोग करती हैं। ये आँकड़े **2015** तक के हैं।

साथ ही इस बात का जिक्र करना भी जरूरी है कि भारत में हमेशा प्राकृतिक आपदाओं का दौर चलता रहता है। अत: ऐसे पारंपरिक और बुनियादी सुविधाओं की अहमियत को नकारा नहीं जा सकता। क्योंकि आपदा के समय संचार, जल व विद्युत आपूर्ति आदि सुविधाएँ बाधित हो जाती हैं और ऐसी ही परिस्थितियों में संचार-सुविधाओं की आवश्यकता अधिक होती है। उदाहरण के लिए **12** अक्टूबर **2014** को विशाखपट्टणम में आए हुदहुद तूफान अथवा केदारनाथ में जून **2013** के दौरान आई प्राकृतिक आपदा की स्थितियों को लिया जा सकता है। ऐसे समय में संचार के सभी संसाधन धराशायी हो जाते हैं और प्रभावित इलाके व वहाँ की जनता अलग-थलग पड़ जाती है, जबकि उसी समय लोगों को त्वरित सेवा व सुविधा की आवश्यकता होती है।

लेकिन हाँ! बावजूद इन सभी समस्याओं के भारत ने डिजिटलाइजेशन का निर्णय कर लिया है। भारत को डिजिटल बनाने के लिए सभी प्रयास किये जा रहे हैं। इस आत्म विश्वास के पीछे का रहस्य यह है कि अब यदि हमें देश का विकास करना है तो 'डिजिटल इंडिया' जैसे अभियानों को सफल करना ही होगा, क्योंकि इस मामले में पहले ही इतनी दूरी तय कर ली गई है कि पीछे मुड़ना घातक होगा।

इस अभियान के आरंभ में ही कई संगठन अपनी भागीदारी को सुनिश्चित करने हेतु सहमति जता चुके हैं, जिनमें भारत संचार निगम लिमिटेड और रिलायंस लिमिटेड अग्रणी हैं। इन दोनों संगठनों ने **2018** के अंत तक भारत के लगभग **42000** गाँवों को निर्बाध रूप से ब्रॉडबैंड सेवा उपलब्ध कराने हेतु योजना बनायी है। इसके लिए डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी क्रम में इंटरनेट के बारे में जानकारी देने के उद्देश्य से 'डिजिटल साथी' कार्यक्रम की परिकल्पना की गई है। इसके तहत गुजरात, राजस्थान व झारखंड राज्यों में लगभग **18** महीनों के भीतर लगभग **4200** गाँवों को डिजिटली लिटरेट अथवा 'ई-लिटरेट' बनाया जा रहा है। इसमें सबसे अहम बात यह है कि पूरे देश को समान रूप से और एक परिवार में कम-से-कम एक व्यक्ति को ई-लिटरेट बनाने की योजना है।

आर्थिक मोर्चे पर 'डिजिटल इंडिया' अभियान से देश को भारी सफलता मिलने की संभावना है। इससे देश के सकल घरेलू उत्पाद में इसके अंशदान में भारी इजाफा होने की संभावना है और इस क्षेत्र में लगभग **17** मिलियन लोगों को रोजगार मिलने की संभावना है। इस योजना से सामाजिक मोर्चे पर भी देश को कई सफलताएँ एक साथ मिलने की संभावना है। इस अभियान से सरकारी योजनाओं अथवा उन योजनाओं के लाभ को देश के आखिरी आदमी तक पहुँचाने में मदद तो मिलेगी ही, साथ ही कई अन्य सामाजिक बुराइयों का खात्मा भी होगा। अंतत: कहना जरूरी है कि 'डिजिटल इंडिया' से भारत को कई मोर्चों पर सफलता मिलने की संभावना है और यह एक ऐसी पहल है, जो देश की सारी विषमताओं को समाप्त करने में सबसे अधिक कारगर सिद्ध होगी।

- वरिष्ठ सहायक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखट्टणम-530031
मोबाइल: +91 9989888457

चाँदी की सौत

- श्रीमती सुधा गोयल -

सखी सुनन्दा!

पूरे एक साल बाद तुझे मेरा यह पत्र मिलेगा। मेरा पत्र न पाकर तूने मन ही मन अंदाजा लगाया होगा कि तेरा शक गलत निकला और तेरी सखी अपने ससुराल की मौज-मस्ती में अपनी बाल सखी को भूल गई । मैं जानती हूँ कि जब मेरा पत्र तुझे मिलेगा, तू उत्सुकता से खोलेगी और एक ही साँस में पूरा पत्र पढ़ जाएगी। फिर किसी कुर्सी की टेक लगाए जड़ सी हो जाएगी और बांचा हुआ पत्र तेरे हाथ में बेजान हो झूल जाएगा। मुझे विश्वास है ऐसा ही होगा।

अच्छा, बता! हम दोनों एक दूसरे के मन की बात कैसे जान लेते हैं? कैसे एक-दूसरे के बारे में भविष्यवाणी कर देते हैं? आज भी तुम्हारी एक-एक बात याद है मुझे। बचपन से लेकर युवा होने तक हम दोनों इतनी अंतरंग रहीं कि अपना-अपना सुख-दुख एक दूसरे से निस्संकोच कह लेतीं। तू भली प्रकार जानती है कि मेरे चेहरे पर पड़े फूल देख कर लोग मुझसे कितनी घृणा करते थे। स्वयं माँ भी कहीं जाती तो अकेली मैं ही घर की रखवाली को रह जाती। कोई समारोह होता तो सबके नए कपड़े बनते और मैं अपने मन की हुलास दबाए पुराने कपड़ों में दबी ढकी पड़ी रहती। मैं क्या चाहती हूँ? इससे किसी को कोई मतलब न था। मेरा दोष... मेरे चेहरे पर पड़े फूल थे... इन्हीं के कारण मुझे अपने मन को मारना पड़ता था। अपने जीवन के रंगों को उखाड़ फेंकना और मात्र अंधेरों में जीना पड़ता था।

स्कूल में पढ़ने जाती तो लड़कियाँ घृणा से मुँह फेर लेतीं। कक्षाध्यापिका सबसे पीछे की सीट पर सबसे अलग बिठाती। सुनंदा तुझे ध्यान होगा कि ललिता वर्मा मैडम तो मेरे होमवर्क की कापी भी नहीं छूती थीं। मेरा नंबर सबसे बाद में आता था। तब तक पीरियड समाप्ति की घंटी बज जाती और वे यह कहकर चली जातीं कि 'रश्मि अपनी कॉपी सुनंदा की कॉपी से मिला लेना', यानि सुनंदा वायरस प्रूफ है। उसे मेरी छूत नहीं लगेगी। मन होता कॉपी उठाकर उनके ऊपर उछाल दूँ। मेरी कॉपी पर उनके हस्ताक्षर कभी नहीं हुए। इंटरवेल में कक्षा की लड़कियाँ साथ-साथ टिफिन खोलतीं और मैं अकेली उदास अपना टिफिन लिए किसी पेड़ के नीचे बैठ जाती। खाने का सारा उत्साह सिमट जाता। भूख मर जाती, क्योंकि दूर चूँ-चूँ, छीना-झपटी करती एक-दूसरे का टिफिन चटखारे ले-लेकर खाते उन्हें देखती रहती। एक-दो बार अपना टिफिन लेकर उनके पास तक गयी भी, लेकिन अपमानित होकर लौटी।

प्रिया कहती, 'यह मुँह और मसूर की दाल', सभी मुझे मेरी औकात बताकर मुँह बिचकाकर हँस देतीं। अंजू कहती, 'कभी आइना देखा है?' मन में घुमड़ता कि कहूँ, 'आइना तो नहीं देखा, पर आइना दिखाने वाले अवश्य देखे हैं।' कभी वीणा के वाक्य नश्तर चुभोते, 'हमारी टोली में सम्मिलित होने के लिए रश्मि को दूसरे जन्म तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मेरी मम्मी ने तो बिल्कुल मना कर दिया है, कह रही थीं कि जहाँ ऐसी लड़कियाँ पढ़ती हों, वहाँ पढ़ना नहीं चाहिए। वे तो मुझे अन्य स्कूल में दाखिला दिलाने की भी बात कह रही थीं।' मैंने अपमानित हो अपना टिफिन फेंक दी थी कि तभी लड़कियों के झुण्ड से अचानक तू उठी। मेरे कंधे पर हाथ रखा और उनको डांटा, 'तुम लोगों को ऐसा नहीं कहना चाहिए। किसी की बीमारी का मजाक बनाना अच्छा नहीं।'

'बीमार है तो घर बैठे... इलाज कराए। अपनी बीमारी औरों को बांटने क्यों चली आती है? जो सही है हम वही तो कह रही हैं। पता नहीं प्रिंसिपल ने क्या देखकर दाखिला दे दिया?' हाथ नचाते हुए मीरा ने कहा था। 'अब चुप भी कर मीरा। बहुत हो गया', तू चीख उठी थी सुनंदा। 'क्यों चुप हो जाएँ? तुझे इतना लाड़ उमड़ता है तो तू ही इसका जूठा टिफिन खा। अपने साथ खिला। अपने साथ बिठा।' बड़बोली वीणा ने तुम्हारा प्रतिकार किया था। तुम भी अड़ गई थी, 'हाँ! मैं अब इसके साथ ही बैठूँगी।' सबकी चुनौती स्वीकारते हुए तुमने भावावेश में कहा था। तभी तो सबने तुम्हें भी अलग कर दिया था।

तूने मेरा हाथ पकड़कर दूसरी ओर मोड़ते हुए कहा, 'आओ रश्मि यहाँ से हट जाते हैं।' और मैंने तेरा हाथ झटक कर कहा था,

> मैं रोज एक सपना देखती हूँ कि मैं भी चाँदी की सौत बनी कपिल के मोजे में पड़ी हूँ। एक औरत मुझे कुएँ में फेंकना चाहती है। मैं जाग जाती हूँ। काश! मैंने उस समय माँ को रोक दिया होता और उस नारी प्रतिमा को माथे से लगाकर घर के किसी कोने में स्थापित कर दिया होता। अब पछताती हूँ। यदि तू उस समय मेरे पास होती तो समझा बुझाकर कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेती। अब वही चाँदी की सौत हमारे बीच आ जाती है। उनकी देह मेरी खुशबू से नहीं महकती, बल्कि उनकी पहली पत्नी का स्पर्श उनके रोम में महसूसती हूँ।

सुगन्ध

'तुम मेरे साथ क्यों आओगी? तुम क्या मुझ जैसी हो? तुम इनके साथ ही हंसो-बोलो। मुझे कोई झूठी हमदर्दी नहीं चाहिए।' तू असहाय सी वहीं खड़ी रह गई थी। तेरी मनोदशा जानने की स्थिति मेरी नहीं थी। मैं पैर पटकती दूर एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गई थी। पता नहीं कब तक बैठी रही। अचानक तेरे हाथ का स्पर्श पाकर मैंने मुँह उठाकर देखा था। तू मेरा बस्ता लिए खड़ी थी। छुट्टी हो चुकी थी। सभी अपने-अपने घर जा रहे थे। इसका मतलब मैं अकेली पूरे चार पीरियड पेड़ के नीचे बैठी रोती रही। किसी की नजर मुझ पर नहीं पड़ी। पड़ भी गई होगी तो कौन बुलाकर मुझे इनाम देने वाली थी। मैं तो वैसे ही सबके लिए अस्पृश्य और घृणित थी। तूने मुझे सहारा देकर उठाया। अपने दुपट्टे से मेरे आँसू पोंछे और कहा कि 'रश्मि तुझे अपने अंदर कभी न बुझने वाली आग जलानी है। तुझे अपनी मेहनत और लगन से सबकी घृणा जीतनी है।' मैंने नजर उठाकर तुझे देखा था। तुझे ऐसी बातें कौन सिखाता है? पूछते हुए मैं मुस्कुरा पड़ी थी। 'अभी नहीं धीरे-धीरे सब समझ जाएगी।' कहती हुई तू मुझे स्कूल के सदर दरवाजे पर छोड़कर अपने घर की ओर मुड़ गई और मैं लड़खड़ाते हुए अपने घर आ गई।

हाँलाकि स्कूल जाने का पहला दिन नहीं था। मैं पिछले पाँच साल से अपमान सहती और झिड़की खाती आ रही थी, लेकिन तब शायद इतनी समझ न थी। समझ आने पर मान-अपमान का पता चलता है। फिर उस समय ओंठ के नीचे एक छोटा सा फूल था और अब तक बढ़ते हुए ये फूल आँखों के नीचे अपना स्थान बना चुके थे।

स्वंय ही दर्पण देखकर मन करता कि अपना चेहरा नोच डालूँ। पड़ोसी भी मेरे घर आना-जाना पसंद नहीं करते। मेरी हमउम्र लड़कियाँ मुझे देखकर मुँह बिचकाकर मुँह फेर लेती हैं। ऐसा क्यों होता है, मैं सब समझने लगी थी। अपेक्षा बच्चे को जल्दी ही समझदार बना देती है।

अगली सुबह माँ मुझे जगाने आयीं तो माथा छूकर बोलीं 'रश्मि तुझे तो बहुत तेज बुखार है। तूने बताया क्यों नहीं?' मैं केवल माँ की आँखों में झाँककर रह गई। माँ को वास्तव में मेरी चिंता है या मात्र दिखावे के लिए कह रही है? होठों पर चिपके शब्द आँखों से झर उठे। 'तुम्हें मेरी फिक्र क्यों होने लगी माँ? मैं तो अनचाहा बोझ हूँ। तुम भी सोचती होगी कि मेरा रोग अन्य भाई-बहनों को न लग जाए। मुझे सहना तुम्हारी विवशता है और तुम्हारी यह विवशता जाने-अनजाने शब्दों के कोड़े बनकर जब-तब मुझ पर बरसती रहती है। 'रोती क्यों है?' माँ ने आँखें पोंछने के लिए अपना आँचल मेरी ओर बढ़ाया। मैंने झट से कह दिया अपका आँचल गंदा हो जाएगा। अभी तो तुमने पूजा भी नहीं की होगी।'

पूरे पंद्रह दिन तक मैं बिस्तर पर पड़ी रही। केवल तू ही मुझे देखने रोज आती थी। हिम्मत बँधाती, मेरा दिल बहलाने की कोशिश करती। तेरे सामने मैं रोकर मन हल्का कर लेती। स्कूल जाने और पढ़ने की इच्छा बिल्कुल मर चुकी थी। किताबों से चिढ़ हो गई थी। जब तबीयत ठीक हो गई, तो मैंने माँ के सामने घोषणा कर दी, 'मैं स्कूल नहीं जाऊँगी। पढ़ूँगी भी नहीं। घर में रहकर घर का काम करूँगी।'

मेरी घोषणा सुनकर माँ सकते में आ गई थी, 'तू जानती है कि क्या कह रही है? एक विद्या ही तो तेरा सहारा है', माँ समझाने लगी थी। 'तुम समझती क्यों नहीं माँ? पढ़कर ही कौन मान-अपमान से मैं मुक्त हो जाऊँगी?' मैं रुआँसी हो उठी। 'मैं सब समझ रही हूँ। एक तू ही नहीं समझ रही। किसी ने कुछ कह सुना दिया हो तो मन से निकाल दे। दूसरों के कहे पर ध्यान देने से जीवन नहीं चलता।' माँ ने लाख समझाना चाहा, लेकिन मैं अपनी जिद पर अड़ी रही। फिर माँ ने तेरा सहारा लिया और तू फिर मुझे लेकर स्कूल जाने लगी। स्कूल में तू छाया की तरह मेरे साथ रहती। तुझे मेरे साथ देखकर अब लड़कियों ने व्यंग्य कसने कम कर दिए थे, फिर भी स्कूल के वार्षिक जलसे में कबड्डी टीम से मुझे हमेशा दूर रखा जाता।

पिताजी मेरे इलाज को लेकर परेशान थे। रोज नई-नई दवाइयाँ लाकर देते। जो कोई जहाँ किसी वैद्य, हकीम या डॉक्टर बताता, वे वहीं दौड़ जाते। आठ भाई-बहन का परिवार, जैसे-तैसे गाड़ी खिंच रही थी। उलटे फूल मेरे सिर में भी हो गए। त्वचा

के रंग के साथ-साथ बालों का रंग भी बदल गया। तब तक किसी प्रकार से इंटरमीडियेट ही कर पाई।

तभी एक दिन छोटी मामी अपने गोल-मटोल दो वर्षीय बेटे को लेकर आ गई। अनायास ही मैंने उनके बेटे को गोद में लेकर चूम लिया। मामी बिगड़ पड़ी, 'रश्मि इतनी बड़ी हो गई, क्या जरा भी सोच नहीं बची? दीदी! क्या आपने इसे इतना भी नहीं सिखाया?' माँ उनकी बात सुनकर सकपका उठी थीं। उन्होंने मुझसे कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि मैं अपमान की ज्वाला से धधक उठी, 'मामी! मुझे तो समझ नहीं है। समझ आपको भी नहीं है। आपको यहाँ नहीं आना चाहिए था।' कहकर मैं अंदर चली गई। मामी की आवाज मेरे कानों से टकराती रही, 'आपने रश्मि को बहुत सिर चढ़ा रखा है दीदी। ऐसी लड़कियों को दबाकर रखा जाता है।'

'नेहा, रश्मि ने ऐसा कुछ नहीं किया कि तुम परेशान हो जाओ।' पापा के इतना कहते ही मामी रुआँसी हो उठी। 'मैंने तो ऐसा कुछ नहीं कहा जीजाजी। आप भी उसी का पक्ष ले रहे हैं।' मैं पक्ष नहीं ले रहा, बल्कि अपने घर में अपनों को परायों से अपमानित होने से बचा रहा हूँ। पिताजी कहते हुए दूकान चले गए और मुझे पहली बार लगा कि पिताजी मेरा दु:ख समझते हैं। माँ इस समस्त वार्तालाप के मध्य एकदम बौनी हो उठी। पहली बार घर आई छोटी मामी से ऐसे स्वागत की आशा उन्होंने कदापि न की होगी। मेरे साथ माँ ने बहुत कुछ सहा होगा, यह मैं उस दिन जान पायी। मामी ने डिटॉल के पानी से तभी अपने लड़के को नहलाया और शाम की गाड़ी से वापस चली गई। उनके जाने के बाद भी वातावरण बोझिल बना रहा, मानो शब्द जैसे कम गए हों, भावनाएँ शून्य हो गई हों।

अब लगता है कि माँ ठीक ही करती थीं, जो मुझे अपने साथ नहीं ले जाती थीं। इसी बहाने वे मेरे स्वाभिमान के साथ-साथ अपने स्वाभिमान की रक्षा भी कर लेती थीं। इन सारी बातों से मुझमें एक जिद सी भरती जा रही थी। मेरा तिल-तिल अपमान मुझे विद्रोही बना रहा था। जो बात सीधे करने को कही जाती, मैं ठीक उसके विपरीत करती। दूसरों को कष्ट देने में मुझे आनंद आता। हाँ, सुनंदा एक-एक बात स्मरण है मुझे। हाँ... इसलिए कि मुझे अब तक बेरहमी से धीरे-धीरे चीरा गया। सब महज चीरते रहे। मेरा खून बहाते रहे। कोई दो हाथ, कोई दो आँख या एक जीभ, जरा सा भी मरहम न दे सका। काश! किसी के सान्निध्य से क्षणिक विश्रांति मिलती तो उसी की मधुर स्मृति में पूरा जीवन काट लेती और अपने होने की सार्थकता पा लेती। कम से कम जीवन को बोझ की गठरी की तरह ढोने का एहसास तो पुख्ता न होता।

तू समझ गई होगी सुनंदा! शिव ने तो मात्र एक बार ही विष पिया और नीलकंठी कहलाए। पर मैं अपना होश संभालते-संभालते विष पीना सीख गयी। अब भी पी रही हूँ और जब तक जिऊँगी, पीते रहूँगी।

पिताजी दवाई लाकर देते और मैं नाली में फेंक आती। जूही मुझे अपने कपड़े पहनने से मना करती और मैं जानबूझ कर उसके कपड़े पहनती। उनमें दाग धब्बे लगा देती या फाड़ देती। छोटी बहनों के चेहरे पर स्याही पोत देती। जूही को देखने लड़के वाले आए। माँ ने खास हिदायत दी थी 'रश्मि उधर मत आना' और मैं जान बूझकर नाश्ते की ट्रे उठाए सबके सामने जा पहुँची। वे लोग जूही को बिना देखे ही चले गए। माँ तो केवल रोकर रह गई। लेकिन उस दिन पहली बार पिताजी का क्रोध मुझ पर बरसा। मैंने कोने से छड़ी उठाई और पिताजी से बोली, 'लीजिए पिताजी! मारिए मुझे...। इतना मारिए कि मेरा प्राणांत हो जाए...। मैं भी अपने आप से तंग आ चुकी हूँ। किस किस से बदला लूँगी।' क्षण भर में पिताजी का क्रोध आँसू बनकर पिघल गया था। उन्होंने मुझे छाती से चिपका लिया था और सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था, 'मैं तेरी व्यथा समझता हूँ रश्मि।' कितने करुण हो उठे थे वे।

हम सब अपनी-अपनी विवशता व क्रोध एक-दूसरे पर उतारते रहते हैं। लेकिन उस दिन के बाद मैंने अपने क्रोध को सुला दिया। मैं एकदम शांत हो जैसे बुत बन गई। जूही की शादी माँ-पिताजी दिल्ली जाकर कर आए। शायद! उन्हें अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं था। जूही का सारा दहेज मैंने दौड़-दौड़कर इकट्ठा किया। उसके ससुराल जाने से एक रिक्तता मुझमें आ गई।

माँ पिताजी अब मुझे लेकर परेशान रहने लगे। मैं नहीं समझ पाती सुनंदा कि विवाह को ही जीवन की मंजिल क्यों समझा जाता है? पिताजी जहाँ बात चलाते, वहाँ बात चलने से पहले ही समाप्त हो जाती। एक-दो हिम्मत करके मुझे देखने भी आए लेकिन साफ मना करके चले गए। मीतू नीतू के कद मुझसे आगे निकलने लगे थे। वे फुसफुसाकर अक्सर अपनी सहेलियों से बातें करतीं। 'हमारे सामने का पत्थर तो किसी बुलडोजर से ही हटेगा और बुलडोजर खरीदने का सामर्थ्य पिताजी में नहीं है।' रिश्तेदार और सगे-संबंधी भी कहने लगे, 'एक के चक्कर में दूसरी व तीसरी लड़कियों को कब तक घर बिठाए रखोगे।'

एक दिन मैंने हिम्मत की, 'पिताजी आप मेरी चिंता छोड़िए। मैं आगे पढ़ूँगी और पढ़ाऊँगी भी।' सुनकर पिताजी मेरे चेहरे की ओर देखते रह गए थे। जैसे पूछ रहे हों, 'पगली तुझे नौकरी कौन देगा।' फिर जैसे मेरा मन रखने के लिए बोले, 'जैसी तेरी इच्छा। पढ़ोगी तो मन लगा रहेगा। कल ही फार्म मँगवा दूँगा। जब तक

स्कूल में नौकरी न मिले, तब तक मन लगाने के लिए पड़ोस के बच्चों को पढ़ा लिया कर।' सचमुच मुझे नौकरी मिलना इतना आसान न था। मेरा चेहरा मेरे लिए सबसे बड़ी बाधा थी।

अब जैसे जीवन चुनौती बन गया था। बड़ी मुश्किल से पाँच सौ रुपए महीने की नौकरी मिली। कोई नया स्कूल खुला था और इतनी सस्ती अध्यापिका उन्हें मिल नहीं सकती थी। मैं जितने काँटे रोज चुनती, उतने ही बिखर जाते। राह चलते पाँवों को लहूलुहान होना ही था। अब तो आदत सी बन गई थी। अब किसी चोट पर उफ्फ भी नहीं आती।

सुनंदा तुम तो जल्दी ही ससुराल पहुँच गईं। मैंने भी हँसते-हँसते अपने से छोटे चार भाई-बहनों की शादी कर दी। मैं अपनी देह को जागने से पहले ही सुला देती। जैसे सोना मेरी नियति बन चुका था। माँ पिताजी को जरूर हर वक्त मेरी चिंता बनी रहती। वे हमेशा अपने प्रयास में लगे रहते। उम्र के पैंतीस बसंत कब पतझड़ बन निकल गए, पता ही न चला।

मेरे विवाह का निमंत्रण पत्र पाकर तू चौंक उठी थी और तूने क्षमा याचना सहित एक लंबा सा पत्र मुझे लिख अपना बुर्जुवा अंदाज बखाना था। वैसे भी शादी जैसा वहाँ कुछ नहीं था। लेकिन तुझ बाल सखी को एक बार फिर देखने की चाह उमड़ पड़ी थी, जैसे मृत्यु पूर्व अपने किसी निकट संबंधी को देखने की चाह उमड़ती है। जो कुछ तू मुझसे सामने कहती वह सब तूने पत्र में लिख दिया था। तेरा लिखा एक-एक शब्द मेरे जीवन में उसी प्रकार घटित हुआ है।

जब कभी रात के अंधेरे में कपिल मेरा बदन टटोलते हैं तो मुझे तेरे शब्द याद आ जाते हैं। तूने लिखा था 'रश्मि यह तूने कैसा निर्णय ले लिया। विवाह के बाद की हर रात तेरे लिए बलात्कार की रात होगी। तू महज एक जिस्म बनकर रह जाएगी। कपिल तुझे रौंदेगा-मसलेगा पर प्यार नहीं कर पाएगा। उसके ओठों का मधुर कंपन तू पलकों पर नहीं पा सकेगी। तेरी देह जागती और सुलगती रहेगी और तू कुछ नहीं कर पाएगी। यदि देह एक बार जाग जाए तो सुलाना मुश्किल होता है। क्या तू विदेह बन सकेगी?

हाँ सुनंदा प्रणय के मधुर क्षण मुझे नहीं मिले। मेरी रातों में केवल अंधेरे ही होते हैं। मैंने अपने प्रणयी का चेहरा प्रणय के क्षणों में नहीं देखा। अपने चेहरे पर उनकी मादक श्वासों का एहसास नहीं किया। सुलगते होठों को कोई शीतल लय नहीं मिला। तूने कठपुतली का खेल देखा है सुनंदा? कठपुतली जो दूसरों के इशारों पर नाचती है। मैं भी नाच रही हूँ। अब मैं तुझे ये भी बता दूँ कि मैंने यह निर्णय क्यों लिया? अपने ही घर में माँ पिताजी के सामने भाभी द्वारा मेरी सीमा केवल घर के बाहर बैठक तक निश्चित कर दी गई। मैं कैद में छटपटाऊँ कि माँ पिताजी ने मेरी मुक्ति की राह तलाश ली।

सोचती हूँ तो ठीक ही लगता है कि यदि समय रहते मेरी भी शादी हो गई होती तो कपिल के बच्चे जितने बड़े मेरे भी बच्चे होते। मैं उनकी तरफ बाहें लाती हूँ और वे मुझे राक्षसी कहकर कमरे से चले जाते हैं। मेरा बनाया खाना फेंक देते हैं। मेरा हर पल अग्निपरीक्षा का है। काठ बन गई हूँ मैं। संबंधों के ढेरों दरिया हैं, पर मैं चुल्लू भर भी आचमन नहीं कर सकती।

अरे हाँ! एक बात बताना तो भूल ही गई। शायद तू भी न जानती हो। कपिल जब मुझे ब्याहने आया था, तब अपने मोजे में पाँव तले पूर्व पत्नी की चाँदी की प्रतिमा को रौंदता हुआ लाया था और वह चांदी की नारी प्रतिमा को माँ को थमाते हुए कहा था। 'माँ जी आप अपनी लाड़ली के सुख के लिए इस पराई पुत्री को कुएँ में फेंक आइए। तभी सप्तपदी होगी।' माँ उसे कुएँ में फेंक आई थी। माँ को कोई दुख नहीं हुआ था। पर यदि कोई मुझे भी ऐसे ही फेंके तो माँ को कैसा लगेगा? खैर! यह नाटक माँ के अनजाने में मैं देख गई थी। मन हुआ कि ठहाके लगाकर हँसूँ और हँसते-हँसते पागल हो जाऊँ। बीस वर्षों का साथ पाँव से रौंदकर जो मुझे ब्याहने आया था, वह केवल जिस्म का भूखा था मन का नहीं, इतना तो उसी समय समझ गई थी।

तू समझ सकती है सुनंदा कि क्या मैं उस निर्दयी पुरुष को पति मान पाऊँगी। मैं रोज एक सपना देखती हूँ कि मैं भी चाँदी की सौत बनी कपिल के मोजे में पड़ी हूँ। एक औरत मुझे कुएँ में फेंकना चाहती है। मैं जाग जाती हूँ। काश! मैंने उस समय माँ को रोक दिया होता और उस नारी प्रतिमा को माथे से लगाकर घर के किसी कोने में स्थापित कर दिया होता। अब पछताती हूँ। यदि तू उस समय मेरे पास होती तो समझा बुझाकर कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेती। अब वही चाँदी की सौत हमारे बीच आ जाती है। उनकी देह मेरी खुशबू से नहीं महकती, बल्कि उनकी पहली पत्नी का स्पर्श उनके रोम में महसूसती हूँ। मुझे लगता है कि मैं जूठन चाट रही हूँ।

एक जूठा आदमी और उसे पीती-जीती मैं। मुझे कितनी मितली आती है मैं ही जानती हूँ। पर इस विडंबना को मुझे जीना है। बस यही मेरा जीवन है। अब तो तेरे लिए कुछ भी अनदेखा-अनकहा नहीं रहा न। बस तेरी ही।

- 290-ए, कृष्णा नगर
डॉ दत्ता लेन
बुलंदशहर-203001, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9917869962

गुप्त जी एवं दिनकर जी के काव्यों में नारी चेतना

- डॉ दादूराम शर्मा -

मध्यकालीन संतों ने नारी को महाविकार कहकर मुक्तिमार्गी नर के लिए त्याज्य माना तो इस्लामी सभ्यता ने उसे बुरके में बंद करके अधिकार विहीन मूक पशु बना डाला। दोनों के मेल से बना है गुप्त जी के काल की नारी का दयनीय व्यक्तित्व। गुप्तजी ने इस चिरवंदिनी नारी को पुनरुत्थान के आलोक में अपनी समग्र सहानुभूति और श्रद्धा ही समर्पित नहीं की है, अपितु उसे नवचेतना और नवीन शक्ति से मंडित कर सदियों से निर्मित जड़ परंपरा की दुर्गम प्राचीर को ढहाने की प्रेरणा भी दी है। प्रवृत्ति मार्ग के प्रबल पक्षधर होने से वे 'गेह गौरव' के अनन्य स्तोता हैं और इसीलिए गेह गौरव को विखंडित करनेवाले, नारी को अनादृत करके अरक्षित छोड़ देने वाले मुक्तिकामी पुरुष का संन्यास उनके प्रबल प्रश्नों के घेरे में घिर गया, जिससे न तो तथागत बुद्ध बचे और न चैतन्य महाप्रभु। यशोधरा और विष्णुप्रिया दोनों को अपने पतियों को चोरी-चोरी भाग जाना अच्छा न लगा। यदि नारी सचमुच सिद्धि मार्ग में बाधक है तो वह कहाँ जाय? क्या नारी पुरुष के साथ मुक्तिमार्ग की पथिक नहीं बन सकती अथवा क्या नारी को साथ लेकर पुरुष मुक्तिमार्गी नहीं हो सकता? नारी-त्याग को ही परम पुरुषार्थ मान लेने वाले और भारतीय संस्कृति को निवृत्तिपरक समझने वाले पुरुष की आँखें अपने प्रबल तर्काजन से उन्मीलित करती हुई विष्णुप्रिया कह रही है -

'मेरे त्याग में ही तुम्हारा त्याग पूरा है।
यद्यपि तुम्हारे देव ऐसा नहीं करते,
नारायण लक्ष्मी को, यतींद्र हर गौरी को,
संग रखते हैं वे असंग नहीं तुमसे।'

- विष्णुप्रिया (पृष्ठ सं.40-41)

अर्थात, जब विष्णु और शिव पत्नियों को साथ लेकर, किंतु असंग रहकर परम सिद्धि पा सकते हैं, परम पुरुष, जगन्नियंता, जगत्पिता और जगदीश्वर हो सकते हैं तो उनकी आराधना करने वाले नर! तुम अपनी पत्नी का क्यों परित्याग कर रहे हो? क्या तुम्हारा यह आचरण अपनी ही संस्कृति के चिर स्थापित आदर्श के प्रतिकूल नहीं?' इतना ही नहीं, पत्नी-त्याग को वह धर्म-विरुद्ध घोषित करने में भी नहीं चूकती।

सिद्धार्थ यदि संतप्त संसार की जन्म-मृत्युजन्य चिर दु:ख-मुक्ति के लिए अमृत लाने गये हैं तो यशोधरा को अपने आँसू इष्ट हैं। विष्णुप्रिया चैतन्य महाप्रभु के समष्टि-यज्ञ में आत्माहुति देने के लिए प्रस्तुत है और महामहिमामयी देवी रत्नावली तो अपने करधारी को कामुकता के भुलावे में रखने से इनकार कर उसका मोह भंग कर देती है, उसकी प्रियामय दृष्टि को 'सिया राममय' कर देती है और अपने जीवन का दाँव सदा के लिए जीत जाती है।

अब हम इसी परिप्रेक्ष्य में दिनकर की नारी-विषयक दृष्टि का विश्लेषण करें, जो 'ऊर्वशी' में प्रकट हुई है। 'ऊर्वशी' का नायक पुरूरवा अपनी परिणीता पट्टमहिषी का दो बार अवमाननापूर्वक परित्याग करके घर से चला जाता है। प्रथमत: गंधमादन में ऊर्वशी के साथ युगनद्ध होकर कामानंद के माध्यम से तथाकथित रसबोध के लिए (ईमानदारी से कहें तो हनीमून मनाने के लिए) वह औशीनरी का एक वर्ष के लिए परित्याग करता है और द्वितीयत: आयु के आने पर और ऊर्वशी के सहसा अदृश्य हो जाने पर वह आयु को राजा बनाकर हमेशा के लिए घर-बार छोड़कर चला जाता है।

दिनकर की औशीनरी, पुरूरवा के राजमहल में कुल का पोषण करने के लिए सहधर्मिणी बनकर आयी है। पति को नित्य नूतन मादकता से भरना उसका कार्य नहीं। उसका कार्य तो बस प्रिय को प्रसन्न करने के लिए निष्फल व्रतों की साधना करना है। वह विचित्र कुल वामा है। स्वेच्छाचारी पति की सतत उपेक्षा और अवमानना को मौन होकर सहना ही जिसकी नियति है। वह अपने व्यर्थ जीवन को समाप्त कर देना चाहती है, किंतु बेचारी उसके लिए भी स्वतंत्र नहीं -

'विचरें गिरि पर महाराज हो वशीभूत प्रीता के
यज्ञ न होगा पूर्ण बिना कुलवनिता परिणीता के।'

- पृष्ठ सं.31

आधुनिक युग में यज्ञ का क्या औचित्य? और वह कौन-सा महान यज्ञ था, जिसके लिए लाख जुल्म सहकर भी प्रवंचिता नारी को जीवन धारण करना चाहिए था? गोपा, विष्णुप्रिया और रत्नावली ने समष्टि कल्याण की महती आकांक्षा से प्रेरित होकर परित्यक्ता की वेदना को आँसुओं में घोलकर पी लिया था, समष्टि यज्ञ में आत्माहुति दे डाली थी, तथापि नारी के प्रति सामाजिक अन्याय पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करने से भी वे चूकी नहीं। किंतु नवयुग के क्रांतिकारी कवि ने औशीनरी को पति-प्रवंचना के कालकूट का पान करने के लिए क्यों विवश किया? क्या औशीनरी की प्रतिकारविहीन मूकता नवयुग की नारी को स्वीकार्य हो सकती है? कालिदास की औशीनरी इतनी विवश नहीं है।

गुप्तजी जहाँ ऐसी प्रवंचिताओं के लिए ही नहीं, कैकेयी जैसी लांछिता नारी के लिए भी अपना करुणा-संवलित सहानुभूति का अशेष हृत्कलश उड़ेल देते हैं, विधृता, इउडोसिया और वीर

सीसोदनी जैसी नारियों में प्रतिकार की अपार शक्ति भर देते हैं वहीं दिनकर से औशीनरी न तो सहानुभूति ही पाती है और न ही शक्ति, उल्टे मदनिका और निपुणिका जैसी दासियों के उपहास की पात्र बनकर रह जाती है। अंतिम दृश्य में पुरूरवा की निवृत्ति कुरुक्षेत्रकार दिनकर के ही शब्दों में 'पलायन का कुत्सित क्रम' है। ऊर्वशी के चिर वियोग से उत्पन्न विरक्ति थोथा दंभ है और समर्पिता औशीनरी पर किया गया उसका अत्याचार अक्षम्य!

नर-नारी के संबंधों की परंपरागत अवधारणा:

नर घर का स्वामी है और नारी उसकी आज्ञाकारिणी सेविका मात्र। नारी का पुरुष से पृथक अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व अथवा व्यक्तित्व नहीं। वह पुरुष की पूरक मात्र है। पुरुष की प्रसन्नता और मनोविनोद ही उसका एकमेव लक्ष्य है। संक्षेप में मध्ययुग की यही नर-नारी विषयक परंपरागत अवधारणा रही है। दिनकर 'ऊर्वशी' में इसी का पोषण और अंध समर्थन करते दिखाई देते हैं। उन्होंने रीतिकालीन कवियों की ही तरह नारी को कामिनी के रूप में ही देखा है और पुरुष की वासना-तृप्ति में ही उसके जीवन की सार्थकता मानी है।

कितनी गौरवमयी घड़ी वह भी नारी जीवन की,
जब अजेय केसरी भूल-सुध-बुध समस्त तन-मन की,
पद पर रहता पड़ा देखता अनिमिश नारी मुख को,
क्षण-क्षण रोमांकुलित भोगता गूढ़-अनिर्वच सुख को
यही लग्न है वह जब नारी जो चाहे सो पा ले।

- ऊर्वशी, (पृष्ठ सं.**33**)

दिनकर ने 'ऊर्वशी' में पुरुष की स्त्रैणता और कामुकता का ही सर्वत्र समर्थन किया है। उनकी नारी कहीं भी नवयुग की महिमामयी नारी का प्रतिनिधित्व नहीं कर पायी है। इसके विपरीत 'साकेत' का अन्योन्य समर्पणमय दांपत्य प्रणय देखिए, जहाँ श्रृंगार महत्वहीन है, यौवन का अवसान जहाँ अनुराग के विखंडन का कारण नहीं बनता, ऊर्मिला को खेद है कि वह प्रियतम की थाती अपना यौवन सुरक्षित न रख सकी। किंतु उसके प्रियतम को तो प्रौढ़ावस्था की सुचिता और गंभीरता ही इष्ट है, वह प्रिया के अनलंकृत रूप का पुजारी है। च्यवन-सुकन्या का दांपत्य भी, जिसे हम आदर्श भारतीय दांपत्य की संज्ञा दे सकते हैं, इसी विश्वास से मंडित है-

हृदय नहीं त्यागता हमें यौवन के तज देने पर,
न तो जीर्णता के आने पर हृदय जीर्ण होता है।।

- ऊर्वशी (पृष्ठ सं.**104**)

काश दिनकर दांपत्य के ऐसे ही अनुरागमय चित्र अंकित करने में अपनी लेखनी का प्रयोग करते।

नारी का वीर बालात्व:

भारतीय नारी का वीर बालात्व गुप्तजी की सीता के सतीत्व में, सुमित्रा और मघ की माँ के वीर-जननीत्व में, कैकेयी के क्षत्राणीत्व में, ऊर्मिला के रणचंडी रूप में, इउडोसिया के तेजोद्दीप्त बलिदान में, रानी सीसोदनी के प्रखर पत्नीत्व में, गुरुगोविंद सिंह की पत्नी के अनुपम शौर्य में, मूर महिशी के दुर्धर्ष शौर्य और वज्र निर्णय में, अत्याचारी सत्ता को चुनौती देती हुई सुरभि में एवं द्रौपदी के हिंसक प्रतिशोध में प्रकट होता है। दिनकर ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' में भारत की इसी वीर नारी का स्तवन किया है।

'भामा हूलादिनी-तरंग तडिन्मला है,
यह नहीं काम की लता वीर बाला है।
आधी हालाहल धार, अर्थ हाला है,
जब भी उठती हुंकार युद्ध ज्वाला है।
चंडिका कांत को मुंड माल देती है,
रथ के चक्के में भुजा डाल देती है।।'

- खंड **50**

नर्म साचिव्य:

'पथभ्रष्ट अथवा कर्तव्यों के प्रति प्रमादी पति को समुचित परामर्श और सुदपदेश द्वारा सत्पथ पर लाना भारतीय नारी का परम कर्तव्य रहा है। 'अनघ' में ग्राम भोजक की पत्नी अपने पति को जन शोषण से विरत होने की प्रेरणा देती है तो रानी भी जनता के सुख-दु:ख से उदासीन विलास-मग्न राजा की आँखें विचारोत्तेजक उद्गारों द्वारा खोल देती है। पराधीन भारत का भी यही युगधर्म था। हमें गर्व है कि हमारे देश की वीर नारियों ने अपने तत्कालीन राष्ट्रीय कर्तव्य का पूरी निष्ठा से पालन किया था।

नवयुग की नारी:

नवयुग की नारी का मूल्यांकन दोनों राष्ट्रकवियों ने

निम्नानुसार चार प्रकार से किया है:

1. फैशन की दृष्टि से:

यों तो नारी के व्यक्तित्व के साथ श्रृंगार का सिलसिला सभ्यता के उषाकाल से ही चला आ रहा है, तथापि सार्वजनिक तड़क-भड़क में नवयुग की नारी ने कुछ विशेष ही ख्याति अर्जित की है। गुप्तजी के काव्य में उसका अवतरण स्वैरिणी स्वयंवरा शूर्पणखा के साथ होता है। वह प्रगल्भा है, वेहया है और उद्दाम वासना की प्रतिमूर्ति है। तथापि गुप्तजी ने बड़े मनोयोग के साथ उसके व्यक्तित्व को सँवारा है, अपनी सफल तूलिका से उसके चित्र को अधिक जीवंत, आकर्षक और नयनाभिराम बनाया है। यद्यपि वह अपनी स्वेच्छाचारिता और निर्लज्जता के कारण अपने नाक-कान गँवा बैठती है! तथापि गुप्तजी उसके प्रति पर्याप्त सहिष्णु उदार और सहानुभूतिप्रवण हैं, क्योंकि उन्होंने नवयुग की नारी चेतना से उसके व्यक्तित्व को अनुप्राणित किया है, जबकि दिनकर को आधुनिका फूटी आँखों नहीं सुहायी। उन्होंने उसकी सजधज में, सज-सँवरकर बाहर निकलने की प्रवृत्ति में परपुरुषों को आकृष्ट करने की घृणित मनोवृत्ति का ही संधान किया है।

2. कामिनीत्व की दृष्टि से:

द्विवेदी युग के अतिशय नीतिवाद का दबाव गुप्तजी के काव्य में नारी के मादक कामिनी रूप की प्रस्तुति में बाधक हुआ है। 'पंचवटी' में शूर्पणखा आई भी तो स्वेच्छाचारिणी बनकर और लौट गयी अपने नाक-कान गँवाकर। निश्चय ही उन्होंने कामिनीत्व को परकीया का लक्षण माना है। उनकी स्वकीया नारी मादक नयन-शरों से नहीं, अनाकांक्ष, समर्पण, सेवाभाव और अनुरागमय विनोद की प्रवृत्ति से पुरुष (पति) के हृदय पर अधिकार करती है। गुप्त जी का पुरुष भी कामी-कांत नहीं, अनुरागी प्रियतम है, जिसे नारी का सहज अनलंकृत-अनावृत रूप ही प्रिय है।

दिनकर ने कहीं परकीयात्व की ओर उन्मुख कामिनीत्व की विगर्हणा की है, इसीलिए वह आधुनिक कामिनी को परामर्श देता है कि वह अपने भीतर छिपी महिमामयी नारी को झाँककर देखे, जो वाह्याडंबर के कारण उपेक्षित और तिरस्कृत होकर पीड़ा भोग रही है, तो कहीं विश्व-विजयिनी मदिरेक्षणा नारी के कामिनीत्व में परकीयात्व और स्वकीयात्व गड्ड-मड्ड हो गए हैं। तो भी अंततः उन्होंने कामिनीत्व की सार्थकता स्वकीयात्व में ही मानी है।

3. चिंतनशीलता की दृष्टि से:

नवयुग की नारी अधिक चिंतनशील है। पुरुषों की दीर्घकालीन निरंकुशता को वह खुलकर चुनौती दे रही है। नारी की चिंतनशीलता का एक महत्वपूर्ण ज्वार 'ऊर्वशी' की इन पंक्तियों में उठा है -

'हम कुछ नहीं, रंजिकाएँ हैं मात्र अभुक्त मदन की।
हाय सुकन्ये, नियति-शाप से ग्रसित अप्सराओं की
कोई भी तो नहीं विषम वेदना समझ पाता है।।'

- पृष्ठ सं.116

काश! कवि रूपजीविनी वारांगनाओं की मनोव्यथा को और भी गहरा रंग दे पाता तो 'ऊर्वशी' नवयुग की अमर काव्यकृति बन जाती। 'जय भारत' में गुप्तजी ने स्वर्ग में अर्जुन के एकांत कक्ष में रति-याचना लेकर उपस्थित होने वाली ऊर्वशी के उद्गारों में वारवनिता की व्यथा को अधिक गहरा रंग देने की चेष्टा की है-

'मैं किसकी माँ, वहन और पत्नी भी आह।
एक प्रेयसी मात्र करूँ मैं जिसकी चाह।।'

- जय भारत (पृष्ठ सं.164)

4. श्रमशीलता और स्वावलंबन की दृष्टि में:

नारी के पुरुषावलंबन के दो मूल कारण हैं। पहला शारीरिक सुकुमारता, जिसके कारण वह कामांध परपुरुष से आत्म-रक्षा में असमर्थ है और दूसरा है अर्थोपार्जन की अक्षमता। नारी कामांध पुरुषों से कदाचित आत्मरक्षा कर भी ले, और यह कोई कठिन बात है भी नहीं, किंतु जीवन-धारण के लिए अर्थ की अनिवार्यता को कैसे नकारा जा सकता है?

नवयुग नारी-स्वावलंबन की दुंदुभी बजाता आया है। आधुनिक नारी ने श्रम के महत्व को जान लिया है। यहाँ हम मध्यमवर्गीय परिवार की भारतीय नारी की बात कर रहे हैं, जो परिस्थितिवश या अर्थ-संघर्ष के इस युग में परिवार पर निरंतर गहराते अर्थ-संकट से मुक्ति पाने के लिए अर्थोपार्जन में निरत हो रही है। निर्धन परिवार की स्त्रियाँ तो सदैव से सतत श्रमरत रहती आयी हैं और उच्च वर्ग की महिलाओं को उसकी कोई आवश्यकता न तो पहले थी और न आज है।

कानन-वासिनी सीता निश्चय ही स्वावलंबिनी और श्रमशीला रही होंगी, किंतु उनके इस वैशिष्ट्य को न तो वाल्मीकि ने दर्शाया और न ही तुलसी ने रेखांकित किया, बल्कि उसे पुनरुत्थान के आलोक में देखा है तो हमारे युगकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने।

दिनकर आधुनिक नारी में केवल मांसलता ढूँढ़ पाये हैं, भौतिकता की चाह ही खोज पाये हैं। किंतु आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता प्राप्त करती नवयुग की नारी का स्वागत उनका अनुदार हृदय कहीं भी नहीं कर पाया है। यद्यपि गुप्त जी भी नवयुग की नारी की इस महत्वपूर्ण विशेषता को पूर्णतः उद्घाटित नहीं कर पाये हैं, तथापि जिन प्राचीन नारी पात्रों के व्यक्तित्वों में उन्होंने आधुनिकता का यह रंग भरा है, उनमें इससे अधिक के लिए अवकाश था भी नहीं। आँचल के दूध और आँखों के पानी से नारी व्यक्तित्व की थाह नापने वाला परंपरा-पोशी कवि नवयुग की नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व को जिस सफाई और मनोयोग के साथ जिस सीमा तक अंकित कर पाया है, वह कम अभिनंदनीय नहीं।

- महाराज वाग
भैरवगंज
सिवनी (मध्य प्रदेश)-480661
मोबाइल: +91 8878980467

कहानी

मुक्ति

- श्री शैलेन्द्र तिवारी -

खाने के बाद शिवसरन मास्टर दुआर पर खुले में सोने की तैयारी ही कर रहे थे कि तभी उनकी नजर आकाश पर पड़ी। आकाश में उन्हें भारी बदलाव दिखाई दिया। अभी तो आकाश पूरी तरह साफ था और सारे तारे खूब टिमटिमा रहे थे। लेकिन अब तारों का कहीं पता नहीं था। आकाश पूरी तरह से काले बादलों से भर गया था। उन्हें समझते देर न लगी कि बरसात होने वाली है। अब दुआर पर बिछे बिस्तर और खाट को झटपट उठाए और ओसारे आ गए, क्योंकि बूँदा-बाँदी शुरू हो चुकी थी। अब उनकी चिंता खूँटे से बंधे जानवरों के प्रति बढ़ी। जानवरों को भी उन्होंने सुरक्षित जगह पर बाँध दिया। इस बीच बरसात बढ़ चुकी थी और मास्टराइन भी ओसारे आ गई थीं। मास्टर साहब को भींगते देख मास्टराइन ने तंज कसा 'अच्छा है, धरती के साथ-साथ आपके कलेजे को भी ठंडक मिल जायेगी।'

रामसरन मास्टर ने तौलिए से बदन पोंछते हुए जवाब दिया, 'इस बरसात से खेतों को बहुत फायदा होगा।' पत्नी ने भी उनकी हाँ में हाँ मिलाया, 'हाँ...।' उन्होंने पत्नी की तरफ देखा और अंगोछे से पानी निचोड़कर उसे खूँटी पर टाँग दिया। मास्टराइन बरसात को बारीकी से निहार रही थी, 'ऐसी बरसात से बहुत डर लगता है।' 'तूफान वाली बारिश है, बहुत खतरनाक होती है।' मास्टर साहब ने कहा और खाट पर बैठ गये। जब भी इस तरह की बरसात होती, उन्हें अपने मित्र गुरदीन की याद आ जाती है।

गुरदीन उनके बचपन का मित्र था। गाँव के विद्यालय में दोनों साथ पढ़े थे। पाँचवीं के बाद उनके गाँव में आगे की पढ़ाई की कोई व्यवस्था नहीं थी। उसके लिए उन्हें दो मील दूर दूसरे गाँव जाना पड़ता था। फिर गुरदीन पढ़ने में कमजोर भी था और उसके पिताजी की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। यही सब देखकर पिताजी ने उसकी पढ़ाई छुड़वा दी थी और बढ़ईगिरी के अपने पुश्तैनी काम में लगा दिया था। लेकिन शिवसरन आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए दूसरे गाँव के स्कूल में जाने लगे थे।

समय बीतता रहा। समय के साथ शिवसरन आगे बढ़ते हुए अपनी पढ़ाई पूरी की और अध्यापक बन गये। इधर गुरदीन भी अपने पिता के साथ पुश्तैनी धंधे में लगा रहा। दोनों के बचपन की मित्रता अभी भी कायम थी। समय के साथ ही दोनों मित्रों पर अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ भी आती गयीं। जिम्मेदारियाँ निभाते हुए वे बूढ़े होते जा रहे थे और उनके बच्चे सयाने। अध्यापक बनने के बाद से शिवसरन जी मास्टर साहब कहलाने लगे थे।

इस बीच गुरदीन भी इलाके में एक अच्छे कारीगर के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। उसका काम देखकर लोग कहते कि 'गुरदीन जिस लकड़ी पर हाथ फेर दे, वह जीवित हो उठती है।' लेकिन दुर्भाग्य कि उनकी पत्नी बीमार रहने लगी। उनकी सारी कमाई दवा-दारू में खपने लगी, फिर भी पत्नी की हालत में कोई खास सुधार नहीं था। धीरे-धीरे गुरदीन की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। तभी उसे एक दिन मास्टर शिवसरन ने शहर ले जाकर किसी अच्छे डॉक्टर से पत्नी के इलाज का सुझाव दिया।

गुरदीन ने मास्टर साहब के सुझाव को मानने के लिए तो तैयार हो गया, परंतु उसके पास उतने पैसे नहीं थे। वह रुआँसा हो उठा और कहा, 'कैसे शहर ले जाऊँ भैया? अब मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है। भैया! शहर के डाक्टरों को दिखाऊँगा तो वहाँ बहुत पैसा लगेगा।' मास्टर साहब ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, 'तुम पत्नी को लेकर शहर जाओ। किसी अच्छे डाक्टर से इलाज कराओ। रही बात पैसे की तो उसकी व्यवस्था हो जायेगी। मैं पैसा दूँगा। पैसे की वजह से तुम्हारी बीमार पत्नी का इलाज न हो। यह कैसे हो सकता है। इंसान की जान से बड़ा पैसा नहीं है गुरदीन! तुम शहर जाने की तैयारी करो। मैं पैसे लेकर आता हूँ।'

शाम को मास्टर साहब बैंक से पैसा लेकर सीधे गुरदीन के घर पहुँचे। गुरदीन पत्नी को शहर ले जाने की सारी तैयारी कर चुका था। मास्टर साहब ने गुरदीन की तरफ रुपया बढ़ाया और कहा, 'शहर में अच्छे डाक्टर को दिखाओ और हाँ और पैसों की जरूरत होगी तो बताना।' अपने हाथों में रुपया पकड़ते हुए गुरदीन भावुक हो उठा और भर्राये स्वर में बोला, 'मास्टर साहब इस मुसीबत में आपके एहसान को मैं कभी नहीं भूलूँगा। मैं जल्दी ही यह कर्ज चुका दूँगा।' मास्टर साहब ने कहा, 'वह तो बाद की बात है गुरदीन। अब देर न करो, जल्दी शहर जाओ।' गुरदीन बीमार पत्नी को लेकर शहर गया। अच्छे डाक्टर को दिखाया। काफी दिन तक दवा चली। पर सब बेकार... एक दिन पत्नी ने उसका साथ छोड़ दिया।

पत्नी की मौत से गुरदीन टूट गया। अब उसका मन किसी काम में नहीं लग रहा था। कोई उसके पास काम लेकर आता तो भी वह मना कर देता। अब काम करना उसके वश में नहीं रहा। लोग निराश हो जाते। धीरे-धीरे उसके पास काम आना बंद हो गया। अब वह पूरी तरह से अपने बेटे बंशी के सहारे हो गया। बंशी उसका इकलौता बेटा था। गुरदीन चाहता था कि बंशी अपना पुश्तैनी धंधा सीख ले। लेकिन बंशी का मन न पढ़ाई में लगा और न ही पुश्तैनी धंधे में। बंशी साइकिल मिस्त्री था। बाजार में किराये की दूकान लेकर अपनी दूकानदारी चला रहा था। दिन भर की दूकानदारी के बाद रात को घर लौटता।

इधर गुरदीन के पास कोई काम नहीं था। उसके पास

फुरसत ही फुरसत थी। उसके पास गाँव में मास्टर साहब के अलावा कोई और न था, जहाँ बैठकर वह गप्प मार सके, अपने दिल की बातें कर सके। वह दिनभर मास्टर साहब का इंतजार करता। ज्यों ही मास्टर साहब स्कूल से घर लौटते वह उनके पास पहुँच जाता। मास्टर साहब भी गुरदीन का खूब ध्यान रखते। उनको गुरदीन के दु:ख का पूरा एहसास था। वे गुरदीन की बातों को ध्यान से सुनते, समझाते, धैर्य बँधाते। मास्टर साहब की बातों से गुरदीन को भी बड़ी शांति और सुकून मिलता था। मास्टर साहब गुरदीन को पुन: काम करने के लिए समझाते रहते थे। लेकिन कोशिश करने के लिए भी तैयार न था। वे यह भी समझाते कि काम करना शुरु करोगे तो तुम्हारा अकेलापन भी खत्म होगा।

गुरदीन का मन पूरी तरह से अवसादग्रस्त हो उठा था। अवसाद ने पहले उसे बीमार बनाया और बीमारी ने उसे धीरे-धीरे कमजोर कर दिया। धीरे-धीरे उसका चलना-फिरना भी बंद हो गया और अंतत: उसने खाट पकड़ ली। पहले गुरदीन मास्टर साहब से मिलने उनके घर जाता था। पर जब से गुरदीन ने खाट पकड़ी थी, तब से मास्टर साहब उसके घर आने लगे थे।

धीरे-धीरे गुरदीन अपनी इस जिंदगी से तंग आ गया। रात-दिन खाट पर एक ही बगल पड़े रहना। खाट पर ही खाना-पीना और सारी क्रियाएँ। जिंदगी नरक बन गई थी। अक्सर वह कहता, 'ऐसी जिंदगी से तो मौत अच्छी है।' मास्टर साहब उसकी सारी बातों को सुनते। उसे अपना मित्र होने का एहसास कराते। पर कुछ कहने से बचते। मास्टर साहब की चुप्पी के बावजूद गुरदीन कहता रहता, 'भैया! सच कह रहा हूँ। रात-दिन इस तरह पड़े रहने से मैं तंग आ गया हूँ। दिन तो किसी तरह बीत जाता है, पर पूरी रात में बड़ी बेचैनी और पीड़ा होती है। अब तो यही लगता है कि मेरी मुक्ति का रास्ता सिर्फ मौत है।' उस दिन मास्टर साहब का मन भारी हो गया था।

एक रात गुरदीन की बेचैनी बढ़ गई। एक ही करवट पड़े रहने से शरीर दुखने लगा था। दिन होता तो बहू को बुलाकर करवट भी बदल लेते। लेकिन इस समय किसी को भी बुलाना उचित नहीं लगा। धीरे-धीरे वे सोच में खो गये। आखिर इस तकलीफ से उन्हें कब मुक्ति मिलेगी। अब यह जिंदगी एक सजा की तरह है। आखिर मैं किस गुनाह और पाप की सजा भुगत रहा हूँ। आखिर मेरा गुनाह क्या है? सहसा, उन्हें याद आया। एक बार मास्टर साहब ने उसकी मदद की थी। पत्नी के इलाज के लिए उन्होंने दो हजार रुपए दिए थे। अभी तक वह कर्ज चुकाया नहीं गया है। कर्ज चुकाए बिना मुक्ति कैसे मिलेगी? गुरदीन ने तुंरत फैसला किया, मरने से पहले कर्ज चुका देंगे।

सुबह होते ही गुरदीन ने अपने बेटे बंशी को बुलाया। बंशी आकर पास खड़ा हो गया। बेटे की ओर ताकते हुए उन्होंने कहा 'बेटा मुझे दो हजार रुपये चाहिए।' 'दो हजार?' बंशी ने चकित होकर पिता से पूछा। 'हाँ, बेटा दो हजार' गुरदीन ने कहा और बताया कि उसकी माँ के इलाज के लिए मास्टर साहब से दो हजार रुपए उधार लिए थे। अभी तक वह कर्ज चुकाया नहीं गया है। अब जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं है कि कब प्राण निकल जाएँ, और मैं बिना कर्ज चुकाए मरना नहीं चाहता।' 'लेकिन मेरे पास तो इतने रुपए नहीं हैं, पिताजी।' बंशी अपनी बात कह ही रहा था कि गुरदीन ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'मैं जानता हूँ। तुम्हारे पास रुपये नहीं हैं। लेकिन तुम दो हजार रूपये की व्यवस्था करो। तुम जितनी जल्दी रुपये की व्यवस्था कर लोगे। उतनी जल्दी मैं दु:खों से मुक्ति पा सकूँगा, नहीं तो यूँ ही खाट पर पड़े-पड़े एड़ियाँ रगड़ता रहूँगा।' बंशी सोच में पड़ गया, 'ठीक है पिताजी, मैं व्यवस्था करूँगा।'

बंशी ने अपने यार-दोस्तों और रिश्तेदारों पर नजर दौड़ाई कि कहाँ से उसे आसानी से दो हजार रुपए उधार मिल सकता है। बंशी ने पहले मित्रों से मदद माँगी। मित्रों ने अपनी बेबसी सुनाकर असमर्थता जता दी। वह समझ गया कि ये बुरे समय में काम आने वाले मित्र नहीं हैं। सच्चे मित्र तो मास्टर साहब जैसे लोग होते हैं, जो कुछ कहे बिना ही सब समझ जाते हैं। मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अब रिश्तेदारों को जाँचने की बारी थी। वह दूसरे दिन ही रिश्तेदारी में निकल गया। दो दिन तक वह रिश्तेदारियों में घूमता रहा, पर कहीं से भी कोई मदद न मिल सकी। थक-हार कर बंशी पिता के सामने जाकर खड़ा हो गया। बेटे को आया देख गुरदीन प्रसन्न हो गया, पूछा 'बेटा रुपए लाये?' बंशी बहुत उदास सा जवाब दिया, 'नहीं पिताजी' और अपनी गरदन झुका ली।

इस 'नहीं' से गुरदीन की खुशी बुझ सी गई। बंशी ने बताया कि वह सभी रिश्तेदारों और दोस्त-मित्रों से मदद की गुहार लगा लिया, पर कहीं से भी कोई मदद नहीं मिली। गुरदीन की मानो साँसें रुक गई, 'अब मैं मास्टर साहब का कर्ज कैसे चुकाऊँगा?' बंशी को पिताजी की असमर्थता बर्दाश्त नहीं हुई, तपाक से बोला, 'एक उपाय है पिताजी।' गुरदीन ने उम्मीद भरी नजरों से बेटे की तरफ देखकर पूछा, 'क्या?' बंशी ने कहा, 'मैं मास्टर काका को बुलाकर लाता हूँ। आप उनसे कह दें कि आपका कर्ज अब मेरे जिम्मे है। मैं भी स्वीकार कर लूँगा। बाद में धीरे-धीरे मैं उनका कर्ज चुका दूँगा।' गुरदीन गंभीर हो उठा 'नहीं बेटा, यह उचित नहीं है। यह कर्ज मैंने लिया है। इसलिए उसे अपने जीते जी चुकाऊँगा। तुम फिर से कोशिश करो...। एक बार फिर कोशिश करो बेटा! अगर मैं कर्ज नहीं उतार पाया तो यूँ ही सारी जिंदगी नर्क भोगता रहूँगा। इस नर्क से अपने पिता को मुक्त करा दो बेटा!' गुरदीन के स्वर में जमाने भर की पीड़ा थी।

बंशी, बेबस निगाहों से पिता की ओर देखा। फिर संजीदगी से कहा, 'ठीक है पिताजी। मैं एक कोशिश और करता हूँ।' बंशी ने तो हामी भर ली। लेकिन वह जानता था, सब बेकार है। इस समय कोई भी उसकी मदद नहीं करेगा। सब पहले ही हाथ उठा चुके हैं। उसे लगा, अगर मास्टर साहब के पास जाकर अपनी बेबसी की गाथा सुनाए... तो शायद... काम बन जाए।

अगले दिन सुबह बंशी मास्टर साहब के सामने खड़ा था। 'पाँय लागूँ काका।' अकस्मात बंशी को देख मास्टर थोड़ा घबरा गए, 'अरे बंशी! खुश रहो... खुश रहो। सब ठीक है न?' बंशी लंबी साँस लेकर कहना शुरू किया, 'नहीं काका, सब ठीक होता तो इतनी सुबह क्यों आता।' मास्टर साहब की चिंता और बढ़ गई, 'क्या बात है बंशी?' 'मुसीबत है काका। मुझे आपकी मदद चाहिए।' कहते हुए बंशी ने सारी बातें बता दीं। मास्टर साहब मुस्कुराए, 'बस इतनी सी बात है। मैं बैंक से रुपए ले आऊँगा। तुम दोपहर में आ जाना।' एहसान में बंशी के हाथ जुड़ गए, 'जी काका।'

बंशी दोपहर में फिर मास्टर साहब के घर पहुँचा। मास्टर ने उसे दो हजार रुपए दिए। हाथों में रुपए थामते हुए बंशी भावुक हो उठा। आँखें छलक आईं। गला भर गया। कुछ कह न पाया। सीधे मास्टर साहब के पैरों पर गिर पड़ा। 'अरे बेटा यह क्या कर रहे हो?' मास्टर साहब बंशी की बाँह पकड़ ली। 'काका! आप आदमी नहीं देवता हैं।' रुँधे स्वर से बंशी ने कहा, 'नहीं बेटा, नहीं मैं आदमी ही हूँ। मैं शाम को गुरदीन से मिलने आऊँगा।' मास्टर साहब ने कहा। घर लौटते हुए बंशी सोच रहा था। मित्र तो मास्टर साहब जैसे होते हैं। उसके पिताजी भाग्यशाली हैं, जो मास्टर काका जैसे मित्र मिले हैं। काश! उसका भी कोई ऐसा मित्र होता। शाम को मास्टर साहब गुरदीन के पास आये थे। 'कैसे हो गुरदीन?' 'ठीक हूँ मास्टर साहब।' गुरदीन प्रसन्न थे। 'आज तो काफी खुश दिख रहे हो?' मास्टर साहब ने चहक कर पूछा। 'हाँ भैया। आज का दिन काफी अच्छा है। दिल का बोझ काफी हल्का हो गया है।' मास्टर साहब ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा, 'अच्छा...?'

'हाँ भैया! आप को याद है। पत्नी के इलाज के लिए आप से दो हजार रुपए लिए थे, जिसे अब तक नहीं चुका पाया।' 'तुम उसके लिए क्यों परेशान हो।' मास्टर साहब ने आत्मीयता से कहा, 'भैया! मैंने कर्ज लिया था। देना जरूरी था। अब रुपयों का इंतजाम हो गया है। आज मैं वह कर्ज उतार देना चाहता हूँ।' कहने के बाद गुरदीन ने तकिए के नीचे से दो हजार रुपये निकाले और मास्टर साहब की तरफ बढ़ा दिये। मास्टर साहब ने रुपयों को जेब के हवाले किया। गुरदीन ने कहा, 'मास्टर भैया, गिन तो लीजिए। मास्टर साहब गिनने की जरूरत नहीं समझते थे, इसलिए कहा, 'गिन लिया, कम नहीं हैं। मुझे विश्वास है पूरे हैं।' थोड़ी देर रुककर गुरदीन ने कहा, 'मास्टर भैया! मुझे कर्ज से मुक्ति मिल गई। अब इस दुख भरी जिंदगी से मुक्ति मिल जाती तो...'

उसी रात... खाना खाने के बाद मास्टर साहब जब बिस्तर पर लेटे... तो देखते-देखते मौसम का मिजाज बदल गया था। पूरा आकाश काले बदलों से भर गया था। कुछ ही देर के बाद भारी तूफान के साथ तेज बारिश शुरू हो गयी थी। पूरे गाँव में तूफान का दहशत फैल गया। मास्टराइन भी मास्टर साहब के पास आ गयी थीं। 'बड़ा भयानक तूफान है' पति की तरफ देखते हुए काँपते स्वर में उन्होंने कहा था। 'हाँ, ऐसे तूफान कभी कभी आते हैं। लगता है कुछ नहीं बचेगा...। देखो... क्या बचता और क्या खत्म होता है।' मास्टर साहब ने कहा।

दूसरे दिन सुबह जब तूफान शांत हुआ था। तब, चारों तरफ पानी ही पानी था। आखिर इस तूफान से क्या-क्या नुकसान हुआ है, यह देखने लोग घर से निकले थे। कई लोगों के छप्पर उड़ गये थे। पेड़ों की डालें टूट गई थीं। कमजोर पेड़ जमीन से उखड़ गये थे। इसी बीच खबर आई कि गुरदीन नहीं रहे। मास्टर साहब भागते हुए गुरदीन के घर पहुँचे थे। गुरदीन का पार्थिव शरीर अभी भी पुराने बिस्तर पर ही पड़ा था। लगता था कि मानो गहरी नींद में सो रहा हो। मास्टर साहब ने मन ही मन कहा था, 'गुरदीन, आखिर तुम्हें मुक्ति मिल ही गई।

आज इस घटना को 6-7 साल हो चुके हैं। पर जब भी इस तरह का तूफान आता है, मास्टर साहब को अपने मित्र गुरदीन की याद जरूर आ जाती है। क्योंकि ऐसे ही तूफान ने उसे सारे दु:खों से मुक्ति दिलायी थी।

- 657/2, सिविल लाइन-1
शिवाजी नगर, निकट पी डब्ल्यू डी
सुल्तानपुर-228001 (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल: +91 9616887292

इस्पात उत्पादन व खपत में सामंजस्य

- श्री विजय कुमार पाण्डेय -

वर्ष **2015** के दौरान वैश्विक स्तर पर इस्पात का उत्पादन लगभग **1695** लाख टन हुआ और खपत लगभग **1546** लाख टन हुई। इस प्रकार वैश्विक बाजार में इस्पात उद्योग ने **1.3** खरब डॉलर का कारोबार किया। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में, इस्पात के अत्यधिक उत्पादन ने इसकी कीमत पर दबाव डाला है और परिणामस्वरूप वैश्विक इस्पात बाजार में गिरावट आई है। वैश्विक मंदी ने कमोडिटी क्षेत्र को भी प्रभावित किया है, जिससे विकास की गति और धीमी हो गई है। वर्ष **2015** से **2020** की अवधि में इस्पात बाजार में विकास की रफ्तार धीमी रहने की आशा है। इसके बाद वर्ष **2020** से **2025** के दौरान इस्पात बाजार में बहुत तेजी आने का अनुमान लगाया जा रहा है।

अगले एक दशक तक खपत से उत्पादन की मात्रा अधिक रहने की आशा है। यह स्थिति चीन द्वारा इस्पात उत्पादन में कटौती का विरोध तथा दुनिया भर में इसकी माँग में गिरावट के कारण उत्पन्न हुई है। इस्पात बाजार में अभी भी चीन की प्रमुखता बनी हुई है। वैश्विक बाजार में चीन की हिस्सेदारी लगभग **50%** है। चीन न केवल विश्व का सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक है, बल्कि वह विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है और अनुमान यह भी है कि चीन का अग्रणी बने रहना लगभग **2025** तक जारी रहेगा। मजबूत विकास दर के कारण इस्पात उत्पादन और खपत के क्षेत्र में भारत, ताइवान, ईरान, जापान, दक्षिण कोरिया तथा मेक्सिको जैसे देश भी अग्रणी हैं। अगले दशक में वैश्विक इस्पात की खपत मुख्यत: उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भर करेगी। इस्पात की खपत में वृद्धि के मुख्य कारण विकास की नई मूलसंरचनाओं की बढ़ती माँग एवं विकासशील देशों में मध्यम वर्ग की बढ़ती आवश्यकताएँ हैं।

उत्पादन एवं खपत का पूर्वानुमान:

प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए इस्पात के उत्पादों, उसकी गुणवत्ता एवं बाजार के साथ-साथ बाजार का पूर्वानुमान काफी मायने रखता है। इस्पात उत्पादन एवं खपत के पूर्वानुमान के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना अति आवश्यक है:

- उत्पाद विकास के कारकों एवं मूल्य निर्धारण के सभी घटकों की पूर्व जानकारी रखना।
- उद्योग और उत्पाद विकास को प्रभावित करने वाली ताकत, कमजोरियों, अवसरों और खतरों की पूर्व जानकारी रखना।
- कारोबार के वर्तमान व भावी विजन का निर्धारण करने एवं साथ ही अनुसंधान तथा विकास की रणनीति, प्रौद्योगिकी संबंधी मामलों व बाधाओं, माँग एवं आपूर्ति की गतिशीलता, अग्रणी उत्पादकों की विशेषज्ञता, अग्रिम उत्पाद की गुणवत्ता, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, उद्योग और अग्रिम उत्पाद को प्रभावित करने वाले राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी कारणों की पूर्व जानकारी जैसे संवेदनशील व्यापारिक मुद्दों का बारीकी से अध्ययन करना, आदि।

इस्पात की खपत के पूर्वानुमान हेतु निम्नलिखित ग्यारह प्रमुख इस्पात कंपनियों के प्रतिस्पर्द्धात्मक परिदृश्य अर्थात प्रोफाइल के अधीन उनके राजस्व, क्षमताओं, उत्पादों, अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों, सेवाओं की गुणवत्ता, ध्यान केंद्रित क्षेत्रों, कार्यनीतियों, परिवर्तनशीलता व उपार्जन कार्यकलापों के साथ-साथ भावी दृष्टिकोण आदि का गहन अध्ययन होना चाहिए:

- अर्सेलर मित्तल, लग्जमबर्ग, यूरोप
- निप्पन इस्पात एवं लौह सूमितो मेटल, जापान
- हेबेई आयरन एंड स्टील कंपनी
- बाओ स्टील कंपनी
- वुहान ऑयरन व स्टील
- पॉस्को, दक्षिण कोरिया
- ज्यांगसू सांगंग समूह
- एनस्टील, सेवागांग, चीन
- जे एफ ई होल्डिंग्स, जापान
- टाटा स्टील, भारत आदि।

भारत में इस्पात बाजार:

भारत में निम्नलिखित क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ संभावित इस्पात बाजार में विकास का अनुमान है - निर्माण, ऑटोमोटिव, यांत्रिकी इंजीनियरी, इलेक्ट्रानिक इंजीनियरी, तेल व गैस, घरेलू उपकरण आदि।

वर्तमान में ऑटोमोबाइल क्षेत्र के कलपुर्जों का निर्माण कार्य करने वाली कई विदेशी कंपनियाँ भारत के घरेलू बाजार, साथ ही वैश्विक बाजार हेतु भारत में उत्पादन के प्रति काफी उत्सुकता दिखा रही हैं। जापान की होंडा कंपनी ने मोटर साइकिल व कार उद्योग की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए **9.65** बिलियन रुपये के निवेश की घोषणा की है। इसी क्रम में कुछ भारतीय इस्पात कंपनियों ने आवश्यक गुणवत्ता के इस्पात मुहैया कराने हेतु कुछ विदेशी कंपनियों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किया है।

साथ ही सरकार ने भारतीय रेल की लाइनों के विस्तार की योजना बनाई है। इसके तहत अगले पाँच वर्षों के दौरान रेलवे ट्रैकों का बीस फीसदी विस्तार किया जाएगा। इसके लिए रेल की पटरियों के उत्पादन हेतु निवेश की शुरुआत भी हो गई

है। भिलाई इस्पात संयंत्र ने जर्मनी के एस एम एस कंपनी के सहयोग से **1.2** मिलियन टन प्रतिवर्ष क्षमता वाली यूनिवर्सल रेल मिल की स्थापना की है। इससे **130** मीटर के चार जंक्शनों को जोड़नेवाली **520** मीटर लंबी रेल बनाई जायेगी।

रक्षा क्षेत्र में भी इस्पात उत्पादों की खपत में वृद्धि निश्चित है। इसके लिए सरकार ने रक्षा वाहनों, युद्ध टैंकों, युद्ध पोतों के विकास के लिए पर्याप्त ध्यान दिया है। इसमें **4.3** मीटर चौड़े प्लेटों का उत्पादन करने वाली राऊरकेला इस्पात संयंत्र की नई मिल का बहुत बड़ा योगदान होगा। केंद्र सरकार द्वारा रक्षा उपकरणों के निर्माण से संबंधित नियमों में उदारीकरण के माध्यम से बहुत सहयोग दिया जा रहा है, साथ ही विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे विदेशी एवं भारतीय कंपनियों के बीच सामरिक साझेदारी को भी प्रोत्साहन मिल रहा है।

मूलसंरचना के क्षेत्र में भी इस्पात की खपत में बढ़ोत्तरी हेतु सरकार द्वारा सराहनीय कदम उठाए गए हैं। सड़क निर्माण परिव्यय, रेल विकास, बंदरगाहों की क्षमता में वृद्धि एवं अन्य मूल संरचनागत क्षेत्रों आदि हेतु बजट का प्रावधान किया गया है। **4000** मेगावाट क्षमता वाली पाँच नई बड़ी बिजली परियोजनाओं की स्थापना से इस्पात अल्युमिनियम एवं तांबे की खपत में काफी वृद्धि होगी। यह टर्बाइन एवं अन्य पॉवर उपकरणों के उत्पादकों के व्यापार को मजबूती प्रदान करेगी।

'मेक इन इंडिया' अभियान से देश में स्टेनलेस इस्पात की माँग में वृद्धि की संभावना है। भारत में स्टेनलेस इस्पात उत्पादन का हिस्सा कुल इस्पात उत्पादन के चार फीसदी से अधिक है, जबकि यह विश्व में ढाई फीसदी से भी कम है। यदि कार्बन इस्पात को स्टेनलेस इस्पात से प्रतिस्थापित करने की रणनीति जारी रही तो हमारे देश में स्टेनलेस इस्पात की खपत में वृद्धि निश्चित है। बाजार में विभिन्न उपयोगों के लिए चार सौ से अधिक श्रेणियों का स्टेनलेस इस्पात उपलब्ध है। भारत में रसोई व बर्तन से संबंधित उपयोगों के लिए स्टेनलेस इस्पात की खपत लगभग पैंसठ फीसदी है, जबकि औद्योगिक इस्पात की खपत केवल पैंतीस फीसदी है। इस क्षेत्र में घरेलू उत्पादन क्षमता सीमित है। अत: उपभोक्ताओं की पूर्ति हेतु हमें आयातित माल पर निर्भर होना पड़ रहा है। भारत में स्टेनलेस इस्पात की प्रतिव्यक्ति खपत ढाई किलोग्राम है, जबकि चीन में यह दस किलोग्राम है। 'मेक इन इंडिया' अभियान से स्टेनलेस इस्पात की खपत भी बढ़ेगी, जिससे अगले दशक तक स्टेनलेस इस्पात की खपत लगभग छ: किलोग्राम प्रतिवर्ष प्रतिव्यक्ति होने की संभावना है। इसके लिए घरेलू स्टेनलेस इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में अनुसंधान व विकास की आवश्यकता है। घरेलू क्षमता के उन्नयन हेतु सरकार को वैश्विक उत्पादकों एवं स्थानीय मिलों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है। 'सबके लिए पक्का मकान' एक अच्छी पहल है। इससे इस्पात की खपत को बढ़ावा मिलेगी। इसके अलावा 'भारत निर्माण' व 'प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना' जैसे कार्यक्रमों से भी इस्पात की खपत में वृद्धि होगी। सरकारी आँकड़ों के अनुसार इस वर्ष आयात में **41%** कमी आएगी। यह न्यूनतम आयात मूल्य तथा अन्य सुरक्षात्मक उपायों जैसे पाटनरोधी शुल्क के कारण संभव होगी।

इस्पात का इस्तेमाल सभी महत्वपूर्ण उद्योगों जैसे ऊर्जा, निर्माण, ऑटोमोटिव व परिवहन, मूलसंरचना, पैकेजिंग और मशीनरी में होता है। नवीकृत ऊर्जा जैसे तापीय, सौर ऊर्जा एवं ज्वारीय विद्युत के उत्पादन के लिए इस्पात का उपयोग प्रमुख सामग्री के रूप में होता है।

कम उपयोग के कारण:

भारत में अभी मूलसंरचनाओं का विकास हो रहा है। इस मामले में भारत अन्य देशों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। देश में नवीकृत ऊर्जा उत्पादन (**42783** मेगावट) भी कुल उत्पादित ऊर्जा (**3** लाख मेगावाट) का मात्र चौदह फीसदी ही है। अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्ष **2027** तक भारत में नवीकृत ऊर्जा उत्पादन की क्षमता **275** मेगावाट हो जाएगी और पनविजली एवं परमाणु ऊर्जा का उत्पादन क्रमश: **72** मेगावाट और **15** गेगावाट होगा। इस प्रकार कुल विद्युत उत्पादन में नवीकृत ऊर्जा की भागीदारी लगभग **57** फीसदी हो जाएगी।

शहरीकरण से इस्पात उपभोग में वृद्धि होती है। चीन में शहरी आवादी **56%** है, जबकि भारत में केवल **36%** ही शहरी आवादी है। अन्य देशों की भांति भारत में अभी तक लोकप्रिय औद्योगक क्रांति नहीं आई है और यह भी इस्पात की कम खपत का प्रमुख कारण हो सकती है। भारतीय ग्रामीण बाजार जो कि संभावित वृहद इस्पात उपभोक्ता हो सकता है, अभी भी इस्पात खपत के मामले में काफी पीछे है। यहाँ इस्पात एवं इसके उपयोग की पर्याप्त जानकारी का अभाव तथा गरीवी के कारण लोग साधन व संसाधनों की पहुँच से दूर हैं।

कोयले की उच्च लागत और सीमित उपलब्धता, कम श्रमिक उत्पादकता, विजली की वाधित आपूर्ति, खराव व अपर्याप्त मूलसंरचना आदि कारणों से भी भारत में इस्पात की खपत कम है।

निवेश - एक महत्वपूर्ण पहल:

भारत की औद्योगिक नीति एवं प्रोत्साहन विभाग द्वारा प्राप्त आँकड़ों से पता चलता है कि भारत में वर्ष **2000** से

मार्च, 2016 के दौरान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 8.89 बिलियन डालर तक हुआ है। भारतीय इस्पात उद्योग में हुए कुछ प्रमुख निवेश इस प्रकार हैं:-

- उत्तम गल्वा मेटालिक्स, वर्धा इकाई के विस्तारण हेतु दक्षिण कोरिया की इस्पात कंपनी पॉस्को ने चीन की मूलसंरचना कंपनी टिडफोर, भारी उपकरण समूह द्वारा 150 मिलियन डालर का निवेश।
- उपग्रह और रक्षा क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाले विशिष्ट इस्पात के उत्पादन हेतु सेल के साथ अर्सेलर मित्तल का संयुक्त उद्यम स्थापित करने का समझौता।
- 5-7 वर्षों के दौरान जे एस डब्ल्यू समूह द्वारा सालवोनी पश्चिम बंगाल में 1320 मेगावाट का कोयले पर आधारित विद्युत संयंत्र, 4.8 मिलियन टन सीमेंट संयंत्र और पेंट कंपनी के लिए 10000 करोड़ रुपये का निवेश।
- अगले आठ वर्षों में खनन की वर्तमान क्षमता के 48 मिलियन टन प्रतिवर्ष से 100 मिलियन टन प्रतिवर्ष तक विस्तारण हेतु राष्ट्रीय खनिज विकास निगम द्वारा 40000 करोड़ रुपये का निवेश।
- भारत में ऑटोमोटिव इस्पात उत्पादन के लिए स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया के साथ अर्सेलर मित्तल का करार।
- कर्नाटक सरकार के साथ सार्वजनिक क्षेत्र की खनन कंपनी एन एम डी सी लिमिटेड संयुक्त रूप से लगभग 18000 करोड़ रुपये के निवेश से तीन मिलियन टन इस्पात मिल की स्थापना हेतु सहमति।
- जे एस डब्ल्यू द्वारा कर्नाटक राज्य में स्थापित अपने संयंत्र का 2022 तक 20 मिलियन टन प्रतिवर्ष क्षमता विस्तारण की घोषणा।

केंद्र सरकार की पहल:

- सरकार ने ऑटो शेडिंग तथा री-साइक्लिंग सुविधा के लिए एम एस टी एस और महिंद्रा इंटरट्रेड लिमिटेड की एक संयुक्त परियोजना को अनुमोदित किया है। इससे स्क्रैप का आयात घटेगा और विदेशी मुद्रा बचेगी।
- 'डिजिटल इंडिया' पहल के अंतर्गत मेटल स्क्रैप ट्रेड कार्पोरेशन लिमिटेड तथा इस्पात मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से एक ई-मंच 'एम एस टी सी धातु मंडी' शुरु की गई है। यह परिसज्जित और अर्ध परिसज्जित इस्पात उत्पादों की बिक्री में सहायक होगी।
- संसद ने खान व खनिज विकास और विनियमन अधिनियम में आवश्यक संशोधन हेतु मंजूरी दी है। इन संशोधनों से नीलामी द्वारा खानों का स्वामित्व पाने वाली संस्थाएँ निजी खदानों के पट्टों का हस्तांतरण आसानी से कर सकेंगी। इससे इस्पात और सीमेंट कंपनियों के विलयन व उपार्जन में भी सहायता मिलेगी।
- केंद सरकार ने वर्ष 2025 तक उत्पादन का लक्ष्य 300 मिलियन टन प्रतिवर्ष करने के लिए इस्पात उत्पादकों को समर्थन की प्रतिबद्धता जाहिर की है।
- इस्पात मंत्रालय ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की इस्पात कंपनियों के साथ मिलकर भारत में अनुसंधान और औद्योगिकी मिशन की स्थापना की है तथा इसके लिए 200 करोड़ रुपये की निधि की व्यवस्था की है।
- केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड ने लौह अयस्क पेल्लेटों पर शून्य निर्यात शुल्क की अधिसूचना जारी कर घरेलू उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्द्धी बनने का अवसर प्रदान किया है।
- सरकार ने लौह अयस्क से समृद्ध चार राज्यों अर्थात कर्नाटक, झारखंड, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ में 3 से 6 मिलियन टन प्रतिवर्ष क्षमता के संयंत्रों की स्थापना हेतु विशेष प्रयास किया है।
- वर्ष 2025 तक स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने अपनी उत्पादन क्षमता के 50 मिलियन टन प्रतिवर्ष विस्तारण हेतु 23.8 मिलियन डालर निवेश करने की योजना बनाई है।

इस्पात खपत की नई पहल:

शहरीकरण की दिशा में मददगार इस्पात की खपत में वृद्धि हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नानुसार हैं:

- ऑटोमोटिव, रेल एवं जहाज निर्माण में दीर्घकालिक कर प्रोत्साहन की व्यवस्था।
- इस्पात आधारित मिश्रधातु को पाउडर के रूप में प्रयोग
- 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत आवासीय क्षेत्रों में इस्पात से बने कूड़ेदान की व्यवस्था।
- बाढ़ संभावित क्षेत्रों में जल संग्रहण हेतु इस्पात से बने टंकियों की व्यवस्था।
- कृत्रिम वर्षा से धूल प्रदूषण नियंत्रण हेतु इस्पात के जल स्प्रिंक्लर्स पाइप की व्यवस्था।
- पंद्रह साल पुराने सभी वाहनों के विघटन एवं उन्हें अवैध घोषित करना, आदि।

- सहायक महाप्रबंधक (टी आई सी)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9866641563

कविता

'अंबिकेश' की कविताएँ

मजदूर

वह सड़क पर जा रहा था,
एक नर कंकाल सा वह,
विश्व का भूचाल सा वह,
सभ्यता का शत्रु सा,
शोषित क्षुधित बंगाल सा वह।
शुष्क-दृढ़ निज युग करों से;
प्राण छाती में दबाए,
मौज से कुछ गा रहा था,
वह सड़क पर जा रहा था।।1।।

माघ के दिन तीव्र ठिठुरन,
तीर सा लगता समीरण,
मस्त, सुख की गोद में,
करते किलोलें ये धनिक जन।
किंतु बेपरवाह सा वह,
लाज लतों में लपेटे,
श्रम जनित सुख पा रहा था,
वह सड़क पर जा रहा था।।2।।

सहज संभव डग बढ़ाता,
नींव वैभव की हिलाता,
पद-प्रकंपन मात्र ही
इतिहास कुछ का कुछ बनाता।
वह मनीषी, विप्लवी, विध्वंसकारी,
विश्व के सारे प्रलोभन,
शान से ठुकरा रहा था,
वह सड़क पर जा रहा था ।।3।।

जग उसे मजदूर कहता,
और उससे दूर रहता,
किंतु संश्रुति के सृजन में,
वह लगा भरपूर रहता।
क्रांति युग के इन क्षणों में
हर कदम उसका स्वयं ही
एक नवयुग ला रहा था,
वह सड़क पर जा रहा था ।।4।।

मंदार

हैं जहाँ न पाटल के प्रसून,
हैं जहाँ न जूही के उपवन।
मैं उन्हीं विजन ऊँचे-नीचे,
टीलों पर का मंदार सुमन।।

है अभी चाँदनी लगी हुई,
मुँह में है रवि की प्रथम किरण।
है याद मुझे अपना झुरमुट,
ऊसर का वह सुनसान शयन।।

एकांत निशा की अंवर की,
नर्तकियों का सुंदर नर्तन।
है याद मुझे संध्या तट पर,
रंगों का पल-पल परिवर्तन।।

वह प्रकृति प्रिया के पग नूपुर-
के घुँघरू सा मेरा कंपन।
है याद मुझे उन भ्रमरों का
पहना देना नीलम कंकण।।

उस दिन कवियों की आँख गड़ी,
मालिन मुझे कर लाई चयन।
हरियल के से पंखों वाले,
पादप सा हा; छिन गए नयन।।

अब रंग विरंगे फूलों में,
मैं क्या? मेरा क्या आकर्षण।
सुकुमार करों से आ कोई,
सहृदय, कर दे हर पर अर्पण।।

फिर सूखूँ तो दे फेंक मुझे,
है जहाँ महानीरव-निर्जन।
मैं उन्हीं विजन, ऊँचे-नीचे,
टीलों पर का मंदार सुमन।।

जल के बदले

प्यास होंठ पर आ बैठी है,
दूर बहुत पैमाने हैं,
जल के बदले जहर पी रहे,
हम ऐसे दीवाने हैं।

सिमटा जो दर्द, गुबारों में,
हम वो आवारा बादल हैं।
हम आँसू के हैं ताज सखे,
नयनों से बिछड़े काजल हैं।

हम दु:ख के संगी साथी हैं,
मुस्कानों से अंजाने हैं
जल बदले जहर पी रहे,
हम ऐसे दीवाने हैं।

हम को क्या लेना-देना,
अब शोख चाँदनी रातों से।
उपवन-उपवन बिखरी-बिखरी,
इन खूशबू की बरसातों से।

तीखे काँटों के घर जाकर,
कुछ रिश्ते नए बनाने हैं।
जल के बदले जहर पी रहे,
हम ऐसे दीवाने हैं।

अपनी खातिर कब खुले यहाँ,
किरणों के स्वर्णिम दरवाजे।
अँधियारों में खो गई कहीं,
वो चिर-परिचित सी आवाजें।

उनकी तलाश में अब हमको,
अनगिन द्वार खड़काने हैं।
जल के बदले जहर पी रहे,
हम ऐसे दीवाने हैं।

जगती का आकर्षण मेरे,
भोले मन को भरमाता है।
मैं ढूँढ़ रहा हूँ वह रस्ता,
जो तेरे घर को जाता है।

हमको आँधी के आँगन में,
अनगिन दीप जलाने हैं।
जल के बदले जहर पी रहे,
हम ऐसे दीवाने हैं।

सूख गया आँखों का पानी

सूख गया आँखों का पानी
गीत गजल से क्या होगा
माटी के सब महल-अटारी
माटी के सब बंदे।
ऊपर से सब बगुले की बानी
भीतर काले धंधे।
आए हो तुम नंगे होकर
वल्कल से अब क्या होगा।।1।।

मरा हुआ अंदर का मालिक,
झूठी सारी शान।
बिन पंखों के पंछी बोलो,
कैसे भरे उड़ान।
दरिया, पोखर रिक्त हो गए
बादल से अब क्या होगा।।2।।

कविता

मंदिर में तो देव नहीं है,
फिर भी कलश चढ़ा है।
पूजा का नैवेद्य सजाए,
पंडित दूर खड़ा है।
टूट गए हैं बंधन सारे,
पायल से अब क्या होगा।।3।।

तुमने सारी फिजा बिगाड़ी,
मौन हो गया गीत,
आँखों में तो नेह नहीं है,
कौन सिखाए प्रीत।
रस-रीति अमराई की छवि,
कोयल से अब क्या होगा।।4।।

कुछ गीत देता चल

जो अँधेरे आज हैं,
कल टूट जाएँगे,
आज को कल के लिए
कुछ गीत देता चल।
एक बेबस प्यार है
बैठा किनारों तक
और बादल हैं
कहीं चुपचाप बैठे हैं,
बावरा मन
याचना करके थका-हारा
मुद्दतों से
ज्यों सृजन के भाव ऐंठे हैं।
आज जितनी प्यास है
कल तृप्ति भी होगी
सीप के घन-स्वाति की
बरसात देता चल।।1।।

दर्द है तो
मुश्किलें भी साथ में होंगी
आपदा
मन को कहीं तैयार करती है
अनगढ़ा पत्थर कभी जो
ठोकरों में था
आज मूरत बन सँवर
श्रृंगार रचती है।
कौन क्या था,
क्या बनेगा
आज अथवा कल
भाग्य को तू
कर्म श्रम साथ देता चल।।2।।

है, जिन्होंने आज तक
सूरज नहीं देखा
उस अँधेरी जिंदगी को
रोशनी तो दे
यातना-घर मात्र है
जिनके लिए जीवन
चार पल के रंग
बहते आँसुओं को दें।
आजकल अपने लिए
करते रहे हैं हम
और को कल के लिए
कुछ स्वप्न देता चल।।3।।

आज को कल के लिए
कुछ गीत देता चल।।

- श्री अंबिका प्रसाद शुक्ल
121/1, साइट नं.1, डबलरूम
किदवई नगर, कानपुर-208011
मोबाइल: +91 9795621207

पुष्पांजलि

आज कुछ अँधेरा अँधेरा
विनती, कब आएगा सवेरा
शुरु से सब कुछ
अपना माना
सब को दिल से जोड़ा
कभी नहीं
किसी काम से मुँह मोड़ा
पर पता नहीं, क्यूँ?
लगता है अब जुदा-जुदा
और मैं हो गया बेसहारा
बनाने वाले ने रिश्तों में
दरार क्यों कर डाला
क्यों नहीं रहने दिया
मेरे जीवन का उजाला
मैंने भी तो तेरे चरणों में
साल-दर-साल
पूजा की डलिया चढ़ाई थी
लेकिन यह तूने तो कर दी
मेरी आर आई एन एल से
विदाई ही।
नासमझ मन समझ नहीं पाता
कैसे समझाऊँ?
क्या जतन करूँ?
किसको बताऊँ?
वर्षों से जुड़ी यादों, विवादों,
संवादों से कैसे उबर पाऊँ?
लोगों ने अपना माना
मैंने भी अपना माना
सभी हो गए बेगाने
कैसी उलझन है
कैसे सुलझाऊँ
कल को देखता हूँ
कल मेरे पास
चमकते सितारे थे
आज आँखों में शंकाएँ हजार हैं
कल तो मात्र आवारा आवारा
आज कुछ अँधेरा अँधेरा
हा...! आर आई एन एल
पूर्णिमा के चाँद जैसा
तेरा चिन्ह मुझे लुभाएगा
जब-जब तेरी याद आएगी
आँखों से एक बूँद आँसू टपक जाएगा
तेरे चरणों में बहता गोदावरी का
वह पीला-दहकता सोना
जिसे पत्थर को पिघलाकर
तेरे बेटों ने बहाया है
उसकी तपन
मेरे जीवन को गर्माहट देती रहेगी
मेरी जीर्ण हो रही हड्डियों में
फौलादी ताकत भरती रहेगी
अतुल्य भारत के निर्माण में
तेरी भूमिका तालचेर ठकुरानी से
शुरु होकर जन-जन में
शक्ति का संचार करता
तेरी वजह से मैं भी सिर उठाकर
जी लिया कुछ पल सवेरा सवेरा
आज कुछ अँधेरा अँधेरा।

- श्री मनमथ परिडा (सेवानिवृत्त कर्मचारी)
क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्व), कोलकाता
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम

कविता

किरण कंचन की कविताएँ

वादा करो माँ

माँ! आऊँ
न आऊँ बाहर
बाहर के घोर अँधेरे से
घबरा रहा है मेरा जी
माँ! तेरे गर्भ में अनुपम सुख
आत्मीयता है
दिखावे से बेखबर हूँ
वादा करो माँ!
दुनिया का दर्शन कराओगी
सत्य के साथ
तुम्हारे हाथ से पकी रोटी में
स्वाद होगा सत्य और स्नेह का
उसमें तनिक भी न होगी
इसकी-उसकी-किसी की छींक
और न मुझ पर
कोई किसी का असर होगा।

एहसास

पल में हँसाते पल में रुलाते हैं
कभी जीवन तट से
टकराए विना ही
लौट जाते हैं एहसास
कभी गरम रेत से पाँव जलाते
कभी दौड़ते हैं
मानस पटल पर तेज
धीरे-धीरे दिलों को जोड़ते
और तोड़ते भी हैं
कभी-कभी
संग हमारे कुलांचे भरते
दौड़ते भी हैं
कभी ये पीतल
लोहा सोना चाँदी
और हीरा बन
खनकते हैं, चमकते हैं।

द्वन्द्व

दुनिया के अखाड़े में हजारों द्वन्द्व
जिसमें न जीत है न हार
न कोई नायक न खलनायक
सिर्फ मन की ऊहापोह
विनाशकारी द्वन्द्व
होने नहीं देता आत्मसात
घेरकर दु:ख के बादलों के साथ
घोंटता है गला खुशियों का
आत्मवल जब भरता है द्वन्द्व
तो उदित होता सूर्य
उन्मुक्त जीवन का
और खिल उठता उपवन खुशियों का।

धागे जीवन के

धागे जीवन के
उलझे-उलझे से हैं
सिरे उनके मिलते नहीं
सुलझाओ जितना भी
उलझते ही हैं
न ओर न छोर
बस एक उलझा जंजाल
झुंझला जाता दम
अक्सर सुलझाने में
और कभी टूट जाते
कभी गाँठ बन
उलझाते रहते
जीवन के धागे को।

जकड़ रहे हैं

जकड़ रहे हैं लाखों गम
खुशियों को
खुलकर
हँसे भी तो कैसे
जकड़न-अकड़न भरी जिंदगी
दो बूँद खुशी
माँगती भिखारिन सी
कल आज कल
की चिंता में
ठग सी जाती
लाखों गम की अग्नि परीक्षा में
बस बेजान सी
होंठों पर
कभी-कभी मुस्कुराती
और रवायत मात्र
हँसने की है निभाती।

पेट उठाकर सर पर

पेट उठाकर सर पर वह
तय करती है सफर
मीलों का
जिंदगी के कशमकश में
अपनी किस्मत आजमाती है वह
गरम गिलाफ
सरदी की है सौगात
गली-गली गाती
ले न ले दिखाती
मन ही मन
दुआएँ कितनी माँगती
पसंद नापसंद में उलझी रहती
खरीद ले अगर कोई
तो मुट्ठी भर अनाज
है घर ले जाती
और साँझ ढले चूल्हा जलाती
भूलकर वदन दर्द
पुन: एक बार
जीवन संघर्ष में जुट जाती।

बाजार

यह बाजार
सारा कारोबार
चल रहा है
तेरी निगरानी में
व्यापार भी है
और मेला भी
और मेले में
रौनक भी
खरीद रहे हैं सभी

कविता

चीजें जरूरत की
बच्चे खेल रहे हैं
झूम रहे हैं
मौज मनाते
घूम रहे हैं
इधर उधर
सबकी जिंदगी
दौड़ रही है बेफिक्र
रफ्तार से
यह बाजार
सारा कारोबार
चल रहा है
तेरी रहमत से।

कल्पनाएँ

सुनहरे पंख
खोल
उड़ती हैं
कल्पनाएँ
मानस पटल पर
खींच देती हैं
अनगिनत रेखाएँ
और
ले जाती हैं
छोर के उस ओर
जहाँ
जिंदगी
लगती है
बेहद खूबसूरत सी
आभूषण जड़ित
प्यारी सी दुल्हन
और देखते हैं हम
बस यही एक रूप जिंदगी का
कल्पनाएँ सुनहरे पंख
खोल हलाती हैं हमारा दिल भी
जीते हैं हम
साथ इनके
बिलकुल समझकर इन्हें
स्थाई
और निकल जब
बाहर आते हैं
दिखती हैं असलियत
कुछ और ही।

मधुकर

रे मन घुट-घुट कर जीना
नहीं लगता जीने सा
जीना तो मधुकर जाने
हँसते-खेलते
दूर बहारों तक
कुलाचें भरते
मधुर जिंदगी के
साए में जीवन सार
भोग जाते और दे जाते
जीने का है
अपना ही मजा
तू जरा
मन के सारे धरम मिटा
मुस्कुराहटों को गले लगा
न रह जिंदगी से खफा
न जुदाई से डर
न मिलन की कामना कर
न नफरतों में
न मोहब्बत में
है जीवन
जीने से
खिलने दे उपवन
जिंदगी के।

दूर ठिकाना है

दूर ठिकाना है
भीड़ भरी बस्तियों से
गुजरकर जाना है
डर है
कहीं उलझ न जाएँ
होकर यहीं के
न रह जाएँ
भरमाई दुनिया के
झूठे रीति-रिवाज
पैरों की बेड़ियाँ
न बन जाए
और
बंधा बंधा सा ये जिस्म
पैर एक भी न जल पाए
दूर जाना है
सफर नहीं आसान है।

ये किसान

है रिश्ता बच्चे का
माँ से
ममता का
जैसे है रिश्ता
किसान का
मिट्टी से
परवरिश का
जानता है इसे करीब से
कोख सजाता है बीच से
बहता है पसीना
सहता है ठंड
भीगता है भरी बरसात में
और
बीमार जो हो जाए
नहीं कोसता ये इसे
मौसम बिगड़े अगर
तो रहती है फिक्र फसल की
जैसे हों
बच्चे पल रहे
खेतों में
और डर रहा हो
कि कहीं न हवा बारिश से
सर्दी खाँसी हो जाए इन्हें
उम्र सारी गुजरती है जीवन
मध्यवर्गी
मेहनत की खाता है कमाई
धरती दुल्हन सी सजाता है
ये किसान धरती का दाता है।

- गाँव: मछलियाँ, डाकघर: दोमाना
तहसील और जिला जम्मू-181206
मोबाइल: +91 9419149433

कार्य-कलाप

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में जनवरी-मार्च,

गणतंत्र दिवस समारोह

गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर **26** जनवरी, **2017** को उक्कुनगरम के तृष्णा ग्राउंड्स में आयोजित समारोह में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने कहा कि आर आई एन एल की नई इकाइयों से उत्पादन में गति आई है। अत: सुरक्षा मानकों को कड़ाई से अपनाते हुए प्रौद्योगिकी-आर्थिक मापदंडों में सुधार लाने का प्रयास होना चाहिए। साथ ही उन्होंने कंपनी की वित्तीय स्थिति में सुधार लाने हेतु नये बाजारों में अपनी पैठ बनाने एवं नये ग्राहकों की तलाश पर बल देने की बात रखी।

आंध्र प्रदेश खनिज विकास लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन

आर आई एन एल ने पश्चिमी गोदावरी जिले में स्थित 'कुकुनूर लौह अयस्क खदानों के अन्वेषण एवं उपयोग' हेतु आंध्र प्रदेश खनिज विकास लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन किया। **28** जनवरी, **2017** को आयोजित भागीदार सम्मेलन में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने आंध्र प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन चंद्रबाबु नायुडु की उपस्थिति में आंध्र प्रदेश खनिज विकास लिमिटेड के उपाध्यक्ष श्री सी एच वेंकय्य चौधरी को समझौता ज्ञापन की प्रति सौंपी।

आर आई एन एल गठन दिवस समारोह

आर आई एन एल गठन दिवस समारोह के अवसर पर **18** फरवरी, **2017** को उक्कुनगरम में आयोजित पौधरोपण, वाइसाइकिल रैली, एक्जिबिशन मैच जैसे कार्यक्रमों में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन, निदेशकगण, वाइजाग स्टील के ब्रांड एंबेसिडर पद्मश्री पी वी सिंधु, विस्टील महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती गौरी अन्नपूर्णा एवं श्रीमती विंदु महापात्रा ने भाग लिया। कार्यक्रम में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक ने पिछले साढ़े तीन दशकों के दौरान गुणवत्तापूर्ण एवं प्रमुख इस्पात निर्माता के रूप में आर आई एन एल की सफल यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया और सुश्री पी वी सिंधु की उपस्थिति के प्रति संतुष्टि व्यक्त की।

सुरक्षा मानकों के अनुपालन का महत्व

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस समारोह के अवसर पर सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संयुक्त फैक्टरी महा निरीक्षक श्री डी चंद्रशेखर वर्मा ने कहा कि सुरक्षा कार्य-संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाने से उद्योगों में 'शून्य दुर्घटना' का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने सुरक्षा मानकों के महत्व का उल्लेख करते हुए कर्मचारियों को सुरक्षित कार्य वातावरण के अनुरूप अपने आपको ढालने का सुझाव दिया। कार्यक्रम में सुरक्षा शपथ लिया गया। तत्पश्चात सुरक्षा हेतु अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक को ओ एच एस ए एस-**18001** प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

कार्य-कलाप

2017 तिमाही के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों से संबंधित विवरण

'सुगंध' पत्रिका पुरस्कृत

परिवर्तन जन कल्याण समिति, दिल्ली द्वारा आर आई एन एल की गृह पत्रिका 'सुगंध' को 'ग' क्षेत्र कडे अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दि.10 जनवरी, 2017 को नई दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में पत्रिका के संपादक श्री ललन कुमार, सहायक महा प्रबंधक (राजभाषा) को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के माननीय संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसानी एवं माननीय सदस्य डॉ बलिराम भगत, सांसद द्वारा दिया गया।

हिंदी अधिकारियों के साथ गृह मंत्रालय के सचिव की बैठक

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयों का निवारण करने के लिए गृह मंत्रालय के सचिव डॉ. प्रभास कुमार झा की अध्यक्षता एवं संयुक्त सचिव डॉ. विपिन बिहारी की उपस्थिति में हिंदी अधिकारियों की विशेष बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में आर आई एन एल सहित 25 उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सहायक महा प्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग तथा प्रतिवेदन भरने से संबंधित विविध मुद्दों पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया जिसकी काफी प्रशंसा की गई।

तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी कार्यान्वयन दिवस

दि.20 जनवरी, 2017 को तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी कार्यान्वयन दिवस आयोजित किया गया। इस उपलक्ष्य में सहायक महा प्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार द्वारा संबद्ध विभाग के सभी अधिकारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति से संबंधित प्रस्तुतीकरण दिया गया और इसके अंतर्गत उनके विविध दायित्वों के बारे में बताया गया। इसके उपरांत सुंदर लिखावट, सामान्य ज्ञान तथा अनुवाद प्रतियोगताओं के विजेताओं को समापन समारोह में पुरस्कार वितरित किए गए।

कोच्चि शाखा बिक्री कार्यालय को प्रोत्साहन पुरस्कार

वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आर आई एन एल के कोच्चि स्थित शाखा बिक्री कार्यालय को कोच्चि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार दि.31 जनवरी, 2017 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में समिति के अध्यक्ष द्वारा वरिष्ठ शाखा बिक्री प्रबंधक श्री शरत सी गोविंद को प्रदान किया गया।

सुगन्ध

संगीत सरिता

की बोर्ड सीखने की प्रविधि

इस अंक में 'ओके जानू' फिल्म के 'एन्ना सोना रव ने बनाया' गाने का नोटेशन नीचे प्रस्तुत है। यह राग 'दरबारी' पर आधारित गाना है। इस राग के बारे में पहले भी कुछ अंकों में जानकारी दी गयी है। इस राग में 'ग', 'ध' और 'नि' कोमल स्वर एवं 'रे' और 'म' शुद्ध स्वर हैं।

आरोह: सा रे ग, रे सा, म प ध नी सा
अवरोह: सा ध नी प, म प, ग म रे सा
पकड़: सा रे ग, म रे सा, ध नी सा

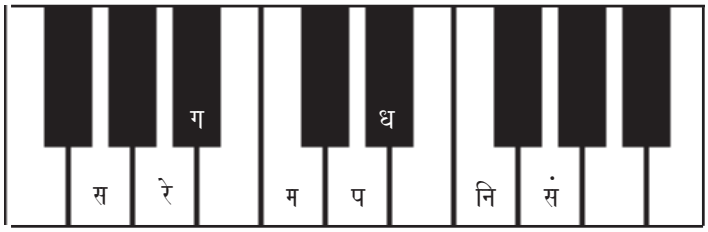

सा प म म प पा पा
एन्ना सोणा क्यूँ
सा प म म प पा पा
एन्ना सोणा क्यूँ
रे स नि़ सा ग रे स
आवां जावां ते मैं
सा प म म प पा म ग रे स
एन्ना सोणा
सा प म म प पा पा
एन्ना सोणा क्यूँ
रे स नि़ स स ग रे
एना सोणा
गा मा प मा
ओ.....
गा म प मा
ओ.....
पा ध नि नि नि नी प
कोल होवे ते
पा ध नि नि नि नी प
कहडी अग्ग नाल
एन्ना सोणा क्यूँ
आवां जावां ते मैं
एन्ना सोणा
पा ध नि नि नि नी प
ताप लग्गे न
पा ध नि नि नि नी प
किन्ने दरदा नाल
एन्ना सोणा क्यूँ
आवां जावां ते मैं
एन्ना सोणा

म पा नी ध प म म पा प
रव ने बनाया
म पा नी ध प म म पा म ग रे
रव ने बनाया
सा रे स नि़ नि़ स स रे रे
यारा नु मनावां
सा रे ग म ग म ग म पा
एन्ना सोणा
म पा नी ध प म म पा म ग रे
रव ने बनाया
रे स नि़ स स ग रे
एन्ना सोणा
गा मा प मा
ओ...
गा नी ध प
ओ...
नि सं नि नि सं सं सं
सेख लगदा ऐ
नि सं नी नि सं सं सं नि
रव ने बनाया
रव ने बनाया
यारा नु मनावां
एन्ना सोणा
नि सं नि नि स स स
तद्दी चांदनी दा
नि सं नी नि स स स नि
रव ने बनाया
रव ने बनाया
यारा नु मनावां
एन्ना सोणा

सा प म म प पा पा
एन्ना सोणा क्यूँ
सा प म म प पा पा
एन्ना सोणा क्यूँ
रे स नि़ सा गा रे स
आवां जावां ते मैं
पा मा पा प ध नी धा पा ध प मा पा गा म पा
एन्ना सोणा ओ...
रे स नि सं रे रे ग रे
एन्ना सोणा
गा गा म प प ध प म
ओ...
ग रे गा मा ग रे ग
ओ...
पा ध नि नि नि नी ध
दूर जावे ते
नि सं नी ध प म मा
रव ने बनाया
एन्ना सोणा क्यूँ
आवां जावां ते मैं
एन्ना सोणा
सं नि नि नि नि नी ध
सारी रत्ती मैं
नि सं नि ध प म मा
रव ने बनाया
एन्ना सोणा क्यूँ
आवां जावां ते मैं
एन्ना सोणा

म पा म ग रे स स मा ग रे रे
रव ने बनाया
म पा म ग रे स स मा ग रे रे
रव ने बनाया
स रे ग म रे ग स रे रे
यारा नु मनावां
रे स नि़ स स रे स
एन्ना सोणा
नि धा प म ग ग प
दिल जलदा ऐ
प धा प म ग रे रे ग
रव ने बनाया
रव ने बनाया
यारा नु मनावां
ओ...
नि धा प म ग ग प
ओस छिड़कावा
प धा प म ग रे रे ग
रव ने बनाया
रव ने बनाया
यारा नु मनावां
ओ...

इस गाने के राग व स्वरों की जानकारी सी आर जी (रीफ़ैक्टरी) के सहायक महाप्रबंधक श्री रविदास एस गोने और नोटेशन विज्ञान इंजीनियरिंग कालेज की छात्रा सुश्री वी नंदिता ने दिया है।

लेख

उड़त अबीर गुलाल, अवनी अंबर छायी

- श्री रामभवन सिंह ठाकुर 'विद्यावाचस्पति' -

रंगों का त्यौहार होली समस्त त्यौहारों का शिरोमणि है। यह हर्षोल्लास, उमंग, उत्साह, एकता, प्रेम और मेल-मिलाप का अनुपम उपहार लेकर आता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाये जाने वाला यह त्यौहार भारत में ही नहीं, वरन् विदेशों में भी बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है, भले ही इसका नाम और मनाये जाने का तरीका भिन्न भिन्न हो, परंतु उन सब में होली की छटा दृष्टिगोचर होती है।

आनंद एवं उल्लास की अनुपम छटा बिखेरते इस अनूठे, चमत्कारी पर्व पर सभी प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देते हैं। चारों ओर रंग, अबीर, गुलाल की फुहार उड़ती दिखाई देती है। अजीब विकृत स्वांग बनाते, एक दूसरे को विनोदमय उपाधियों से विभूषित कर 'बुरा न मानो होली है' कि अलख जगाते हुए उनके विशिष्ट गुणों-अवगुणों को उजागर कर सुधार का संदेश देते हैं। आपस में हँसी-मजाक करते, नाचते-गाते मस्ती भरे फागुन गीतों का आनंद लेते, अंग-अनंग रंग-तरंग में मस्त झूमते हुए दिखाई देते हैं एवं समवेत स्वर गूँज उठता है।

'रंग बरसे, भीगे चुनर वाली, रंग बरसे।'

ऋतु चक्रानुसार फाल्गुन पूर्णिमा को ऋतुराज बसंत अपने पूर्ण यौवन के सबाब पर आ जाता है, जिससे संपूर्ण सृष्टि में उन्मादी माधुर्य छा जाता है। प्रकृति की मन मोहकता को देखकर वसुंधरा अपनी छटा लेकर खिल उठती है, उसका रोम-रोम आनंदातिरेक की सिहरन से भर उठता है एवं फलों में भी गुणवृद्धि हो जाती है। इसी से होली पर्व को 'फाल्गुनी' भी कहते हैं। प्रकृति मानव की सदैव चिरसहचरी रही है। वह हमारे सुख-दु:ख की सहभागिनी है। प्रकृति की यह प्रवृत्ति मानव मनोभावों को उद्दीप्त करती है।

'किसलय वसना, नव वय लतिका।
मिली मधुर प्रिय उर, तरु-पतिका।।"

- निराला

प्रकृति जब भीनी-भीनी सुगंध एवं माधुर्य से गदरा उठती है और उसके सौंदर्य की मादकता, उस अपूर्व माधुर्य भार को संभाल नहीं पाती है, तो कली-कली में बसंत किलकारी मारने लगता है। सौरभ भार से अवनत वायु मानव-हृदय को भी मादकता से भर देती है, तब मानव अपने उन्मादी मनोभावों को हास्य-विनोद, चुटकुलों में अभिव्यक्त करते हुए हँसने-हँसाने का माहौल बना लेता है और इन्द्रधनुषी रंगों की अनुपम छटा बिखेरता हुआ आनंदाभिव्यक्ति के साथ रंगों का पर्व होली मनाता है।

'सह न सकी भार धरा, मधुसास के यौवन का।
सौरभ सुगंध बिखेरता, बीता मास फागुन का।।
आया त्योहार उल्लास, उमंग प्रेम-मिलाप का।
उड़त रंग, अबीर, गुलाल, आया मौसम रंगों का।।'

एक अन्य किंवदंति के अनुसार यह पर्व शिव वरदानी ढूँढ़सा नामक राक्षसी से भी जुड़ा है, जो भयानक रूप धरकर गाँव में आती, बच्चों को डराती तथा उठाकर ले जाती थी, जिससे तंग आकर उस भयावह राक्षसी को भगाने के लिए बालकों ने एकजुट होकर रंग-बिरंगे अद्‌भुत डरावने स्वांग बनाये और उस राक्षसी से मुक्ति पाने में सफलता हासिल की। कहते हैं कि तभी से एक-दूसरे पर रंग-रोगन, कीचड़, गोबर आदि डालने, स्वांग बनाने, चिढ़ाने, खुशी से उछलने-नचाने एवं मौज-मस्ती की प्रथा चली आ रही है।

आमोद-प्रमोद, रंग-तरंग उमंग भरे इस त्योहार में बाल, वृद्ध, नर-नारी सभी सप्त रंगी रंगों में सराबोर हो बसंती बयार के संग मस्ती में झूमने लगते हैं। उन्मादी मन मचलने लगता है, गीतों के मधुर स्वर गूँजते हैं, तो पैर अपने आप थिरकने लगते हैं। रंग-बिरंगे, अनोखे स्वांग में मतवाले, बिन सुर ताल ही भंग-तरंग सुरा संग मदमस्त हो झूम उठते हैं। ऐसे अनूठे माहौल में बूढ़े भी जवान नजर आते हैं। संपूर्ण वातावरण रंगीन हो उठता है, इसी से इसे मदनोत्सव भी कहा जाता है।

'जहाँ तहाँ जनु उमगत अनुरागा।
देखि मुएहुँ मन मनसिज जागा।।'

- तुलसी

उन्मादी मन का उन्माद गुबार निकालने एवं जीवन की एकरसता से मुक्ति पाने, हँसने-हँसाने के लिए मूर्ख सम्मेलन, हास्य कवि सम्मेलन अपने आप में अनूठे आयोजन हैं। रंग पंचमी तक हर जगह यह माहौल चरमोत्कर्ष पर रहता है। हास्य जीवन का रस है। कड़वाहट के आँसू से जब मन खारा हो जाता है, तब वह मुस्कान की मधुरिमा से उसे मीठा कर लेता है, हंसना सफल, अनूठी खोज है।

जीवन संघर्ष के गर्दोगुबार से हमारी मुस्कान मैली न होने पावे, इसलिए सभी सहृदय जी भरकर होली खेलते हैं, एक-दूसरे से गले मिलते हैं। ईसुरी की फाग और बरसाने की होली तो जग जाहिर है, जो मन को गुदगुदाये बिना नहीं रहती है। कृष्ण कन्हैया ने राधा और गोपियों के संग जो होली खेली है, उसे स्मरण कर एवं गा-गाकर आज भी मन उमंगित व प्रफुल्लित हो उठता है। कान्हा के ब्रज की होली को देखकर तो देवता भी मुग्ध हो जाते थे।

'होली खेलत कान्हा देवन मन भायी।
उड़ता अबीर गुलाल अवनी अंबर छायी।।'

आइए, हम सभी इस खुशनुमा मौसम में रंगों और उमंगों से भरपूर इस होली के त्योहार को हँसी-खुशी से, बिना किसी भेदभाव के उत्साहपूर्वक मनायें। यह त्योहार दैत्यराज हिरण्यकश्यप की बहन होलिका एवं भक्त प्रहलाद की पौराणिक गाथा से भी जुड़ा हुआ है, जो नास्तिकता पर आस्तिकता, पाप पर पुण्य एवं दुराचरण पर सदाचरण, धर्माचरण की विजय का प्रतीक है।

अत: हम सभी समस्त बुराइयों तथा अंदर-बाहर की गंदगी को जलाकर भाई-चारे की सद्भावना को प्रबल करें। ज्ञान-गुलाल लगायें एवं चरित्र-रंग की वर्षाकर सबको नैतिकता का अक्षत चंदन रोरी लगाकर गले मिलें, जिससे नफरत, ईर्ष्या, द्वेष, अभद्रता, अनैतिकता भस्म हो जाये एवं खिलखिलाती उल्लास- उमंग-प्यार भरी होली अपनी गुलाबी छटा बिखेरती रहे तथा समस्याओं, उलझनों, सांप्रदायिक संकीर्णता में फँसी जिंदगी में एक नई बहार संचरित हो सके।

होली जैसे हंसी खुशी के त्योहार में सुरा पान या कोई भी नशा कर रंग खेलना, गाली-गलोच करना, घरों पर गंदगी, पत्थर आदि फेंकना, झगड़ना, अश्लील, फूहड़, भौंडी, अशिष्ट हरकतें करना, कीचड़ उछालना, गोबर, तेजाब आदि डालना अशोभनीय एवं अनुचित तथा रंग में भंग करने जैसे कृत्य हैं। हमें शालीनता पूर्वक बिना किसी भेदभाव के मिल-जुलकर निश्छल, सच्चे, खुले दिल से यह पर्व मनाना चाहिए। तभी इस मस्ती भरे, रंगों के त्योहार का प्रमुख उद्देश्य पूर्ण होगा। भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीयता सुदृढ़ तथा शक्तिशाली बनी रहेगी एवं मानवता का सुखद संदेश देती रहेगी।

'प्रेम प्रगति के रंग में,
रंगे सब किसन करीम।
बचा ना कोई अंग
कोई रंग बचे ना राम रहीम।।
रंगे ना रंगे चाल कुचाली, रंगी न रंगी चुनर चोली।
रंगा तन मन सब, जब दिल ने दिल से खेली होली।।'

- 'रामाश्रम'
महाराज बाग, भैरवगंज
सिवनी-480661, मध्यप्रदेश
मोबाइल: +91 9407072626

मजबूर

- श्री एस के मिश्रा -

मई की चिलचिलाती धूप में कालोनी के गेट के बाहर सड़क किनारे हुड लगाकर धूप और गर्मी से बचने का प्रयत्न करते हुए एक बूढ़ा रिक्शा वाला सुस्ता रहा था। कालोनी से दो अधेड़ थुलथुल महिलाएँ बाहर आयीं और रिक्शे वालेसे 'नवरंग' टाकीज चलने को कहा।

'बीस रुपये लगेंगे', रिक्शा वाला बोला।

'यह तो बहुत ज्यादा है।'

'मैमसाब, आप देख रही हैं कितनी तेज धूप और लू चल रही है, गला सूख कर आँखों पर अंधेरा छा जाता है। हाड़-तोड़ मेहनत के बाद भी हम रिक्शे वालों को इतना नहीं मिलता कि हम अपने परिवार को दोजून रोटी खिला सकें।'

'ठीक है, हमारी मजबूरी का फायदा उठा लो, लेकिन तेज दौड़ाना होगा। सिर्फ 20 मिनट बचे हैं पिक्चर शुरू होने में।'

समय पर पिक्चर हाल पहुँचकर ये महिलाएँ 20-20 रुपये की कोल्ड ड्रिंक से अपनी थकान और गर्मी उतार रही थीं और रिक्शा वाला पास में मुनिसिपालिटी के नल से टपकती गर्म बूँदों से गला ठंडा कर रहा था, क्योंकि अपनी बीमार बच्ची के लिए एक-एक रुपया बचाना उसकी अपनी मजबूरी थी।

- हाऊस पी-30, गोल्फ लिंक कालोनी
कनडिया रोड, कनडिया
इंदौर-452016

मूल्यांकन

- श्री दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' -

मन में अजीब-सी हिचक और ऊहापोह थी। मैं गुरु बाबा के आश्रम की तरफ साइकिल घसीटता बढ़ तो रहा था, किंतु अनमना सा! घर से तीन-चार सौ मीटर पर चकरोड, फिर पाँच किलोमीटर 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' से बनी चिकनी समतल राह..., आगे दो किलोमीटर ऊबड़-खाबड़ खड़ंजा...। यह पूरा रास्ता मैंने गहरे मानसिक द्वंद्व के बीच तय किया। अब मैं नदी की तरफ धूल भरी पगडंडी पर चल रहा था। रेत तो करीब आधा किलोमीटर पहले ही आ गयी थी, अब चढ़ाई भी शुरु हो गयी थी। मैं साइकिल से उतर गया। सिर उठाकर आसमान की तरफ देखा, मध्य अक्टूबर की साफ सुथरी दोपहरी ढलने वाली थी। रेतीली राह के बीच से साइकिल ढकेलता मैं नदी के टीले पर चढ़ आया, यहाँ नदी पार गुरु बाबा के आश्रम वाले मंदिर के हवन कुंड से उठती मिठास भरी सोंधी गमक छिटकी थी।

मैंने ऊँचाई पर खड़े-खड़े एक सरसरी निगाह पीछे छूटी झाड़-झंखाडों से भरी पगडंडी पर डाली। दो-तीन लोग इस तरफ आते दिखे। दीनू अभी काफी पीछे होगा। उसकी साइकिल के कैरियर और फ्रेम के बीच चढ़ावे की सामग्री की बोरी है, लिहाजा साइकिल घसीटता पैदल आ रहा है। दादी ने जैसा बताया था, टीले पर पचास कदम आगे खूब बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा था। मैं रास्ते के बगल आम के एक पेड़ से साइकिल टिकाकर बरगद की तरफ बढ़ने लगा। तभी नदी के किनारे से आवाज आई 'ए लरिका बाबू...।'

मैंने देखा नीचे सवारियों से भरी नाव खुलने वाली थी। घटवार मुझे भी इसी खेव में पार होने के लिए बुला रहा था। इधर किशोर वय के बच्चों को सम्मानपूर्वक संबोधित करने के लिए 'लरिका बाबू' कहने का रिवाज है। मैंने हाथ के इशारे से उसको मना किया और बरगद की ओर बढ़ने लगा...। दादी ने सच ही कहा था कि आधी दूरी तय करते-करते भव्य मंदिर का लंबा-चौड़ा परिसर और वहाँ की गहमा-गहमी दिखने लगी थी। बरगद की जड़ें, जो मिट्टी से ऊपर की तरफ उभरी थीं, उन पर खड़े होकर देखने से परिसर से लगे बाग का बड़ा हिस्सा, कोठारी महाराज की गद्दी और गोदाम निगाह के सामने आ गए।

बाग में चार-पाँच लग्जरी गाडियाँ खड़ी थीं। एक महिंद्रा पिकअप जैसी गाड़ी गोदाम के सामने से आगे बढ़ गयी। संभवत: यह किसी यजमान का आश्रम के लिए चढ़ावा लेकर आई रही होगी। इसी समय एक नई-सी मार्शल मंदिर के सामने रुकी। दो भारी-भरकम व्यक्ति आगे से उतर कर मंदिर के परिसर में चले गये। करीब पाँच मिनट बाद उनमें से एक आदमी दो स्वयंसेवकों के साथ बाहर आया और गाड़ी के पिछले व बीच के हिस्से से सामान निकलवाकर कोठारी की गद्दी के सामने रखवाने लगा। तीन बड़े पीपे तो घी के ही थे। बाकी ठसाठस भरी बोरियाँ छ: या सात रही होंगी। निश्चय ही इसमें मैदा, चावल और शक्कर आदि होगा। मेरे मन में आया, यह गुरु बाबा को दक्षिणा भी पाँच-सात हजार से कम क्या देंगे? इसके साथ ही मेरे जेब में दादी के दिये दक्षिणा के दो सौ इक्यावन रुपये चुभन सी पैदा करने लगे।

इस बीच दो बोलेरो और एक चमचमाती सफारी भी मंदिर के सामने आ लगी थीं। इन गाड़ियों से भी सामान उतारने का सिलसिला शुरु हुआ। मेरा मन बैठने लगा। अभी सामने दादी होती तो मैं कहता, 'देखो दादी, यह है भक्ति और आस्था का तूफान! लोग चमचमाती गाड़ियों पर चढ़ावा लादकर भागे चले आ रहे हैं।'

'गोमती मैया की जय...।' जयकारा के समवेत स्वर से मेरी विचार श्रृंखला भंग हो गयी। मैंने देखा, नाव बीच धारा में पहुँच गयी थी और रिवाज के अनुसार घटवार के साथ लोग जयकारा लगा रहे थे।

मैं बरगद की जड़ पर बैठ गया और मंदिर की तरफ देखने लगा। थोड़ी देर में नाव अगली घाट पर पहुँच गई। सवारियाँ अपनी राह लग गईं और घटवार नाव बाँधकर ऊपर मंदिर के पीछे बस्ती की तरफ निकल लिया। कुछ समय बीता होगा, टीले पर चढ़कर तीन मजदूर जैसे लोग मेरे पास आ रुके। एक ने लाल अंगौछा चेहरे पर फेरते हुए पूछा, 'कितना समय हुआ खेवा लगे?'

'यही कोई बीस-पच्चीस मिनट हुआ होगा। घटवार बस्ती की तरफ गया है', मैंने बताया। 'हूँ' दूसरे ने सोचते हुए कहना शुरु किया। 'अब वह करीब घंटे भर घर का काम निपटाएगा। जैसे ही घाट पर बारह-पंद्रह लोगों को देखेगा, नाव खोलने आ जाएगा...।' फिर तीनों ने बीड़ियाँ सुलगा लीं और आराम से बैठकर निजी बातों में व्यस्त हो गए। मेरा ध्यान पुन: मंदिर परिसर में जा टिका। अभी-अभी एक ट्रक आया था और उससे उतरकर सात-आठ लोग कोठारी महाराज की गद्दी के सामने जमा हो गए थे। मुझे लगा यह मेरे गाँव जैसे किसी खूब आबाद गाँव का सामूहिक चढ़ावा होगा। दो दिन बाद मेरे यहाँ से भी दो-दो ट्रैक्टर आने वाले हैं। हफ्ते भर पहले मैं वैसे ही लंबरदार

के टोले की तरफ जा निकला था। वहाँ कुछ लोगों का जमावड़ा देखकर रुक गया। लम्बरदार साहब, यानि दीपनारायण सिंह कह रहे थे, 'आप लोग पूरे गाँव में खबर फैला दीजिए कि मेरा और राजशेखर का ट्रैक्टर बाबा जी के आश्रम का चढ़ावा लेकर जाएगा। जो गद्दी तक माथा टेकने जाना चाहते हैं वे भी चलें। बाकी सबके सामान की लिस्ट होगी। सैकड़ों गाँव से चढ़ावा जाता है, हमारे गाँव की किरकिरी नहीं होनी चाहिए। इसलिए सब दिल खोलकर...।'

मैं सभा से सीधे घर आया था। इन दिनों दादी गुरु बाबा के आश्रम के तिसाला चढ़ावा को लेकर परेशान थी। दो रोज पहले कह रही थी, 'इस बार तुम दीनू को लेकर आसरम का चढ़ावा पहुँचा आओ। पिछली बार तुम्हारे बाबू के न रहने की वजह से कुछ नहीं जा पाया था।' मैं दादी को खोजता, पिछवाड़े हाते की तरफ निकल गया। वहाँ वह तुलसी चौरा लीप रही थीं। मैंने जल्दी-जल्दी सारी बातें बता दी, 'दादी, क्या जरूरत है हमारे जाने की? हमारा चढ़ावा और दक्षिणा वैसे ही पहुँच जायेगा।' दादी ने मेरे उत्साह पर पानी फेरते हुए कहा, 'नहीं बेटा किसी का पिछलग्गू होना गलत है। भीड़ में सिर्फ अगुए की पहचान बनती है और किसी की नहीं। भले ही तुम्हारी उमर कम है, लेकिन मर्द हो... तुम्हें सभी जगह जाना चाहिए। लोग जानेंगे कि तुम इस गाँव के फलाने सिंह के नाती हो तो ऐसा नहीं कि इज्जत के लाले पड़ेंगे।' दादी को मैं कैसे समझाता कि फलाने यानि कर्मराज सिंह की कभी तूती बोलती रही होगी, मगर अब... खासकर बाबूजी की मृत्यु के बाद हम किस खेत की मूली रह गए हैं, इसका कोई हिसाब नहीं। अभी डेढ़ साल गुजरा होगा, गुरु बाबा हमारे यहाँ आये थे। मुझे नहीं लगता कि उनकी बड़ी-बड़ी चमकती आँखों से हमारी फटेहाली छिप पाई होगी। उस दिन अजीब शर्मनाक स्थिति बन गई थी। तीन दिन से मिट्टी का तेल समाप्त था और कई घरों में माँगने पर भी उस रोज नहीं मिला। बैठक में बाबा जी का आसन लगा था, वहाँ उजाला कैसे होता?

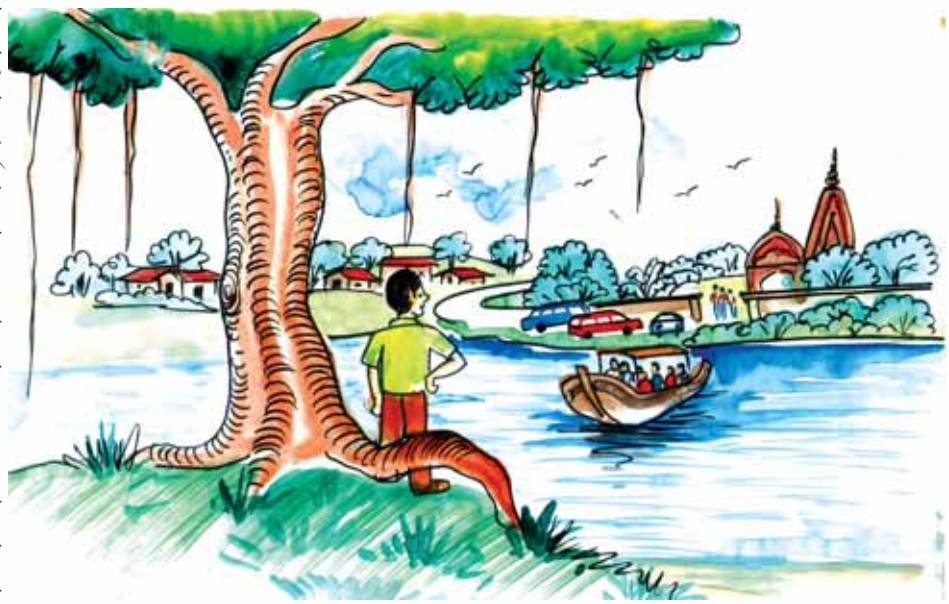

दादी की अक्ल की दाद देनी पड़ेगी। उन्होंने गाय के घी के दीपक बनाये और बैठक के हर ताखे में रख दिया। मुझे पक्की हिदायत थी कि जैसे ही कोई दीपक धीमा पड़ने लगे, उसकी रुई की बत्ती आगे कर दूँ। मैंने इसका बखूबी पालन किया। करीब नौ बजे तक तो गाँव के लोग बाबा से मिलने आते ही रहे। बाबा जी स्वपाकी हैं। बैठक में ही चौका लगाकर उन्होंने अपना भोजन तैयार कर लिया था। साढ़े दस बजे के बाद वे सोने के लिए तख्त पर लेटे। इस बीच दीपक नहीं बुझ पाये, पूरे समय बैठक में उजाला बना रहा। मगर एक आशंका भरी धुकधुकी बराबर लगी रही, अगर कहीं हवा का तेज झोंका आ गया तो...? किसी तरह से राम-राम करते इज्जत बची थी।

अब आज... दादी में गजब की उमंग थी। उन्होंने पच्चीस किलो मैदा, पाँच किलो घी, दस-दस किलो आलू और महीन चावल, सात किलो शक्कर वगैरह की व्यवस्था के साथ पता नहीं कैसे दक्षिणा के पैसे का जुगाड़ बना लिया था। दीनू को सारा सामान बँधवाकर उन्होंने मुझे चेताया था, 'यह सब कोठारी महाराज की गद्दी पर जमा करना, वह रुक्का देंगे, तू उसी रुक्के के साथ दक्षिणा रखकर गुरु बाबा के चरण छू लेना।'

मैंने अनमने भाव से हामी भर ली। मेरे पास और कोई रास्ता भी न था। अभी कल ही मैंने माँ को समझाने का प्रयास किया था 'अम्मा! गाँव वालों के साथ अपना चढ़ावा भेजने का फायदा यह होगा कि हम बेइज्जती से बच जायेंगे। बेइज्जती का मतलब ऐसा कुछ नहीं कि कोई गाली दे दे, दुत्कारे या हाथ उठाये। हल्की नजर से देखा जाना भी अपमान ही होता है। आज के चमक दमक वाले जमाने में हमारे जैसे साइकिल पर गठरी ढोने वालों की क्या औकात होगी?' 'बेटा, यह दादी के मन की मौज है, वे किसी की नहीं सुनेंगी। पका हुआ आम हुई हैं, जाने कब टपक पड़ें, कोई ठिकाना नहीं। जैसे कहती हैं, कर डालो, नहीं तो बाद में सोचने को हो जायेगा। तुम्हारी बात गलत नहीं है, लेकिन जैसे सब कहीं तौहीन हो रही है, एक जगह और सही', माँ ने समझाया।

मैं भारी मन से सुबह निकला था। इस बीच उधर वाले घाट पर काफी सवारियाँ आ गई थीं। इस तरफ भी बारह-तेरह एकत्र हो गये थे। इधर एक व्यक्ति के पास मोबाइल था। वह अपने साथियों को मोबाइल बजाकर गाना सुना रहा था। अभी शीला की जवानी का गाना शुरु था। ज्यादातर लोगों का ध्यान उधर ही था। मैं दीनू की खोज खबर लेने रास्ते के सामने वाले टीले पर आ गया। थका सा दीनू भी साइकिल घसीटता हुआ दिखाई पड़ा। मैं नीचे चला गया और दीनू की साइकिल ठेलवाकर टीले पर चढ़वाया, फिर हम नदी के किनारे आ गये।

बीस पच्चीस मिनट बाद नाव किनारे आ लगी। आने वाली सवारियाँ अपनी राह चली गईं। हम नाव पर चढ़ गए। अपनी साइकिल मैंने घटवार की इस तरफ की मड़ई में ताला मार के छोड़ दिया था। घटवार ने नाव खोलकर खेते हुए दीनू की साइकिल की गठरियों पर निगाह जमाकर पूछा, 'बाबू, ई आसरम का चढ़ावा है का?' दीनू ने जवाब दिया, 'हाँ चढ़ावा ही है।' मेरी जगह दीनू ने जवाब दिया।

'बूँद-बूँद से सागर भरता है। बाकी गुरु महाराज का ऐसा परताप है कि जजमान गाड़ी-मोटर में लाद के चढ़ावा ला रहे हैं। इस बार के भंडारे में सवा लाख भगत प्रसाद पायेंगे...।' घटवार गुरु बाबा के गुणगान में क्या-क्या कहता गया, इस पर मैंने कान नहीं दिया। हाँ, यह बात पूरी शिद्दत से मुझे कचोटने लगी कि हम एक बड़ी जगह जा रहे हैं, अपने छोटेपन के साथ। जब चढ़ावा घटवार की निगाह में हल्का है, तो कोठारी क्या सोचेगा? गुरु बाबा की निगाह में हमारी क्या कीमत होगी?

नाव धीमी गति से आगे बढ़ रही थी। मेरे मन में ऊहापोह मची थी, जबकि सवारियों के बीच गुरु बाबा के गुणगान की होड़ लगी थी। यहाँ तक कि दीनू भी चर्चा में शामिल हो गया था। अभी-अभी उसने बीड़ी सुलगाई थी और एक टान लगा के मुँह से धुँआ उगलते हुए तुक्का जड़ा था, 'अब उन्हीं सब महापुरुषों का पुन्न-परताप है, जो इस घनघोर कलजुग में धरती माता टिकी हैं, नाहीं तो कब की गच्च से रसातल में समा गई होती।'

नाव के ज्यादातर लोग उससे सहमत थे। किनारे की तरफ बैठा मोबाइल वाला और उसके साथी खिल्ली उड़ाने के अंदाज में एक-दूसरे को देखकर मुस्कराये थे। मैं चुपचाप सब देख और सुन रहा था। मुझे लगा, मुस्कुराने वाले ऐसे शख्स हैं, जो गुरुओं, बाबाओं और आश्रमों के सारी क्रियाकलापों को व्यावसायिक वृत्ति और जनसामान्य के बीच अपना दबदबा बनाए रखने के हथकंडे के रूप में देखते हैं। मेरे ही गाँव में इस प्रवृत्ति के काफी लोग होंगे।

नाव मँझधार में पहुँची तो घटवार के साथ सबने 'गोमती मैय्या' का जयकारा लगाया। इसके बाद मैं इस आकलन में व्यस्त हो गया कि आखिर हर तीसरे साल कितना चढ़ावा आ जाता होगा, जिससे गुरु बाबा आगे दो साल तक रामलीला, प्रवचन, दुर्गापूजा और चालीस विद्यार्थियों वाले नि:शुल्क संस्कृत पाठशाला का संचालन करते हैं? इस गुणा-भाग के बीच मुझे नहीं लग रहा था कि इसमें लूटने-खाने जैसी कोई बात है। तभी एक धक्के के साथ नाव घाट पर लग गई थी। मैं दीनू की साइकिल ठेलवाता हुआ कोठारी महाराज की चौकी के सामने आया। पीले से चेहरे वाला चंदनधारी कोठारी मोबाइल पर बड़े गंभीर अंदाज में किसी से काफी अदब के साथ वार्ता में मशगूल था। करीब पाँच मिनट बाद बात समाप्त हुई तो उसने एक सरसरी निगाह साइकिल पर लदी बोरियों पर डाली, फिर एकदम शांत भाव से सामने से गुजरते स्वयंसेवक को आवाज दी, 'ये सुनना जरा... यह चढ़ावा रखवा लो।'

दीनू गोदाम की तरफ चला गया। कोठारी ने यंत्रवत मेरा नाम, पिता और बाबा का नाम, गाँव, सामानों की मात्रा वगैरह लिखकर रुक्का बनाया और मुझे पकड़ा दिया। कोठारी के सपाट व्यवहार से मेरा हौसला कुछ बढ़ गया। मैंने रुक्के के साथ दक्षिणा के पैसे लपेट दिए, फिर पूछते हुए मंदिर के बगल वाले हाल में आया। यहीं गुरु बाबा का दरबार लगा था। हाल में दायें-बायें पच्चीस-तीस लोग बैठे थे। उनका लिबास, चेन, अँगूठियाँ, चेहरे पर आभिजात्य भरा दर्प सब कुछ उनके विशिष्ट होने की गवाही दे रहा था। हाल के बीच से बाबा जी की गद्दी तक एक हरी पट्टी बिछी थी। मैं कुछ हिचकता सा बाबाजी के आसन के पास पहुँचा, प्रणाम की मुद्रा में हाथ उठाया और गुरु बाबा के पैरों के पास रुक्का रखकर तख्त के सामने मत्था टेक दिया... और जब सिर उठाया तो हाथ में रुक्का लिए गुरु जी को अपनी तरफ देखते पाया। पहले जो सोचा था, उसके हिसाब से अब मुझे पुन: प्रणाम करके बाहर हो लेना था। किंतु अप्रत्याशित रूप से उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर वहीं गद्दी के पास बैठा लिया और घर-परिवार की हाल खबर लेने लगे।

संभवत: इससे वहाँ बैठे यजमानों की आँखों में जिज्ञासा का भाव पैदा हुआ होगा, जिसे भांपकर बाबा जी ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए मेरा परिचय दिया। मेरे बाबा जी और गाँव के विषय में बताते हुए कहा, 'यह लड़का हमारे उस यजमान का नाती है, जहाँ मेरे पहुँचने पर आज भी घी के दीपक जलाये जाते हैं।' ...और इसके साथ ही जो एक झिझक और हीनता बोध का अंधेरा मेरे अंदर समाया था, वह एकदम झकाझक उजाले में बदल गया।

- डाकघर: जासापारा
गोसाईगंज-228119
सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9450143544, 7379100261

व्यंग्य

मूर्धन्य साहित्यकार

- श्री पूरन सरमा -

एक बार एक मूर्धन्य साहित्यकार के पास एक प्रकाशक गया और बोला - 'प्रभो, साहित्य की पिछले चालीस वर्षों से सेवा-साधना करते रहे हैं, कोई पांडुलिपि तैयार हो तो मुझे दीजिए, अब मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ।' मूर्धन्य साहित्यकार कुशल खिलाड़ी की तरह पूछ बैठे - 'रायल्टी क्या दोगे?'

प्रकाशक ने कहा - 'साहित्यकार जी! बिकने वाले लेखकों की मेरे पास कमी नहीं है। मैं तो आपकी उम्र का लिहाज करके आया हूँ कि आप लंबे अर्से से लिख-पढ़ रहे हैं। पके हुए फल हैं, अच्छा है, गिरने से पहले कोई छपी पुस्तक देख जायें, वैसे रायल्टी आपको दस प्रतिशत दे दूँगा, पुस्तक बिकी तो।'

मूर्धन्य साहित्यकार ने कहा, 'लेखकों के पोषक! मैं बीस प्रतिशत लिया करता हूँ। छापे तो छाप वरना अपना रास्ता नाप।' उन्होंने ऐसा कहा जैसे उनकी अनेक पुस्तकें पहले प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रकाशक समझदार था, वाकई रास्ता नापता चला गया। इस घटना की जब मुझे जानकारी हुई तो मैं लपककर मूर्धन्य साहित्यकार के पास पहुँचा। उस समय वे किसी रचना को फेयर रूप में मोती जैसे अक्षरों में लिख रहे थे। मैंने छूटते ही कहा, 'सुना है आपने कोई पांडुलिपि तैयार कर ली है?'

'छब्बीस तैयार है, यह सत्ताइसवीं तैयार कर रहा हूँ। संशोधन कर लें और याद रखें कि मेरे पास मात्र एक ही पांडुलिपि नहीं है', मूर्धन्य ने कहा। मुझे बड़ा अचरज हुआ। अत: बोला, 'गजब, यह सब कब कर लिया आपने?'

'पूरा जीवन लगा दिया बेटे। साहित्य की घास खोदते-खोदते पूरे बाल सिर से नाता तोड़ चुके हैं तथा दिमाग सठिया गया है। मुन्नू आप लोग क्या लिखोगे, जो हम लिख चुके हैं?' उन्होंने स्पष्टता से कहा। मैंने कहा, 'लेख तो आप पर अब भी लिखने की इच्छा हो रही है। अप्रकाशित रहने में रिकार्ड जो कायम किया है। साठ वर्ष होने के बाद भी एक रचना कहीं नहीं छपवाई है। आप भी इसी आधार पर विचित्र, किंतु सत्य हैं।'

मूर्धन्य साहित्यकार ने तीन इंच के बाद कहा, 'वाकई मुन्नू, तुम भी ज्ञानवान हो। अब तो मुझे और मेरे साहित्य को तुम्हें ही संभालना होगा। मुझे तुममें टैलेंट की प्रखर किरण दिखाई दी है। इसलिए मेरे साहित्य की जो पहचान तुम करा सकते हो, दूसरा कोई नहीं करा सकता। इस शहर में सारे साहित्यकार बेवकूफ हैं, तुम्हें और मुझे देखकर जलते हैं। लेकिन चिंता की बात नहीं है। एक दिन ये सब हमसे क्षमायाचना करेंगे। उस समय हम इन्हें किसी कीमत पर माफ नहीं करेंगे। ये माफी देने लायक हैं नहीं, बहुत तकलीफें दी हैं इन्होंने हम दोनों को', मूर्धन्य साहित्यकार ने कहा।

मैंने दलील दी, 'ऐसी कोई बात नहीं है। मेरा किसी से कोई वैरभाव नहीं है। लिखता-पढ़ता और छापता हूँ, मुझे किसी से व्यर्थ की बातें करने का वक्त ही नहीं है।' 'देखो, वैरभाव नहीं है तो बनाओ किसी से वैरभाव। साहित्यकारों को परस्पर पूर्वाग्रहों से ग्रसित तनाव रखना चाहिए। इससे उसकी गंभीरता का पता चलता है तथा उसे प्रसिद्धि मिलती है।'

'मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैंने तमाम साहित्यकारों से रुपये उधार ले रखे हैं। ऐसा करूँगा तो आगे कोई उधार नहीं देंगे।' 'घबराओ नहीं, उधार तो यहाँ सब कुछ मिलता है। परंतु पहले मेरे साहित्य से कुछ शोध तो करो तथा पाठकों को बताओ कि मूर्धन्य साहित्यकार किस तरह अनवरत साहित्य साधना में लीन साहित्य को गहराई तक खोदे जा रहा है।'

'इस समय मैं आपका साहित्य खोद नहीं सकता, क्योंकि दूधवाला तथा परचूनीवाला मेरी कब्र खोदने को तैयार बैठा है। पहले आप यह व्यवस्था करें तो आपके साहित्य की बारूद पर हाथ लगाने का दुस्साहस कर सकता हूँ।' यह तो बताइए कि आपका साहित्य रखा कहाँ है', मैंने पूछा।

'मैं जिस पलंग पर बैठा हूँ, उसी के नीचे बिखरा पड़ा है।' मैंने कहा, 'गजब, अब पता चला यह दुनिया ही नहीं। आप तो बारूद की ढेर पर बैठे हैं। इसे खपा दीजिए, वरना इसकी गैस से किसी की भी खैर नहीं।' मूर्धन्य साहित्यकार ने पैंतरा बदला, 'खैर तो तुम्हारी भी नहीं, यदि मैंने पाँच सौ रुपये की राहत तत्काल नहीं दी तो। भला इसी में है मुन्नू, पलंग के नीचे घुसकर इस कबाड़खाने में दो-चार घंटे को डूब जाओ।'

मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सा रह गया। इधर कुआँ तो उधर खाई। मूर्धन्य साहित्यकार अत्यंत निम्नकोटि का था। अलमारी से नोट निकालकर गिनने लगा तथा सौ के पाँच नोट निकालकर मुझे थमाते हुए कहा, 'पहले मानसिक रूप से स्वस्थ हो जाओ। तभी तुम अच्छा लिख सकोगे।' मैं वहाँ से हवा हो लिया। रास्ते में दूधवाले और परचूनीवाले को रुपये देकर घर आया।

मैं उस रात मूर्धन्य साहित्यकार के यहाँ जानेवाला था, नहीं जा पाया। मेरी यही विशेषता है कि जिससे भी मैं उधार लेता हूँ, उसके पास दुबारा जल्दी से जाता नहीं हूँ। वही मुझे खोजता फिरता है। उनके साथ भी यही हुआ। अब वे मेरे यहाँ चक्कर लगाने लगे।

- 124/61-62, अग्रवाल फार्म
मानसरोवर
जयपुर-302020
मोबाइल: +91 9828024500

वी एस पी के बढ़ते कदम

प्रशिक्षण व मानव संसाधन विकास

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में कर्मचारियों की तकनीकी प्रशिक्षण की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से अप्रैल, 1981 में तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान विभाग की स्थापना हुई थी। इस संस्थान के माध्यम से संगठन एवं अन्य संगठनों के तकनीशियनों एवं अभियंताओं को प्रशिक्षित किया जाता है। वर्तमान में यह निम्नलिखित आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं से लैस है:

1. अध्ययन कक्ष:

विभाग में प्रशिक्षण हेतु आवश्यक सभी सुविधाओं के साथ-साथ 5 वातानुकूलित व्याख्यान कक्ष, एक सम्मेलन कक्ष तथा 10 प्रशिक्षण कक्ष और एक बड़ा सा पुस्तकालय उपलब्ध है।

2. वर्कशाप:

यहाँ पर एक वर्कशॉप स्थापित है, जिसमें मशीन शॉप, फिटिंग व असेंब्लिंग शॉप, वेल्डिंग शॉप, हाइड्रॉलिक्स व सामग्री प्रहस्तन अनुभाग, वाल्व व पंप सेक्शन, यांत्रिकी अनुरक्षण अनुभाग, कौशल विकास कार्यक्रमों के संचालन हेतु कार्पेंट्री शॉप जैसे अनुभाग पूर्ण सुविधाओं के साथ बनाए गए हैं।

3. इलेक्ट्रॉनिक्स प्रयोगशाला:

इस प्रयोगशाला में प्रशिक्षण व अभ्यास की सुविधा हेतु एनलॉग व डिजिटल वर्क स्टेशन, माइक्रो प्रॉसेसर परीक्षण सामग्री, पी एल सी एवं डिजिटल ड्राइव आदि जैसे अत्यंत आधुनिक उपकरण लगे हुए हैं।

4. कंप्यूटर प्रयोगशाला:

तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान में दो कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ स्थापित हैं, जहाँ उन्नत कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम व कंप्यूटर साक्षरता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किये जाते हैं। प्रतिवर्ष लगभग 2000 कर्मचारी इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर लाभान्वित होते हैं।

5. केंद्रीय पुस्तकालय:

संगठन में कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन हेतु 1982 से ही भारी मात्रा में पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, 25 ई-पत्रिकाओं, 20000 भारतीय व अंतरराष्ट्रीय स्टैंडर्ड की पुस्तकों वाला वातानुकूलित पुस्तकालय की स्थापना की गई है। यहाँ ई-पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध है।

6. प्रेक्षागृह एवं श्रव्य-दृश्य अनुभाग:

तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान के लिए एक विशेष प्रेक्षागृह बनाया गया है। 310 लोगों के लिए बनाए गए इस वातानुकूलित प्रेक्षागृह में सभी आधुनिक सुविधाएँ मौजूद हैं। तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान में एल सी डी प्रोजेक्टर, ओवरहेड प्रोजेक्टर, 16 मिलिमीटर वाले फिल्म प्रोजेक्टर, ओपेक फिल्म प्रोजेक्टर, पी ए प्रणाली टी वी व वी सी आर आदि जैसी श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री आदि के रखरखाव व सहयोग हेतु एक अनुभाग भी स्थापित है।

8. प्रशिक्षणार्थियों के लिए छात्रावास:

प्रशिक्षण के लिए आने वाले नव-नियुक्त एवं अन्य संगठनों से आए प्रशिक्षणार्थियों के निवास हेतु हॉस्टल-3 (150 कमरे), हॉस्टल-2 (100 कमरे) और हॉस्टल-1 (50 कमरे) बनाए गए हैं। इनमें भोजनालय, मनोरंजन कक्ष और इंडोर व आऊटडोर खेल की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई गई हैं।

प्रशिक्षण योजना:

नये कर्मचारियों को प्रशिक्षण:

संगठन में विभिन्न शाखाओं के नव नियुक्त अभियंताओं, डिप्लोमा अभियंताओं, तकनीशियनों आदि को नियुक्ति के बाद प्रशिक्षित करके संयंत्र में भेजने लायक बनाया जाता है। उपयुक्त प्रशिक्षण के पश्चात ही उन्हें संयंत्र के विभिन्न विभागों में तैनात किया जाता है।

प्रशिक्षु प्रशिक्षण:

संगठन द्वारा प्रशिक्षु अधिनियम, 1961 के अधीन इंजीनियरिंग, डिप्लोमा एवं आई टी आई प्रमाणपत्र धारकों को प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इंटरमीडियट पास लोगों को भी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित करने हेतु प्रशिक्षु आयुक्त एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षु प्रशिक्षण निदेशालय के परामर्श से प्रशिक्षु के रूप में नियुक्त किया जाता है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण:

सूचना प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर विज्ञान आदि विषयों में इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम के अध्ययनरत विद्यार्थियों को उनके विश्वविद्यालय/संस्थान की आवश्यकताओं के अनुकूल 2 से 8 सप्ताहों की अवधि के लिए परियोजना कार्य अथवा प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की जाती है। वे अपने एवं संगठन के हित के दृष्टिगत परियोजना कार्य हेतु उपयुक्त विषयों का चयन करते हैं।

कर्मचारी प्रशिक्षण:

संगठन में शुरुआत से ही एक निश्चित प्रबंधन विकास सिद्धांत को अपनाया गया है। प्रशिक्षण व विकास गतिविधियों का नियमित अनुश्रवण, समीक्षा हेतु विभागीय अध्यक्षों को सदस्य बनाकर दो प्रशिक्षण सलाहकार समितियों का गठन किया गया है। हर साल प्रशिक्षण संबंधी जरूरतों के विश्लेषण पश्चात

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का स्वरूप, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या निर्धारित करते हुए प्रशिक्षण-कैलेंडर बनाया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए विभिन्न विभागों से प्रशिक्षण सूचना प्रणाली जैसे आनलाइन सूचना प्रणाली के माध्यम से नामांकन आमंत्रित किये जाते हैं। संगठन की आवश्यकताओं के दृष्टिगत विशेष ज्ञान हेतु विदेशों में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु नामित भी किया जाता है।

प्रशिक्षण सेवा:

तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अन्य उद्योगों के लिए प्रशिक्षण सेवा प्रदान की जाती है। साथ ही वाह्य संगठनों के कर्मचारियों एवं शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों के लिए सप्ताह में शुक्रवार एवं शनिवार के दिन संयंत्र संदर्शन कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। अब तक लगभग दस हजार लोग इस सुविधा का लाभ उठा चुके हैं। इसके अलावा प्रशिक्षण विभाग द्वारा विभिन्न विषयों पर कर्मचारियों के ज्ञान व अनुभव को बढ़ाने के उदेश्य से विकासधारा नामक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाता है।

प्रबंधन विकास केंद्र

तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान की तर्ज पर ही वी एस पी में एक और प्रशिक्षण केंद्र है, जिसे प्रबंधन विकास केंद्र के नाम से जाना जाता है। इस केंद्र में मुख्यत: प्रबंधन विकास से जुड़े विषयों में प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों को आवश्यकतानुसार प्रशिक्षित अथवा अभिप्रेरित किया जाता है और कंपनी के उद्देश्य एवं लक्ष्यों के अनुरूप मानव संसाधन विकास के सशक्तिकरण का प्रयास किया जाता है। इस क्रम में निम्नलिखित कार्यक्रम चलाए जाते हैं:

आंतरिक प्रबंधन विकास कार्यक्रम:

निष्पादन मूल्यांकन, प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं के सर्वेक्षण, प्रशिक्षण परामर्शदात्री समिति के सुझावों एवं प्रबंधन की प्राथमिकताओं व नीतिगत उपायों के अनुरूप आंतरिक कार्यक्रमों की वार्षिक योजना बनाई जाती है। यहाँ आंतरिक व बाह्य विशेषज्ञ अपने व्याख्यानों से कर्मचारियों को विभिन्न विषयों की जानकारी देते हैं।

बाह्य कार्यक्रमों में कर्मचारियों का नामांकन:

प्रबंधन विकास केंद्र, संगठन की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से आयोजक संस्थानों व वक्ता की साख, कर्मचारियों के कौशल एवं बजट की उपलब्धता आदि के दृष्टिगत सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से कर्मचारियों को प्रतिष्ठित संस्थानो/संगठनो के कार्यक्रमों हेतु नामित करता है।

कार्यपालक निष्पादन मूल्यांकन:

प्रबंधन विकास केंद्र के मूल्यांकन कक्ष द्वारा सभी कार्यपालकों के मूल्यांकन प्रतिवेदनों का अनुश्रवण एवं समन्वय किया जाता है। मूल्यांकन प्रतिवेदनों में उपलब्ध जानकारी की जाँच एवं विश्लेषण किया जाता है और आवश्यक कार्रवाई हेतु संबद्ध अभिकरणों को भेजा जाता है।

संगठनात्मक अनुसंधान:

प्रबंधन विकास केंद्र के अंतर्गत एक कक्ष गठित है, जो आंतरिक सर्वेक्षण एवं अध्ययन जैसे विभिन्न पहलुओं की परिकल्पना एवं कार्यान्वयन द्वारा संगठनात्मक विकास को सुनिश्चित करता है। इन पहलुओं से मानव संसाधन संबंधी विभिन्न मामलों के संदर्भ में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में प्रबंधन को सुविधा होती है। साथ ही कक्ष द्वारा कर्मचारियों को विभिन्न मंचों के माध्यम से अपने विचारों के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान किया जाता है।

सक्षमता मापन अभ्यास:

प्रबंधन विकास केंद्र, कार्यपालकों की क्षमताओं का लगातार मूल्यांकन करता है, जिसके आधार पर उच्च प्रबंधन द्वारा उन्हें भविष्य में कंपनी के विशेष पदों का कार्यभार सौंपने से संबंधित निर्णय लिये जाते हैं।

संस्थानों की सदस्यता:

आर आई एन एल, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों का निगमित सदस्य है। अत: वेहतर परिणामों की प्राप्ति एवं नवीकरण शुल्क के भुगतान हेतु प्रबंधन विकास केंद्र इन संस्थानों से लगातार संपर्क करता रहता है।

उद्योग-संस्थानों के बीच परस्पर विचार-विमर्श:

उद्योग एवं शैक्षणिक संस्थानों के बीच वेहतर संबंधों की स्थापना के क्रम में देश के विभिन्न संस्थानों के विद्यार्थियों को मानव संसाधन प्रबंधन, विपणन, सामग्री प्रबंधन, प्रबंधन सेवा, निगमित योजना, वित्त प्रबंधन आदि क्षेत्रों में संयंत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

अतिथि व्याख्यान:

कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को परस्पर ज्ञान का संचार करने एवं अन्य संस्थानों से जुड़े रहने का अवसर प्रदान करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के अतिथि व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। प्रबंधन विकास केंद्र कर्मचारियों एवं ग्राहकों के साथ-साथ कंपनी के सभी अंशधारकों की अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु निरंतर प्रयासरत रहता है। इसके अलावा कर्मचारियों को आवश्यक सहयोग भी प्रदान करता रहता है, ताकि वे आनेवाले समय में संगठन के विकास हेतु अपना भरपूर सहयोग दे सकें।

कविताएँ

किसान

धरती को स्वर्ग बनाने वालों की कमी नहीं है।
है कहता कौन बंजर भूमि इसमें नमी नहीं है।
चट्टान तोड़ मजदूर यहाँ अथक परिश्रम करते हैं।
जन मानस के लिए यहाँ पर रात-दिन वे मरते हैं।।

दुनिया में दान बड़ा पर अन्न-दान से बड़ा कहाँ है।
दानी तो बहुत हुए पर किसान से बड़ा कहाँ है।
झुग्गी-झोंपड़ी का वासी कितनी मेहनत करता है।
सर्दी-गर्मी वर्षा से वह नहीं जरा भी डरता है।।

तन पर नहीं मखमली कपड़े, नहीं पैर में जूता।
उगा सके मिट्टी से सोना कहाँ किसी में बूता।
अन्न उगा कर पेट हमारा वही बेचारा भरता है।
इसलिए तो सुबह-शाम वह काम खेत में करता है।।

भोर-भोर जब मुर्गा बोले खुल जाती है उसकी नींद।
चाहे होली रहे दिवाली रहे मुहर्रम या हो ईद।
मेहनत उसकी किस्मत है मेहनत उसकी जीत।
मेहनत के बल पर उसने भाग्य को दिया है लिख।।

पाल-पोस कर अपने देश को योग्य वह बनाता है।
मातृ-भूमि का रक्षक वह अन्नदाता कहलाता है।
जीवन रक्षा करे किसान वतन की रक्षा करे जवान।
जयकारा एक साथ बोलो जय जवान जय किसान।।

बेटियाँ

माँ के पावन आँचल में, जब बिटिया जन्म लेती है।
अपनी ही माँ को, वह क्या-क्या दुख नहीं देती है।
बिटिया माँ है, बहन है, बीवी भी है भविष्य की।
सृष्टिदायिनी देवी है वह, शिक्षिका अपने शिष्य की।
रूप है उसका नारी का, संरक्षक का, अधिकारी का।
पूजनीय रही सदा वह जग में, हर पुत्र नर-संस्कारी का।
सम्मान जहाँ है नारी का, वह जगह नमन-वंदन की है।
जहाँ ममता-करुणा की रक्षा हो वह जगह अभिनंदन की है।
बेटी तो पराई होती है यह बात हुई पुरानी अब।
दीपा-बिंदु ने लहराया तिरंगा, मिट गए सब भेद तब।
अरुंधती भी बेटी है, बचेंद्री पाल और कल्पना को देखो।
इंदिरा भी इकलौती बेटी थी, उसके जज्बे को परखो।
आगे का आने वाला युग, बेटी के नाम समर्पित होगा।
बेटियों के कंधों पर जग का उद्धार आधारित होगा।

- सुश्री आकांक्षा मिश्रा, 11 वीं कक्षा
केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगरम
विशाखपट्टणम

आम का पेड़

आम का वह पेड़
आज भी वैसे ही खड़ा है
फागुन में बौर जाती जब
हर डाली पर
भौरों का डेरा
चिड़ियों का कलरव
कोयल की कुँहू-कुँहू से
जाग उठती है हर सुबह
न जाने किससे
क्या-क्या कह जाते
ये अंजान परिंदे
मुझे भी याद आ जाते
अपने वे दिन जब
कभी उसकी छाया तले
पढ़ा करती थी जिंदगी के फलसफे
और गढ़ती थी
परिंदों की ऊँचाई सी उड़ान,
आम के टीकोरों की
चटपटी चटनी का स्वाद
अब भी लुभाती है
गर्मी में आम का पन्ना
पारंपरिक तरीका था
गर्मी से बचने का
फलों के राजा की
बात ही निराली है
इससे घर-बाहर हरियाली है
पके जाए तो रसदार
मजेदार रस की खुशहाली है
बाद में बच जाती
गुठली बेचारी है
हो सके तो

आम का एक पेड़ लगाइए
छाया के साथ-साथ
फल खूब खाइए
वृक्षारोपण काम महान है
एक वृक्ष दस संतान समान है।

विज्ञान

जल, थल और व्योम में आज हमारा है अभियान
देश विदेश के बात का कर लेते घर बैठे ज्ञान
नहीं असंभव जानना अब सब कुछ जाना-जाना है
हर असंभव को संभव करता विज्ञान महान है
घर का श्रृंगार टी वी है देश में आज मिसाइल है
इंटरनेट में सारी दुनिया, हर हाथ में अब मोबाइल है
ब्रिटेन, रूस, जापान, अमेरीका कहने की बस दूरी
बटन दबाओ बात करो मन की इच्छा पूरी
जो चाहो गूगल से पूछो, अमेजॉन से खरीद लो
हॉलीवुड, बॉलीवुड सबको एक साथ समेट लो
आगे भी दुनिया देखेगी
जो लोग कभी सोच न सके आनेवाली पीढ़ी
उसको करके सीखेगी
नमन है विज्ञान को नमन है इंसान को
नमन है भारत नमन है हमारे हिंदुस्तान को

- सुश्री सुप्रिया कुमारी
11 वीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

साथी

मेरी एक सहेली है
नटखट बड़ी अलबेली है
माँ-बाप की प्यारी बिटिया
उस पर फिर अकेली है
याद सताती उसकी हरदम
बचपन संग में खेली है
साथ पढ़ी और साथ है
खेली खाते बड़ी हुई
अचरज होगा सुनकर नाम उसका
अठखेली है
पापा मम्मी प्यार से बुलाते
अहेली है
देखने में गुड़िया
मिजाज से जहर की पुड़िया है
मैं तो हिंदी वाली हूँ,
पर वो बेचारी उड़िया है
जिंदगी में हर किसी को
साथ चाहिए
माँ बाप का सिर पे
हाथ चाहिए
माँ बाप बच्चों के
सपनों को गढ़ते हैं
बच्चे वही आगे बढ़ते हैं जो
मन लगाके पढ़ते हैं
साथी का काम है
साथ निभाना
सुख और दुख में हमेशा काम आना
बिना साथी के ये जिंदगी अधूरी है
साथी नहीं तो जिंदगी भर
फासला और दूरी है
हो सके तो हर कोई साथी बनाइए
जिंदगी भर प्रेम से दोस्ती निभाइए।

वक्त

वक्त को जिसने न समझा उसे सदा झुकना पड़ा है
बच गया तलवार से तो फूल से कटना पड़ा है
द्रौपदी का वक्त देखो दु:शासन खींचता है चीर
कृष्ण को आती दया देख द्रौपदी का नीर
क्या पता था जानकी को बहू बन के घर जो आई
वक्त ने ऐसा घुमाया दर-दर की ठोकरें खाई
क्या समय था वन में बाण लक्ष्मण को लगा था
गोद में लेकर प्रभु ने आँख भर रोया था
वक्त ने राजा को रंक बना डाला है
अपने साँचे में जिसको चाहा ढाला है
न मानो तो देख लो रावण कौरव कंस
वक्त ने कितनों का कर दिया विध्वंस
थाम लो वक्त को हाथ से जाए न फिसल
वक्त रहते चेत लो वरना हो जाएगा छल।

- सुश्री अनूपा कुमारी
11 वीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

मोह

भरतमुनि के अपने रस सिद्धांत में मोह को एक संचारी भाव के रूप में व्याख्यायित किया गया है। उन्होंने आकस्मिक आघात, आपत्ति, रोग, भय, उद्वेग एवं गत शतुत्रा का स्मरण आदि को मोह के विभाव के रूप में परिभाषित किया है और निश्चेष्टता, गिरने, झुकने और ठीक-ठीक न देख पाने को इसके अनुभाव बताया है।

इसी प्रकार रस सिद्धांत के एक और विद्वान विश्वनाथ ने इस श्लोक के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की चेष्टा की है;

'मोहो विचित्रताभीतिदु:खवेगानुचिन्तनै:
मूर्च्छनाशानपतनभ्रमणादर्शनादिकृतं।।' (सा.द.3:150)

अर्थात भय, दुख, घबराहट, अत्यंत चिंता आदि के कारण उत्पन्न चित्त की विकलता ही मोह है। इसी क्रम में रीतिकालीन कवि देव ने भी इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है कि,

अद्भुत दरसन वेग भय, अति चिंता अति कोह।
जहाँ मूर्च्छा बिसमरन लम्बतादि कहु मोह।।

यह तो हुई रस निष्पत्ति के हिसाब से मोह की व्याख्या। लेकिन दर्शन के अनुरूप यदि हम देखें तो मोह भी प्रेम का समानार्थी है। फिर भी मोह, प्रेम से अलग और विशेष है। वस्तुत: प्रेम का दायरा व्यापक व बहुत विशाल होता है, जबकि मोह अपने बहुत करीबी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति उत्पन्न होता है। महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने गांडीव रख दिया और व्यथित होकर भगवान श्रीकृष्ण से कहा कि 'हे! पार्थ मैं किस पर बाण चलाऊँ?' उस समय अर्जुन के मन में मोह उत्पन्न हो गया था और श्रीकृष्ण ने अर्जुन को मोह से मुक्ति दिलाई थी। मोह और प्रेम में सूक्ष्म अंतर है। प्रेम सकारात्मक व व्यापक है तो वहीं मोह तुच्छ व सीमित है।

जिस प्रेम को हम स्त्री-पुरुष संबंधों में देखते हैं, वह प्रेम नहीं बल्कि आसक्ति से लबरेज होता है। मोह ही जन्म-मरण का कारण होता है, प्रेम नहीं। मोह की वजह से लोग कभी सुखी तो कभी दु:खी होते हैं। लेकिन प्रेम की वजह से कोई दु:ख नहीं होता। कुछ विद्वान मोह को प्रेम का पर्याय मानने के तर्क में कहते हैं कि मोह प्रेम का तुच्छ सांसारिक रूप है और जब वह बढ़ते हुए विशालता को हासिल कर लेता है, तब ईश्वरीय प्रेम के रूप में विकास कर लेता है। मोह से ही सांसारिक संस्कारों का निर्माण होता है और परिणामस्वरूप अन्य विकारों का जन्म होता है। यदि कहा जाए कि मोह की व्यापकता दीपक की तरह है और प्रेम की व्यापकता सूर्य की तरह तो यह एक बेहतर उदाहरण होगा।

मोह की भावना वहाँ बलवती होती है, जहाँ व्यक्ति को सुख मिलता है या सुख प्राप्ति की आशा होती है। ओशो ने मोह के बारे में कहा है कि; 'मोह प्लास्टिक के फूल की तरह है। यह बेहद सुविधाजनक है। लेकिन जब यह आपके जीवन में आता है, तो साथ में चिंता और बेचैनी भी लाता है।'

प्राणी का पहला मोह यह है कि वह सोचता है कि 'मैं रहूँ... मैं जीता रहूँ... कैसे भी हो, मुझे जीना है।' इन्हीं विचारों के इर्द-गिर्द वह कई अन्य मोह पाल लेता है। संक्षिप्त में कहा जाए तो 'मोह, मृत्यु के विरुद्ध एक अनवरत संघर्ष है।' जीवन के प्रति उपजे मोह के संबंध में एक अरबी कहानी उल्लेखनीय है। यथा,

एक लकड़हारा था। वह बड़ा मेहनती था। लेकिन समय के साथ जब बूढ़ा हो गया तो वह लकड़ियों का बोझ उठा नहीं पाता था और ईश्वर को याद करने लगता था तथा अक्सर कहता था कि 'हे! ईश्वर अब मुझे उठा लो।' एक दिन अचानक मौत उसके समक्ष उपस्थित हो गई। मौत ने पूछा 'कहिए! क्या सेवा करूँ? बूढ़ा लकड़हारा घबरा गया। उसने संयम बरतते हुए कहा कि 'कुछ नहीं बोझ भारी हो गया था, सोचा किसी को पुकार लूँ। अत: आपको बुला लिया। कृपया मेरे बोझ को उतार दें। वह लकड़हारा मौत को सामने देखकर घबरा गया और मोह से मुक्ति के मार्ग को चुनते-चुनते वंचित हो गया।

बुद्ध ने भी मोह के विषय में कहा है कि 'मनुष्य लोभ से लुब्ध, द्वेष से दुष्ट और मोह से मूढ़ चित्त हो अपने दु:खों से ही दु:खी रहता है। आदमी दूसरों के दु:खों से भी दु:खी रहता है और मानसिक वेदना और पीड़ा का अनुभव करता है। लेकिन यदि उसके लोभ, द्वेष और मोह का मूलोच्छेदन हो जाए तो आदमी न अपने दु:खों से दु:खी होगा, न दूसरों के दु:खों से दु:खी होगा और न ही मानसिक वेदना और पीड़ा का अनुभव करेगा।'

बुद्ध आगे कहते हैं 'भिक्षुओं! इसका ज्ञान होने से (जो विज्ञ और श्रेष्ठ है) मनुष्य के मन में इसके प्रति उपेक्षा उत्पन्न होती है। उपेक्षा उत्पन्न होने से रागाग्नि आदि की शांति होती है और रागाग्नि आदि के शांत हो जाने से वह मुक्त हो जाता है और मुक्त हो जाने के बाद उसे आभास हो जाता है कि वह मुक्त हो गया है।'

लेकिन सांसारिक बंधनों और भौतिकतावादी समाज के निर्माण में मोह की भूमिका एक उत्प्रेरक की भाँति होती है। मोह के कारण स्पर्धा और भौतिक विकास की सारी कवायदें संचालित होती हैं। इस प्रकार उपभोक्तावादी समाज के निर्माण में मोह एक निंदनीय नहीं, बल्कि प्रशंसनीय भूमिका निभाता है।

सुगंध रचनाकार सम्मेलन

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र द्वारा **24-25** जनवरी, **2017** को 'सुगंध रचनाकार सम्मेलन' का आयोजन किया गया था। यह आयोजन 'सुगंध' पत्रिका के प्रकाशन के सोलहवें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में था। इसमें भाग लेने हेतु आमंत्रित सदस्यों में डॉ श्रीराम परिहार (खांडवा), श्री सुभाष सेतिया (दिल्ली), श्री सुधीर निगम एवं डॉ राजेंद्र तिवारी (कानपुर), डॉ सुरेश उजाला, डॉ अमिता दुबे, डॉ रश्मिशील (लखनऊ), डॉ रामप्यारे प्रजापति, श्री सुरेश चंद्र शर्मा,

श्री दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' (सुल्तानपुर), डॉ ओमप्रकाश पाण्डेय 'मंजुल' (पीलीभीत), डॉ लक्ष्मी शर्मा (जयपुर), डॉ मंजू शर्मा (चुरू), डॉ मदन सैनी (बीकानेर) के साथ-साथ स्थानीय सदस्य डॉ एस कृष्णबाबु (संस्थापक संपादक, सुगंध), डॉ डी पी सिंह, डॉ एम शिवप्रसाद राव, डॉ आभा सिन्हा, श्री बी पापाजी, श्री देवनाथ सिंह 'फौलादी', श्री जगदीश सिंह यादव, श्री आर एस गोने, श्री हरि गणेश रामा राव, सुश्री रश्मि कुमारी, सुश्री वी नंदिता के साथ-साथ कई अन्य हिंदी प्रेमी और प्राधिकारी भी शामिल हुए। इस सम्मेलन के दौरान एक ओर आमंत्रित सदस्यों के प्रफुल्लित मन में भाषा और साहित्य के प्रति आयोजकों के अनुराग की गहराई में झाँकने का कौतूहल था, तो आयोजकों के मन में आतिथ्य भाव के साथ भाषा की जमीन को और उर्वरा बनाने की योजनाएँ थीं।

24 जनवरी को चाय-नाश्ते के बाद दिन की शुरुआत भगवान बालाजी के दर्शन से हुई। फिर साहित्यकारों का जत्था संयंत्र भ्रमण के लिए निकला। अवार्ड गैलरी के बाद साहित्यकारों को विभिन्न विभागों का जीवंत प्रचालन एवं दोपहर बाद उन्हें विशाखपट्टणम नगर का भ्रमण कराया गया। पूरा दिन सेल्फी व समूह फोटो लेने की फिक्रमंदी और मन व मस्तिष्क में सब कुछ समेट लेने के चक्कर में ऐसा बीता कि कुछ पता ही नहीं चला। **25** जनवरी को प्रबंधन विकास केंद्र में नियत समय पर 'रचनाकार सम्मेलन' आरंभ हुआ। इसके उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि, निदेशक (परियोजना) श्री पी सी महापात्रा के साथ कार्यपालक निदेशक (निगमित सेवा) श्री आर पी श्रीवास्तव मंच पर आसीन थे। सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सुगंध के संपादक श्री ललन कुमार कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महोदय ने राजभाषा विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं 'सुगंध' के अद्यतन अंक का विमोचन भी किया।

तत्पश्चात अगले सत्र में डॉ एस कृष्णबाबु ने 'सुगंध' से जुड़े कुछ रोचक पहलुओं पर प्रकाश डाला। फिर 'सुगंध' की उप संपादक व उप प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती वी सुगुणा ने पत्रिका

की विकास यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया। एक सत्र विचार मंथन का भी था। इस सत्र का संचालन उप संपादक श्री गोपाल के जिम्मे था। चर्चा का विषय 'आधुनिक साहित्य का सामाजिक सरोकार एवं सांगठनिक पत्रिकाओं की भूमिका' था। उक्त विषय पर डॉ परिहार, डॉ प्रजापति, डॉ लक्ष्मी शर्मा, डॉ सैनी, श्री सुधीर निगम, डॉ उजाला, डॉ 'मंजुल', श्री 'चित्रेश', डॉ सिन्हा, डॉ दुबे, डॉ रश्मिशील, श्री सुरेश चंद्र शर्मा, डॉ मंजू शर्मा और डॉ एम शिवप्रसाद राव आदि सभी ने बहुत ही सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। साथ ही 'सुगंध' पत्रिका के प्रकाशन में और निखार लाने हेतु कुछ सुझाव भी दिये।

सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि एवं संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन और विशेष अतिथि

व निदेशक (कार्मिक) श्री किशोर चंद्र दास सभा में उपस्थित थे। इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य डॉ श्रीराम परिहार ने सम्मेलन के सफल आयोजन हेतु संगठन को बधाई दी। तदुपरांत दोनों वरिष्ठ प्राधिकारियों ने प्रमाण पत्र व शील्ड से सभी सदस्यों को सम्मानित किया। श्री मधुसूदन ने संगठन में राजभाषा संबंधी विशेष उपलब्धियों का उल्लेख किया और 'सुगंध' के विकास में रचनाकारों के योगदान हेतु आभार व्यक्त किया। विशेष अतिथि श्री दास ने पत्रिका में साहित्यिक लेखों के साथ ही तकनीकी साहित्य को भी महत्व देने पर जोर दिया। कार्यक्रम का समापन साहित्यकारों के सम्मान में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन की ओर से आयोजित प्रीतिभोज के साथ हुआ। इस भोज में कंपनी के लगभग सभी वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे।

कार्यक्रम में शामिल रचनाकारों से प्राप्त पत्र संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत हैं:

'24-25 जनवरी को कई सत्रों में संपन्न इस सम्मेलन के पीछे राजभाषा विभाग का भले ही 'सुगंध' का अधिकाधिक सुधार व प्रसार जैसा उद्देश्य रहा हो, पर आमंत्रित साहित्यकारों के लिए यह भाषाई, साहित्यिक और औद्योगिक त्रिवेणी का संगम था, जिसमें सुगंध परिवार सहित आये हुए विद्वान साहित्यकारों ने डुबकियाँ लगाकर आनंद उठाया। इस मेले में ज्ञान रूपी वस्तुओं का डटकर विनिमय हुआ। लोगों ने अपना सीमित ज्ञान देकर अन्यों का असीमित ज्ञान अर्जित कर कबीर के कथन 'आओ, साधो! मेला कीजे। भारी होय सो हमको दीजे। हल्को होय सो हम सो लीजे' को चरितार्थ किया। 'सुगंध' के संस्थापक संपादक डॉ एस कृष्णबाबु जी, वर्तमान संपादक श्री ललन कुमार जी, स्थापना काल से अब तक 'सुगंध' की विकास यात्रा में सहयोग करती आ रही उप संपादक श्रीमती सुगुणा जी तथा महारास में हर गोपी को अपने ही साथ दिखाई देनेवाले श्रीकृष्ण की भांति हर साहित्यकार को अपने ही पास होने का एहसास करानेवाले उप संपादक श्री गोपाल जी आदि के सामीप्य व सान्निध्य से ब्रह्मानंद सहोदर, साहित्यानंद की प्राप्ति हुई।

- डॉ ओम प्रकाश पाण्डेय 'मंजुल', पीलीभीत

सुगंध पत्रिका की यात्रा व विकासक्रम के परिचय के बाद दो सत्रों में सार्थक साहित्यिक परिचर्चा हुई। संयंत्र के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन जी का हमारे बीच लगातार उपस्थित रहना सबसे अधिक उल्लेखनीय रहा। किसी ने सच कहा है:

'दरमियाँ इंसान के बस प्यार होना चाहिए,
हर बशर के मन में ये उद्गार होना चाहिए।
दिलबरी आसां नहीं, ये काम है मुश्किल बड़ा,
दिल की खातिर तो कोई दिलदार होना चाहिए।।'

सत्र का समापन तो होना ही था, पर मन घट तो बार-बार बरसते नेह मेघों के बीच प्यासा का प्यासा बना हुआ था। प्रेम से कोई अघाता नहीं है। पूरे से पूरा निकाल लें, तब भी पूरा बना रहता है:

'पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।'

- डॉ रश्मि शील, लखनऊ

'राजसी सुविधाओं के साथ 'सुगंध' का अपने लेखकों को अपनी धरती पर ले आना और स्वागतोपरांत उसी क्रम में श्रद्धा के साथ वापस भेजना, कौन साहित्यकार 'सुगंध' का अनुरागी नहीं बन गया। 'यादों का संगम' चिरकाल तक इतिहास में समाहित रहेगा। अंत में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के सर्वोच्च अधिकारी से लेकर कर्मचारी तक का, 'सुगंध' के संपादक मंडल, कार्मिक, रेखांकन, मुद्रक यहाँ तक कि डिस्ट्रिब्यूटर तक को मैं सादर प्रणाम और नमन करता हूँ।

- डॉ रामप्यारे प्रजापति, सुल्तानपुर

'रचनाकार सम्मेलन के सहभागियों के प्रति दर्शाई गई आपकी सहृदयता और शुभ-चिंता की सुखद स्मृतियाँ मन में सदा बसी रहेंगी। आयोजन को वी एस पी के माननीय अध्यक्ष तथा वरिष्ठ अधिकारियों का न केवल वरदहस्त प्राप्त था, व्यक्तिगत स्तर पर उन महानुभावों ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग भी लिया, रचनाकारों को सम्मानित किया और उनसे संवाद स्थापित किया। सम्मान समारोह को जिस प्रशस्य कौशल से आपने संचालित किया, वह अत्यंत हृदयग्राही था। 'सुगंध' के कारण ही हमें यह स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। इस पत्र का समापन मैं इस दोहे से करना चाहूँगा -

किशोरी चौदह साल की ज्यों चलती निर्द्वन्द्व।
वैसे ही बढ़ती रहे, गृहपत्रिका सुगंध।।'

- सुधीर निगम, कानपुर

कहानी

प्रॉमिस

- श्री राजेश कुमार 'बादल' -

सिर झुकाकर क्यों चलते हो... धवन? अच्छा नहीं लगता। धवन अचानक उठे इस सवाल से सोच में पड़ गया। उसने माया से कहा, 'सीधा ही चलता हूँ... सिर झुकाने का सवाल ही नहीं उठता।' माया ने मुस्कान बिखेरते हुए कहा, 'मुझे सिर उठाकर चलने वाले लड़के ही अच्छे लगते हैं।' माया सुबह-सुबह घर की बनी हुई निमकी और खजूर देने धवन के घर आई थी और जाते-जाते उस पर यह धौंस जमा गई।

धवन सोच में पड़ गया। माया को मेरे चाल-ढाल पर क्यों एतराज है? उसे क्या हक है? कहीं वह मुझे पसंद तो नहीं करती...? शायद... इसलिए चाहती है कि मैं सबसे बेहतर दिखूँ? पर भीतर ही भीतर वह खुश भी था कि माया उसे पसंद करती है। लेकिन सिर झुकाकर चलने वाली बात उसे परेशान किए हुई थी। क्या सच में मैं सिर झुकाकर चलता हूँ? सिर झुकाकर चलना शालीनता की निशानी भी तो हो सकती है। दूसरों के प्रति आदर भाव प्रकट करने का प्रयास भी हो सकता है। धवन घंटों खुद को समझाने का असफल प्रयास करता रहा। पर किसी एक निर्णय पर नहीं पहुँच पाया।

धवन कॉलेज से वापस घर लौट रहा था। बस स्टैंड से करीब सौ-डेढ़ सौ मीटर की दूर पर ही उसका घर था। लेकिन रास्ते में ही माया का घर पड़ता था। अब उसके मन में उथल-पुथल सी होने लगी। कहीं माया अपने बालकनी में ही न खड़ी हो?... कहीं फिर से न टोक दे?... उसने अपनी गर्दन को सीधा किया और अपनी चाल में थोड़ा अकड़ भरने का प्रयास करने लगा। हालाँकि यह प्रयास खुद उसे अटपटा सा लग रहा था। फिर भी किसी लड़की के कामेंट को वह परास्त कर देना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि कोई उसे टोके। कम से कम लड़कियाँ तो बिल्कुल नहीं।

अचानक उसकी नजर माया की बालकनी पर पड़ी। माया अपनी बालकनी में खड़ी थी। माया को देख धवन का चेहरा खिल उठता था। मगर आज उसकी गर्दन सीधी हो गई और धड़कन बढ़ गई। आज उसे इस रास्ते जाना भी भारी लग रहा था। पर क्या करे अपनी पसंद का पड़ोसी और रास्ता तो वह नहीं चुन सकता था। अब वह माया की बालकनी के नीचे आ चुका था। अनायास ही उसकी नजर माया से जा टकराई। 'आज तो बहुत स्मार्ट लग रहे हो?' नजर टकराते ही हल्की मुस्कान के साथ माया ने कह दिया। धवन के चेहरे पर भी हल्की मुस्कान की आभा बिखर गई।

धवन लंबी साँस भरते हुए आगे बढ़ लिया। आज उसे विजेता होने का एहसास हो रहा था। माया की टिप्पणी ने उसे तरोताजा कर दिया। उसकी गर्दन अपने आप गर्व से सीधी हो गई। वह मुस्कुराते हुए तेज कदमों से 'माँ...? माँ... मैं आ गया' कहते हुए घर में घुसा।

शाम को धवन अपने दोस्तों के साथ टहलने निकला। सभी अपनी पढ़ाई की परेशानियों को आपस में शेयर कर रहे थे। धवन पढ़ने में सबसे तेज तो नहीं था, मगर प्रथम दर्जे से पास जरूर कर लेता था। बातों ही बातों में मंटू ने बताया कि वह तो सिर्फ इस बार ही बारहवीं की परीक्षा देगा। उसके बाद एक साल तक खूब मेहनत से आई आई टी की तैयारी करेगा। वह किसी प्राइवेट कॉलेज से इंजीनियरिंग नहीं करना चाहता। बाकी सभी दोस्तों का ख्याल था कि जो भी करना है, बस इसी साल करना है, चाहे जिस कॉलेज में हो इंजीनियरिंग तो करना ही करना है।

धवन का ध्यान सबकी बातों के साथ-साथ लोगों की गर्दनों एवं सिर झुकाव पर टिका हुआ था। बस मंटू की चाल में पूरी अकड़ थी। वह एक बिंदास लड़का है, सभी जानते हैं। वह पढ़ाई में कमजोर भले ही है। लेकिन शरीर और साहस में सबसे आगे है। धवन के दोस्तों में सिर्फ वही एक सिगरेट पीता है, वह भी बिल्कुल हीरो की तरह। धवन ने मंटू के चलने की स्टाइल को बार-बार परख रहा था। जब से माया ने धवन के चलने की स्टाइल पर सवाल उठाया था, तब से धवन का ध्यान सबके सिर और कंधों के बीच के बने कोण पर केंद्रित रहता था।

धीरे-धीरे धवन अपने चलने-फिरने की स्टाइल में बदलाव लाने लगा था। कोई उसे टोके या न टोके, वह खुद अपने को अब एक स्मार्ट और ऊर्जावान की तरह दिखाना चाह रहा था। एक बात और उसमें ऊर्जा और आत्मविश्वास भर रही थी कि वह अपनी मित्र-मंडली में सबसे लंबा था। एक बात उसे बार-बार खलती थी। वह यह थी कि जब भी वह अपने से छोटे लोगों से बातें करता था, तब उसे सिर झुकाकर ही बात करनी पड़ती थी।

आज धवन के घर में सुबह से ही चहल-पहल थी। दोस्तों और सगे-संबधियों का तांता लगा था। घर-परिवार के लोग बेहद खुश थे, क्योंकि धवन इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया था। उसके पिताजी को इस बात का मलाल तो था ही कि बेटे को आई आई टी में सीट नहीं मिल पाएगा। पर खुशी इस बात की थी कि किसी न किसी अच्छे सरकारी कॉलेज में दाखिल हो जाएगा, जो अपने आप में गर्व का विषय था। उस

जमाने में इंजीनियरिंग की पढ़ाई को बहुत प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता था। धवन के अलावा उसके किसी दोस्त का इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में चयन नहीं हुआ था। धवन भी अपनी इस सफलता से बहुत खुश था। खास तौर पर तब, जब अपनी माँ और बाबूजी के चेहरे पर इस सफलता की दमक देखता था।

अगले दिन सुबह-सुबह ही पंडित जी आ गए, आज सत्यनारायण भगवान की कथा जो होनी थी। परिवार के सभी सदस्यों ने उपवास रखा था। कथा समाप्ति के बाद ही सब लोग जमकर प्रसाद के साथ-साथ पूरी-तरकारी और जलेबी खाए। दोपहर के बाद माया भी धवन के घर आ गई थी। कथा के बाद घर के लोगों को आराम करने का मौका मिल गया। लेकिन धवन को माया के साथ समय बिताना पड़ा।

धवन की इस सफलता से माया बहुत ही खुश थी। वह खुद अपने आपको इस परिवार की सदस्य ही समझती थी। दोनों में सफलता की वजह के मुद्दे पर अनायास ही बहस चल रही थी। माया इस सफलता के लिए धवन की मेहनत को श्रेय देना चाह रही थी तो धवन इसे अपने माँ-पिताजी का प्रोत्साहन बता रहा था। माया जब धवन की लगन और शराफत की दुहाई देने लगी तो धवन अपने गुरुजनों के आशीर्वादों का परिणाम बता रहा था।

सुबह से ही धवन अपनी तारीफें सुन रहा था। फिर भी वह बोर नहीं हो रहा था। माया और धवन की बातों का यह सिलसिला अब होस्टल की ओर मुड़ चुका था। माया ने सुन रखा था कि बहुत से छात्र हॉस्टल में जाकर बहुत सी बुराइयों के शिकार हो जाते हैं। सीधे-साधे लड़के गलत संगत में पड़कर नशा एवं अन्य बुरी आदतों की लत लगा लेते हैं। माया इस विषय पर बहुत मर्मज्ञ जैसी उपदेश दे रही थी, मानो उसने खुद उन परिस्थितियों का सामना किया हो। बेचारा धवन उसकी बातों को ध्यान से सुन रहा था। बहुत सारी बातों के बीच माया बार-बार एक बात दोहरा रही थी कि उसे कभी सिगरेट नहीं पीना होगा। अलबत्ता वह किसी विशेष आयोजन पर शराब पीने को उतना बुरा नहीं मान रही थी।

लगभग दो घंटों की गपशप ने धवन के मन में कई प्रश्न खड़े कर दिए। शराब उतनी बुरी क्यों नहीं है, जितनी कि सिगरेट? आखिर सिगरेट से माया की कैसी दुश्मनी हो सकती थी। उस वक्त तक धवन ने सिगरेट और शराब दोनों को कभी चखा नहीं था। मगर होस्टल में क्या होगा? वहाँ चार साल गुजारना होगा उसे। कैसे-कैसे दोस्त मिलेंगे? कब क्या मजबूरी होगी? उन अपरिचित परिस्थितियों की कल्पना मात्र से ही धवन ने खुद से यह वादा करना शुरू कर दिया कि कुछ भी हो जाए, वह कभी किसी के बहकावे में नहीं आएगा। किन्हीं बुरी आदतों का शिकार नहीं होगा। जो भला चाय भी नहीं पीता हो, वह सिगरेट और शराब के चक्कर में कैसे फँस सकता है? 'देखो धवन! एक प्रॉमिस करो कि तुम सिगरेट कभी नहीं पिओगे। हाँ कभी मन किया, एकाध बार शराब ट्राई कर सकते हो। पर सिगरेट कभी नहीं। प्रॉमिस...।' कहते हुए माया ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। धवन ने भी अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर माया को प्रॉमिस... किया।

लगभग दो महीने बाद धवन के कालेज जाने का दिन भी आ गया। समय रेत की तरह कब फिसल गया, पता भी नहीं चला। शाम का समय था। माया धवन के घर आई हुई थी। उसे पता था कि कल सुबह वाली ट्रेन से वह चला जाएगा। आज वह रोज की तरह मुस्कुरा नहीं रही थी। उसके चेहरे पर शांति जरूर थी। लेकिन वह दिल में बिछुड़न का तूफान लिए हुई थी। 'अब कब आना होगा तुम्हारा।' माया ने पूछ ही लिया। 'लगभग छः महीनों के बाद ही।' धवन जानता था कि वह एक सेमेस्टर की परीक्षा के बाद ही उससे मिल पायेगा। इसीलिए नपा-तुला सा जवाब दिया। 'छः महीने...? छः महीने तो बहुत होते हैं। तुम चिट्ठी लिखना।' धवन अब भी चुपचाप मन में उमड़े विचारों से घिरा था। फिर एक गहरी

साँस लेकर माया ने पूछा, 'वहाँ सिगरेट तो नहीं पिओगे न?' धवन ने सिर हिलाकर हामी भरी। फिर अनायास ही बोल पड़ा, 'अगर पी लिया तो... आई मीन मजबूरी आ गयी तो? जैसे रैगिंग के समय अगर सीनियर्स दबाव डालेंगे तो?' माया गुस्से में बोली, 'ऐसा तो एकाध बार हो सकता है।' धवन ने हँसकर कहा, 'अच्छा बाबा कभी नहीं पिऊँगा। यहाँ तक कि रैगिंग के समय भी मैनेज कर लूँगा। अब तो खुश हो?' माया हल्की मुस्कान के साथ अपने अधूरे प्रश्न को याद करते हुए पूछ बैठी, 'और चिट्ठी लिखोगे न?' धवन ने पलट कर उससे प्रश्न किया, 'जवाब दे पाओगी... मेरी चिट्ठी का... या सिर्फ मैं ही लिखूँगा?' माया के चेहरे पर मुस्कुराहट की लहर दौड़ पड़ी। धवन उसकी आँखों में एकटक देख रहा था। विश्वास और संतोष से पूर्ण माया भी उसको ही निहार रही थी। फिर माया ने दुपट्टे में छुपा एक लिफाफा निकाला और धवन की ओर बढ़ा दिया। लिफाफा देख धवन की धड़कन बढ़ गई। धवन ने इधर-उधर नजर दौड़ाई। इन दोनों के सिवा कोई नहीं था। धवन ने पूछा, 'यह क्या है?' माया ने कहा, 'देख लो अब तो तेरे ही पास है।' धवन भीतर से डरा हुआ था। बाद में देख लेंगे इसे कहते हुए धवन ने तुरंत उस लिफाफे को सूटकेस में छिपा दिया।

'भैया मिठाई खाओगे क्या?' धवन की छोटी बहन ने आवाज देते हुए उसके कमरे में आ गयी और माया से भी पूछ बैठी, 'दीदी तुम लो न...।' माया ने हँस कर कहा, 'तेरे भैया ने तो अब तक पूछा ही नहीं।' माया के इस आरोप पर धवन मौन साधे रखा। वह तो ईश्वर का शुक्रिया अदा कर रहा था कि मंजू ने माया से लिफाफा लेते हुए नहीं देखा।

हॉस्टल में रहते हुए धवन को लगभग महीना भर हो चुका था। वह हॉस्टल के जीवन से एड्जस्ट हो चुका था। उसका रूम पार्टनर भी उसकी पसंद का मिला था। इसलिए तालमेल बिठाने में परेशानी नहीं हुई। उसका रात का भोजन आठ-साढ़े आठ बजे तक हो जाता था। मेस भी तो नौ बजे तक ही खुला रहता था। आज कुछ दोस्त एक अंग्रेजी फिल्म देखने गए हुए थे। उसका रूम पार्टनर भी गया था। धवन को अंग्रेजी फिल्म में रुचि नहीं थी। धवन अपने बेड पर लेटा हुआ सोच में डूबा हुआ था।

तभी उसे माया के उस पत्र को पढ़ लेने की याद आई। उसने झट से सूटकेस खोला। उसके दिल की धड़कन तेज होने लगी। एक के बाद एक तस्वीर आँखों के सामने से गुजरने लगी। एक झटके में ही उसके सामने पूरा घटनाक्रम गुजर गया। माया का मुस्कुराता चेहरा। कुछ ही दिनों की दोस्ती में माया बहुत करीब आ चुकी थी। उसके लगभग हर दो दिन पर उसके घर आना, अपने कॉलेज व दिल की बातों को शेयर करना। कभी-कभी तो फिल्मी पत्रिकाओं के समाचारों पर भी बेबाक चर्चा करती थी। धवन जब कतराने लगता तो कभी-कभी झिड़क भी दे देती। विषय कोई भी क्यों न हो, उसका अपना एक दृष्टिकोण होता था। बहुत ही खुले स्वभाव की वह लड़की थी, जो बोलना चाहे सीधे मुँह पर बोल देने का साहस रखती थी। धवन के दोस्त उसे माया के नाम से जोड़कर चिढ़ाते भी थे। ये सभी बातें धवन को गुदगुदाती भी थीं।

धवन को लग रहा था कि इस लिफाफे में शायद वे बातें लिखी हों, जो माया उससे कभी कह न सकी हो। लेकिन यदि ऐसा हुआ भी तो वह उसका जवाब कैसे भेज पायेगा? धवन की चिट्ठी तो माया के मम्मी-पापा की नजरों से भी गुजरेगी? इसी उधेड़बुन में वह गुलाबी लिफाफे को खोल ही दिया। उसने देखा कि उसमें एक ग्रीटिंग कार्ड है पहले पन्ने पर रंग-बिरंगे फूलों की भरमार थी। साथ ही दो छोटे-छोटे दिलनुमा लाल गुलाबों का गुलदस्ता बना था और नीचे लिखा था, 'बेस्ट ऑफ लक' अगले पन्ने पर लिखा था 'डियर धवन' बीच में अंग्रेजी में प्रिंटेड बेहतरीन शुभकामनाओं भरा संदेश और अंत में नीचे लिखा था... 'तुम्हारी माया।'

धवन एक-एक शब्द को बार-बार पढ़ रहा था। इतनी सारी शुभकामनाएँ। धवन अपनी पुरानी यादों में खो चुका था। माया के साथ बिताये उन सारे लम्हों, घंटों की गयी बातों, कभी-कभी किसी बात पर माया का रूठना और फिर मान जाना, सामाजिक बंधनों और पारिवारिक रीतियों पर बेबाक अपनी राय देना और सबसे बड़ी बात यह कि किसी के प्रति बुरा न सोचना और न ही किसी की सफलता से ईर्ष्या करना। माया एक पक्के दोस्त के रूप में अपनी छाप छोड़ चुकी थी। धवन उसे अपनी गर्लफ्रेंड तो नहीं मानता था, मगर वह तो गर्ल ही थी और फ्रेंड भी।

ग्रीटिंग कार्ड में माया के हाथों लिखे चारों शब्द उसकी आँखों के सामने घूमने लगे। बहुत सारी पुरानी बातों का नया मतलब निकलने लगा था। वह खुली आँखों के सामने अपने सपनों को नए-पुराने, रंग-बिरंगे बंधनों से सजाता चला गया। कई सवालों का नया उत्तर खोजने में लग गया। उसके जीवन में एक नए अनुभव की शुरूआत हो रही थी या नए रिश्ते का जन्म हो रहा था। यह तो आनेवाला वक्त ही बताएगा कि धवन के जीवन में माया की भूमिका क्या होगी, पर अपनी 'प्रॉमिस' पर वह अब भी अडिग था।

- सहायक महाप्रबंधक (सतर्कता)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +91 9000890290

इस्पात खपत के तीन घटक - गुणवत्ता, मूल्य व ग्राहक संतुष्टि

- श्री एस एन डेहरिया -

हमारे जीवन में इस्पात का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि इस्पात नहीं होता तो शायद मानव जाति का तेज विकास संभव नहीं होता। विद्युत लाइन टावर, प्राकृतिक गैस पाइप लाइन, विभिन्न उपकरण आदि में इस्पात का प्रयोग होता है। आजकल सड़क, पुल, गृहनिर्माण, बांध आदि में इस्पात का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होता है। इस्पात उत्पादन और प्रति व्यक्ति खपत का देश के सकल घरेलू उत्पादन में प्रमुख योगदान है, जो देश के आर्थिक और औद्योगिक विकास का संकेतक है।

इस्पात का वैश्विक परिदृश्य :

- 2015 के दौरान विश्व में ठोस इस्पात का उत्पादन 1621 मिलियन टन रहा। इसमें चीन 49.6% के साथ पहले स्थान पर, अन्य एशियाई देश 12.6% के साथ दूसरे स्थान पर, ई यू 10.2% के साथ तीसरे स्थान पर, नाफ्ता (उत्तरी अमेरीका मुक्त व्यापार समझौता) 6.8% के साथ चौथे स्थान पर, जापान 6.5% के साथ पाँचवें स्थान पर था।
- 2015 के दौरान विश्व में परिसज्जित इस्पात की प्रति व्यक्ति खपत जापान में 497.3 किलोग्राम, चीन में 488.6 किलोग्राम, भारत में 60.6 किलोग्राम थी।
- अब भारत विश्व में चीन व जापान के पश्चात तीसरा वृहदतम इस्पात उत्पादक देश बन गया है।

2015 के दौरान विभिन्न देशों में इस्पात की खपत में वृद्धि निम्नलिखित चित्र में देखी जा सकती है:

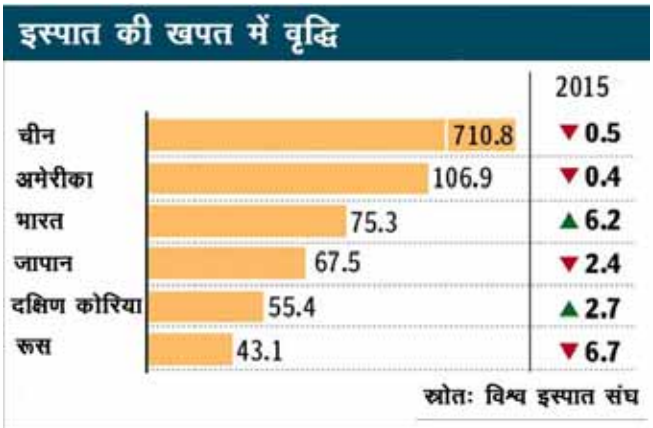

इस्पात का घरेलू परिदृश्य :

- भारत में 2015-16 के दौरान ठोस इस्पात उत्पादन 89.78 मिलियन टन था।
- वर्ष 2015-16 में इस्पात की प्रति व्यक्ति खपत 80.45 मिलियन टन, अर्थात 63.00 किलोग्राम प्रति मनुष्य प्रतिवर्ष थी।
- वर्तमान में देश के शहरी इलाकों में इस्पात की खपत लगभग 170 किलोग्राम प्रति मनुष्य प्रतिवर्ष है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह लगभग 11 किलोग्राम प्रति मनुष्य प्रतिवर्ष है।

आज इस्पात का क्षेत्र मंदी के दौर से गुजर रहा है। भारत में इस्पात उत्पादन के बराबर खपत बढ़ाने के क्रम में केंद्र सरकार कार्यकारी योजना बना रही है। देश में इस्पात की खपत के आँकड़े वैश्विक औसत खपत से काफी कम हैं। इस्पात की खपत बढ़ाने के लिए निम्न बिंदुओं पर विचार किया जा सकता है:

ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति :

भारत में इस्पात की प्रति व्यक्ति खपत वैश्विक औसत की तुलना में 30% कम है। ग्रामीण क्षेत्र में भारत निर्माण, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना, राजीव गांधी आवास योजना जैसी परियोजनाओं द्वारा इस्पात की प्रति व्यक्ति खपत बढ़ाई जा सकती है।

गुणवत्ता पर विशेष बल:

हमें मालूम है कि भारत अब इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में लगभग आत्मनिर्भर होने के कगार पर है और देश में उत्पादित इस्पात की गुणवत्ता भी बहुत बेहतर है। हमारे देश में इस्पात उत्पादन हेतु उच्च श्रेणी का लौह अयस्क मौजूद है, जिसकी विदेशी इस्पात कंपनियों में माँग अधिक है। बैलाडीला का लौह अयस्क विश्व में सबसे बेहतर गुणवत्ता वाला माना जाता है। इसका निर्यात जापान जैसे देशों में किया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे पास उच्च श्रेणी का अयस्क है, अत: पूरी संभावना है कि हमारा इस्पात भी गुणवत्तापूर्ण हो। फिर भी यह उल्लेखनीय है कि आज भी भारत में इस्पात की कुछ किस्म, जैसे इलेक्ट्रिकल इस्पात आदि का देश में जरूरत के मुताबिक उत्पादन नहीं होता। लेकिन अब वह दिन भी दूर नहीं, जब हम उस पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेंगे।

देश में सार्वजनिक उपक्रमों के साथ-साथ कई निजी कंपनियों ने इस ओर ध्यान देना शुरु किया है और आशा है जल्दी ही भारत में भी बेहतर गुणवत्ता वाले विशेष इस्पात का उत्पादन

आरंभ हो जाएगा, जिससे देश में विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप सभी श्रेणियों के अच्छे इस्पात उपलब्ध होने लगेंगे। इससे हमारे देश की आंतरिक जरूरतों की पूर्ति तो होगी ही, साथ ही भारी मात्रा में विदेशी पूँजी की बचत भी होगी।

इसी क्रम में सरकार भी प्रयासरत है, ताकि विदेशी कंपनियों के उत्पाद के आयात पर निर्भरता कम हो सके। आज विश्व के कई देशों में भारतीय इस्पात उद्योग द्वारा निर्मित कई श्रेणियों के इस्पात उत्पादों का निर्यात किया जाता है। वर्तमान में अपेक्षा यह है कि आयात की मात्रा में कमी लाई जाय और निर्यात की मात्रा बढ़ायी जाय।

ब्रांड अंबेसडियर प्रचार-प्रसार :

ब्रांड अंबेसिडर किसी वस्तु या उत्पाद को आम जनता के समक्ष सकारात्मक रूप से प्रस्तुत करता है। शुरु में भारत में ब्रांड अंबेसिडर का प्रचलन नहीं था। लेकिन बदलते समय व बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के अनुरूप भारत में भी इस पद्धति को अपनाया जाने लगा है। इससे कंपनियों को दोहरे फायदे होने लगे, एक तो उनके उत्पाद का मूल्य बढ़ता है और साथ ही लोगों में उस उत्पाद की लोकप्रियता भी बढ़ती है। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड ने देश के कोने-कोने तक अपनी पहचान बनाने हेतु रियो ओलंपिक के बैडमिंटन खेल के रजत पदक विजेता पी वी सिंधु को अपना ब्रांड अंबेसिडर बनाया है। साथ ही राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के उत्पादों के प्रचार-प्रसार के क्रम में रेलवे के साथ किये गये समझौते के अनुरूप विशाखपट्टणम-निजामुद्दीन समता एक्सप्रेस का नाम बदलकर वाइजाग स्टील समता एक्सप्रेस रखा गया है।

मूल्य निर्धारण:

सेवा या उत्पाद के लिए कितनी कीमत वसूली जाए? यह सवाल मूल्य निर्धारण की प्रारंभिक विंदु है। मूल्य निर्धारण के घटकों में उत्पादन लागत, बाजार में उत्पाद की माँग, प्रतिस्पर्द्धी दर और उत्पाद की गुणवत्ता शामिल हैं। मूल्य निर्धारण, विपणन मिश्रण के चार 'पी' में से प्रमुख है। अन्य तीन पहलू हैं उत्पाद, प्रोत्साहन और जगह। चार 'पी' में मूल्य ही एकमात्र आय पैदा करने वाला तत्व है, जबकि शेष तीन लागत केंद्र हैं। उपभोक्ता की जरूरतों को माँग में केवल तभी परिवर्तित किया जा सकता है, जब उत्पाद खरीदने की उपभोक्ता की इच्छा और क्षमता मौजूद हो। इस प्रकार मूल्य निर्धारण विपणन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

घर-घर तक प्रेषण सेवा:

इस्पात उत्पाद वजन में भारी होते हैं। अत: कुछ निश्चित मात्रा से ऊपर उत्पाद खरीदने वाले ग्राहकों को उत्पाद की नि:शुल्क वितरण सेवा अथवा नाममात्र के प्रभार पर वितरण सेवा के माध्यम से बिक्री बढ़ाई जा सकती है।

रोड शो:

उत्पाद की बिक्री में उत्पाद-प्रचार महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। इसके लिए उच्च प्रौद्योगिकी व सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से उत्पाद की जानकारी उपभोक्ता तक पहुँचायी जा सकती है। इससे दो फायदे होंगे, एक तो ग्राहक को उत्पाद की सही जानकारी मिल सकेगी तथा उत्पादों की बिक्री बढ़ेगी।

लोक शिकायत निवारण विभाग:

महात्मा गांधी जी के शब्दों में - 'ग्राहक हमारा देवता है। वह हम पर निर्भर नहीं, बल्कि हम उस पर निर्भर हैं। वह हमारे कार्य में बाधा नहीं, बल्कि हमारे कार्य का प्रयोजन है। वह हमारे व्यापार का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। हम उसे सेवा पहुँचाकर उसे लाभान्वित नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम लाभान्वित हो रहे हैं। वह हमें सेवा का अवसर देकर हमें लाभान्वित कर रहा है।'

अत: हमारे इस प्रयास के तहत लोगों की शिकायतों के निराकरण की व्यवस्था को पुख्ता बनाने के लिए जन शिकायत निवारण कक्ष गठित होना चाहिए। ग्राहकों से संबंधित क्रियाकलापों के लिए एकल खिड़की की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे कि नियत समयसीमा के भीतर लोगों की शिकायतों की सुनवाई व निराकरण पारदर्शी ढंग से हो, जिससे लोगों को कंपनी पर विश्वास बना रहेगा।

ग्राहकों को बनाए रखना:

कोई भी व्यापार ग्राहकों के बिना नहीं चल सकता। अत: गुणवत्तापूर्ण उत्पादों एवं बेहतर सेवा के माध्यम से ग्राहकों की अपेक्षाओं की पूर्ति करनी होगी, जिससे ग्राहकों का विश्वास बना रहेगा। साथ ही उन्हें बनाये रखने में भी सुविधा होगी और व्यापार का विकास संभव होगा।

इन सभी उपायों को अपनाकर इस्पात की खपत बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार भारतीय इस्पात उद्योग का विकास, तद्द्वारा देश का विकास अवश्यंभावी है।

- सहायक महाप्रबंधक (संकर्म संविदा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9989493411

महादान

- श्रीमती अनिता रश्मि -

उन्होंने सामने टंगी तस्वीर पर माला चढ़ाई। ललाट पर कुंकुम लगाया। सर पर हाथ फेरा और आरती की सजी थाल में रखे दिए की लौ को देखते हुए थाल उठा ली। उनकी आँखों से आँसू के दो बूँद टपकने को हुए। अपने को सँभालते हुए थाल घुमाने लगे। तभी बाहर कदमों की आहट हुई। फिर कॉलबेल की आवाज 'ॐ भूर्भुव स्व: - तत्सवितुर्वरेण्यं...' की आवाज आई।

मन में सोचा 'थोड़ी देर बाद खोलूँगा।' और आरती की थाल घुमाते रहे। कॉलबेल फिर बजी। 'आता हूँ।' तीसरी बार कॉलबेल की पुकार को नकार न सके। अस्पष्ट स्वर में प्रार्थना करते हुए धीमी आवाज में कहा उन्होंने, 'ॐ भूर्भुव स्व:।' फिर कॉलबेल बज उठी।

अधूरी आरती को छोड़कर उन्हें दरवाजे तक जाना ही पड़ा। सामने तीन अजनबी नौजवान खड़े थे। 'क्या हम मिस्टर ठाकुर से मिल रहे हैं?' उन्होंने हामी में सिर हिलाया। क्या हम अंदर आ सकते हैं? उनकी आँखों में चमक आ गई थी। उन्होंने आँखों से इशारा किया। तीनों नौजवान अंदर आ गए। उन्होंने बैठने का इशारा किया। तीनों नौजवान चुपचाप बैठ गए और देखा कि मिस्टर ठाकुर का चेहरा झुर्रियों से भरा, पर कठोर तो है लेकिन हाथों में पकड़ी हुई थाल कांप रही है। एक दसेक साल के बच्चे की तस्वीर के सामने वे चुपचाप आँखें बंद कर खड़े हो गए।

सबने एक दूसरे की ओर देखा और सर झुका लिया। उनकी नजरें फिर उठीं तो ड्राइंग रूम के एक कोने में रखी एक ऊँची मेज पर गई। वहाँ एक केक रखा था। साथ में एक मोमबत्ती, एक चाकू भी थे। समझने के भाव से तीनों ने एक दूसरे की ओर देखा। तब तक वे उस मेज की ओर बढ़ने लगे थे। तीनों की ओर देखकर वे केक काटने में व्यस्त हो गए। तीनों चुपचाप खड़े होकर उनका क्रियाकलाप देखते रहे।

> मिस्टर ठाकुर खड़े हो गए और निशांत को गले लगा लिया और जोर से कह उठे, 'मेरा शशांक मिल गया..., मेरा शशांक मिल गया। बेटा! मैंने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मेरा शशांक मिल पाएगा। देखो रीता! शशांक। तू सच कहती थी हमारा शशांक हमेशा जिंदा रहेगा।'

थोड़ी देर बाद वे उनकी ओर मुखातिब हुए, 'आपने हमें पहचाना नहीं होगा अंकल? लेकिन हम आपको तुरंत पहचान गए', एक ने कहा। दूसरे ने उनके हाथ को थामने की कोशिश की। उन्होंने धीरे से छुड़ा लिया, 'आप लोग कौन हैं?' इस प्रश्न के पूरा होने से पहले ही 'यही आपका बेटा शशांक है?' दूसरे ने प्रश्न पूछ लिया। 'हाँ...। लीजिए आप लोग भी केक खाओ।' उन्होंने डगमगाते कदमों से उठकर केक के टेबुल की ओर बढ़ते हुए कहा। केक बाँटते समय की चुप्पी तोड़ते हुए 'अंकल! शशांक की डेथ अचानक हो गई थी क्या?' वे चुपचाप उन्हें देख रहे थे। उन्होंने प्लेटें फिर उनकी ओर बढ़ा दीं।

'अंकल! मैं यह पूछकर आपके दर्द को बढ़ाना नहीं चाहता। लेकिन हम सबके यहाँ आने का एक मकसद है।' प्रश्नाकुल निगाहें थोड़े बाचाल उस नौजवान की ओर घूमीं। 'कौन हैं आप लोग? आप लोगों का नाम क्या है? आने का मकसद...?' एक नवयुवक ने परिचय दिया, 'मैं डेनियल हूँ... यह अली और यह निशांत है। हम एक अस्पताल के एक ही वार्ड में अगल-बगल बेसुध मरणासन्न पड़े हुए थे।' डेनिएल ने उस बुजुर्ग की ओर देखते हुए कहा। 'अंकल! आप विश्वास नहीं कर पाएंगे कि आपके शशांक ने एक साथ तीन-तीन जिंदगियों को बचाया है। हम आपको पिछले पंद्रह सालों से अपने साथ महसूस कर रहे हैं और आपको ढूँढ़ रहे हैं। लेकिन आज यह संभव हो पाया। वह भी शशांक के जन्मदिन पर। हम आपके शहरवाले घर पर गए तो पता चला, आप गाँव चले आए हैं और आपके गाँव का पता किसी को मालूम नहीं था। दो साल की कोशिशों के बाद आपका पता हमें मिला है।' अली ने मुस्कुराते हुए केक का एक टुकड़ा उनके मुँह में डाला। 'अंकल! पता नहीं शशांक ने और कितने लोगों को जिंदगी दी है।' अली की बात काटते हुए उन्होंने पूछा, 'तुम्हारे पास उसका क्या है अली?' 'अंकल मेरे पास उसका एक किडनी है।' अली ने आगे कहना जारी रखा, 'अंकल! वह एक्सीडेंट बहुत भयानक था। हम तीनों एक ही स्कूटर पर जा रहे थे कि एक मोड़ पर एक ट्रक से भयंकर टक्कर हो गया। दोष हमारा भी हो सकता है। शायद! हमारा ही था। उस दिन हम तीनों सड़क पर इधर-उधर बिखर गए थे। बेहोश... और खून से लथपथ।'

'बेहोशी की हालत में हमें कोई नेक इंसान हास्पिटल में पहुँचाया था। वह बेहोशी भी कहाँ टूटने वाली थी अंकल! हम तीनों का कोई न कोई आर्गन उस एक्सीडेंट की वजह से खराब हो चुका था। देखिए न इसके एक हाथ की हथेली अब भी गायब है।' उसने डेनियल की ओर इशारा किया। 'मुझे तो पहले से ही प्राब्लम थी और एक्सीडेंट ने मेरी मुश्किलों को और बढ़ा दिया।

शशांक की किडनी नहीं मिलती तो मैं तो आपके सामने नहीं बैठा होता। वह ट्रक वाला तो हमें सड़क पर छोड़कर भाग गया...।' थोड़ा सहमते हुए डेनियल ने सवाल रख दिया, 'अंकल! एक बात पूछूँ? शशांक के सारे आर्गन्स आपने क्यों दान कर दिए?' वे चौंक उठे। 'हमारा निर्णय था, आपको क्या?' डेनियल सकपका गया, फिर भी बातचीत में विषयांतर लाने के लिए एक दूसरे तरह का प्रश्न किया 'अंकल! आंटी कहाँ हैं?'

मिस्टर ठाकुर ने रोबीले अंदाज में उत्तर दिया, 'वे अब नहीं रहीं। शशांक की मृत्यु से वे बहुत टूट गई थीं। दस दिन के बुखार में ही उन्होंने भी साथ छोड़ दिया।'

अब निशांत एक नए सवाल के साथ वार्ता में कूद पड़ा, 'अंकल! शशांक के अंगदान का निर्णय तो काफी कठिन रहा होगा? उस दु:ख की घड़ी में इतना कठिन निर्ण य आपने कैसे ले लिया?' 'बेटा निशांत! यह निर्णय भी उनका ही था।' उन्होंने बड़ी संजीदगी से उत्तर दिया। तीनों एक साथ बोल पड़े, 'आंटी का?' 'हाँ! जैसे ही शशांक की मृत्यु हुई। वे थोड़ा विचलित जरूर हुई। लेकिन उन्हें पहले ही आभास हो गया था कि अब यह और नहीं...।' बस! उन्होंने अपना निर्णय ले लिया। फार्म भी अस्पताल से वे लेकर खुद आई थीं।' अली ने शशांक की ओर देखा, 'ओह! क्या यह पॉसिबल है?' सबकी निगाहें शशांक की तस्वीर की तरफ मुड़ गईं। एक मासूस सा बच्चा। बेहद प्यारा। मुस्कुराता हुआ चेहरा। मिस्टर ठाकुर ने चुप्पी तोड़ा, 'देख रहे हो न, इसकी मासूमियत! आंटी भी ऐसी ही थीं। लेकिन अपने फैसलों पर हमेशा दृढ़ रहती थीं। रुको... मैं उसकी फोटो दिखाता हूँ।' वे एलबम उठा लाए। अभी उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थिरकी थी जरूर, लेकिन जल्दी ही वे गंभीर हो उठे।

'कहीं न कहीं, कोई न कोई हमारे शशांक को जीवित रखेगा, यही कहकर उन्होंने मुझे मनाया था। मैं कहता रहा कि कैसे उस क्षत-विक्षत शरीर को देख पाऊँगा? वह मानी नहीं। आज पता नहीं, मेरा शशांक किनके पास होगा।' एक दीर्घ श्वास की आवाज उस सन्नाटे को भंग करने लगी।

'अंकल!' झुर्रेदार हाथों पर दो युवा हाथ आ लगे। 'अंकल! आपको पता है, आंटी गलत नहीं थीं। उन्होंने शशांक को कई लोगों में जिंदा कर दिया है। डेनियल में आपके शशांक का लिवर लगा है अंकल।' निशांत ने आगे बढ़कर उनके कंधे पर हाथ रख दिया। 'अंकल! मैं निशांत, खुद आपके शशांक के हृदय के सहारे जिंदा हूँ।' अली भी खड़ा हो गया, 'हाँ अंकल, निशांत ठीक कह रहा है। यदि समय पर हृदय का प्रत्यावर्तन नहीं होता तो मैं आज आपके सामने नहीं होता। हम आपका कैसे आभार व्यक्त करें अंकल? मैं अपने खानदान का इकलौता चिराग हूँ और उस चिराग को पिछले पंद्रह सालों से आपके इकलौते चिराग शशांक ने अपनी किडनी देकर रोशन कर रखा है।' मिस्टर ठाकुर भाव-विह्वल हो उठे 'बेटा निशांत! निशांत!! तुम मेरे शशांक के हृदय के सहारे... जिंदा हो? रीता...। रीता देखो तो मेरा शशांक... रीता देखो।'

'हाँ अंकल!' निशांत ने उनके कंधों पर हाथ रखा। मिस्टर ठाकुर खड़े हो गए और निशांत को गले लगा लिया और जोर से कह उठे, 'मेरा शशांक मिल गया..., मेरा शशांक मिल गया। बेटा! मैंने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मेरा शशांक मिल पाएगा। देखो रीता! शशांक। तू सच कहती थी हमारा शशांक हमेशा जिंदा रहेगा।' इस बीच अली और डेनियल दोनों भी मिस्टर ठाकुर के गले से लिपट गए। वे एक संतोष, सुख और आनंद से भर गए।

वहाँ उन तीनों ने पूरा एक दिन बिताया। दिन भर अंकल का ध्यान बँटाए रखा । आंटी रीता की यादों को जिया और शशांक के जन्मदिन को एक यादगार दिन में बदल दिया।

- 401 ए, समृद्धि एलिगेंस
चौथे पथ, अनंतपुर
राँची-2, झारखंड
मोबाइल: +91 9431701893

आओ भाषा सीखें

लंबसिंगि, जिसे दक्षिण भारत का कश्मीर कहा जाता है,आंध्र प्रदेश राज्य के विशाखपट्टणम जिले के आदिवासी इलाके में स्थित एक छोटा सा गाँव है। यहाँ जाड़े के मौसम, खासकर दिसंबर और जनवरी के महीनों में तापमान कभी-कभी 0 डिग्री सेल्सियस से भी कम हो जाता है। जैसे-जैसे लोग इसके बारे में जान रहे हैं, वैसे-वैसे यहाँ पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है। इस शीर्षक के तहत लंबसिंगि को ही विषय बनाकर कुछ संवाद दिये जा रहे हैं। आशा है कि पाठक हमारे इस प्रयास से लाभान्वित होंगे।

नीरजा : अरे पल्लवी! अब की बार छुट्टियों में कहाँ जाने की योजना है?
నీరజా : అరే పల్లవీ! అబ్ కీ బార్ ఛుట్టియోఁ మేఁ కహాఁ జానే కీ యోజనా హై.
నీరజ : పల్లవీ! ఈసారి వేసవి సెలవులకి ఎక్కడికి వెళ్ళాలనుకుంటున్నారు.
నీరజ : పల్లవీ! ఈసారి వేసవి సెలవులకి ఎక్కడికి వెల్లాలనుకుంటున్నారు।
పల్లవీ : अब की बार हम लोग लंबसिंगि जाने की सोच रहे हैं।
పల్లవీ : అబ్ కీ బార్ హమ్ లోగ్ లంబసింగి జానే కీ సోచ్ రహే హైఁ.
పల్లవి : ఈసారి మేము లంబసింగికి వెళ్ళాలనుకుంటున్నాము.
పల్లవి : ఈసారి మేము లంబసింగికి వెల్లాలనుకుంటున్నాము।
నీరజా : अरे वाह! बहुत सुंदर जगह है।
నీరజా : అరే వాహ్! బహుత్ సుందర్ జగహ్ హై.
నీరజ : ఓహ్! చాలా అందమైన ప్రదేశం.
నీరజ : ఓహ! చాలా అందమైన ప్రదేశమ్।
పల్లవీ : हाँ... इसे दक्षिण भारत का कश्मीर कहा जाता है।
పల్లవీ : హాఁ... ఇసే దక్షిణ్ భారత్ కా కశ్మీర్ కహా జాతా హై.
పల్లవి : అవును, దీనిని దక్షిణ భారత కాశ్మీరు అని అంటారు.
పల్లవి : అవును, దీనిని దక్షిణ భారత కాశ్మీరు అని అంటారు।
నీరజా : हाँ जानती हूँ, इसका दूसरा नाम 'कोर्रबयलु' भी है।
నీరజా : హాఁ జానతీ హూఁ, ఇస్కా దూస్రా నామ్ 'కొర్రబయలు' భీ హై.
నీరజ : అవును తెలుసు, దీనికి 'కొర్రబయలు' అని మరో పేరు కూడా ఉంది.
నీరజ : అవును తెలుసు, దీనికి 'కొర్రబయలు' అని మరో పేరు కూడా ఉంది.
నీరజ : అవును తెలుసు, దీనికి 'కోర్రబయలు' అని మరో పేరు కూడా ఉంది।
పల్లవీ : मतलब?
పల్లవీ : మత్‌లబ్?
పల్లవి : అంటే?
పల్లవి : అంటే?
పల్లవి : అంటే?
నీరజా : तेलुगु में 'कोर्र' का मतलब 'लकड़ी' है और 'बयलु' का मतलब बाहर।
నీరజా : తెలుగు మేఁ 'కొర్ర' కా మత్‌లబ్ 'లకడీ' హై ఔర్ 'బయలు' కా మత్‌లబ్ బాహర్.
నీరజ : తెలుగులో 'కొర్ర' అంటే 'కర్ర' అని, ఇంకా 'బయలు' అంటే 'బయట' అని అర్థం.
నీరజ : తెలుగులో 'కోర్' అంటే 'కర్' అని, ఇంకా 'బయలు' అంటే 'బయట' అని అర్థం।
నీరజ : తెలుగులో 'కోర్' అంటే 'కర్' అని, ఇంకా 'బయలు' అంటే 'బయట' అని అర్థమ్।
పల్లవీ : अरे यार! ठीक से बताओ न!
పల్లవీ : అరే యార్! ఠీక్ సే బతావో న!
పల్లవి : అబ్బ! సరిగ్గా చెప్పు!
పల్లవి : అబ్బ! సరిగ్గా చెప్పు!
పల్లవి : అబ్బ! సరిగ్గా చెప్పు!
నీరజా : कहने का मतलब है कि यहाँ कोई यदि बाहर सोता है तो वह ठंड के मारे अकड़ जाता है।
నీరజా : కహ్‌నే కా మత్‌లబ్ హై కి యహాఁ కోయీ బాహర్ సోతా హై తో వహ్ ఠండ్ కే మారే అకడ్ జాతా హై.
నీరజ : అంటే ఇక్కడ ఎవరైనా బయట పడుకుంటే చలికి గడ్డకట్టుకు పోతారు.
నీరజ : అంటే ఇక్కడ ఎవరైనా బయట పడుకుంటే చలికి గడ్డకట్టుకు పోతారు।
నీరజ : అంటే ఇక్కడ ఎవరైనా బయట పడుకుంటే చలికి గడ్డకట్టుకు పోతారు।
పల్లవీ : अच्छा! इतनी ठंड होती है क्या?

పల్లవీ : అచ్ఛా! ఇత్నీ ఠండ్ హెూతీ హై క్యా?
పల్లవి : అవునా! అంత చలిగా ఉంటుందా?
पल्लवि : अवुना! अंत चलिगा उंटुंदा?
नीरजा : नहीं, गर्मियों में यहाँ का मौसम बहुत अच्छा लगेगा।
నీరజా : నహీం, గర్మియోం మేం యహాం కా మౌసమ్ బహుత్ అచ్ఛా లగేగా.
నీరజ : అలా అని కాదు, వేసవిలో ఇక్కడి వాతావరణం చాలా బాగుంటుంది.
नीरज : अला अनि कादु, वेसविलो इक्कडि वातावरणम् चाला बागुंटुंदि।
पल्लवी : और सर्दियों में?
పల్లవీ : ఔర్ సర్దియోం మేం?
పల్లవి : మరి చలికాలంలో?
पल्लवि : मरि चलिकालंलो?
नीरजा : सर्दियों में यहाँ का तापमान 0 डिग्री से भी कम रहता है।
నీరజా : సర్దియోం మేం యహాం కా తాప్‌మాన్ 0 డిగ్రీ సే భీ కమ్ రహతా హై.
నీరజ : చలికాలంలో ఇక్కడి ఉష్ణోగ్రత 0 డిగ్రీ కంటే తక్కువ ఉంటుంది.
नीरज : चलिकालंलो इक्कडि उष्णोग्रत 0 डिग्री कंटे तक्कुव उंटुंदि।
पल्लवी : अच्छा!
పల్లవీ : అచ్ఛా!
పల్లవి : అలాగా!
पल्लवि : अलागा!
नीरजा : यह विशाखपट्टणम से मात्र 100 किलोमीटर की दूर पर है।
నీరజా : యహ్ విశాఖపట్టణమ్ సే మాత్ర్ 100 కిలోమీటర్ కీ దూర్ పర్ హై.
నీరజ : ఇది విశాఖపట్టణానికి కేవలం 100 కిలోమీటర్ల దూరంలో ఉంది.
नीरज : इदि विशाखपट्टणानिकि केवलम् 100 किलोमीटर्ल दूरंलो उंदि।
पल्लवी : और यहाँ का जीवन काफी व काली मिर्च के उत्पादन पर आधारित है।
పల్లవీ : ఔర్ యహాం కా జీవన్ కాఫీ వ కాలీ మిర్చ్ కే ఉత్పాదన్ పర్ ఆధారిత్ హై.
పల్లవి : ఇంకా ఇక్కడి జీవనం కాఫీ మరియు మిరియం ఉత్పత్తులపై ఆధారపడి ఉంది.
पल्लवि : इंका इक्कडि जीवनम् काफी मरियु मिरियम् उत्पात्तुलपै आधारपडि उंदि।
नीरजा : और इनका अमेरीका व ब्रिटेन में निर्यात भी किया जाता है।
నీరజా : ఔర్ ఇన్‌కా అమెరీకా వ బ్రిటెన్ మే నిర్యాత్ భీ కియా జాతా హై.
నీరజ : ఇంకా ఇవి అమెరికా మరియు బ్రిటెన్ దేశాలకు ఎగుమతి చేయబడతాయి.
नीरज : इंका इवि अमेरिका मरियु ब्रिटेन देशालकु एगुमति चेयबडतायि।
पल्लवी : हम लोग राज्य सरकार के पर्यटन विभाग के पैकेज के सहारे लंबसिंगि जाने की सोच रहे हैं।
పల్లవీ : హమ్ లోగ్ రాజ్య్ సర్‌కార్ కే పర్యటన్ విభాగ్ కే పేకేజ్ కే సహారే లంబసింగి జానే కీ సోచ్ రహే హైం.
పల్లవి : మేము రాష్ట్ర ప్రభుత్వ పర్యాటక శాఖవారి పేకేజిలో లంబసింగి వెళ్ళాలనుకుంటున్నాము.
पल्लवि : मेमु राष्ट्र प्रभुत्व पर्याटक शाखवारि पेकेजिलो लंबसिंगि वेल्लालनुकुंटुन्नामु।
नीरजा : अच्छी बात है। मेरी ओर से यात्रा की शुभकामनाएँ।
నీరజా : అచ్ఛీ బాత్ హై. మేరీ ఓర్ సే యాత్రా కీ శుభ్‌కామనాయేం.
నీరజ : మంచిది. నా తరఫున మీ ప్రయాణానికి శుభాకాంక్షలు.
नीरज : मंचिदि, ना तरफुन मी प्रयाणानिकि शुभाकांक्षलु।
पल्लवी : शुक्रिया।
పల్లవీ : షుక్రియా.
పల్లవి : ధన్యవాదాలు.
पल्लवि : धन्यवादालु।

- जी रमादेवी
प्रबंधक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
मोबाइल: +91 9866321109

अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी

संगठन में दि.14 व 15 फरवरी, 2017 को 'इस्पात की खपत बढ़ाने के उपाय' विषय पर एक अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें इस्पात मंत्रालय, मंत्रालय के अधीन अन्य सभी संगठनों के प्रतिनिधि तथा आर आई एन एल के कुल 62 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रतिभागियों के आलेखों को शामिल करते हुए 'संरचना' नामक विशेषांक प्रकाशित किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में आर आई एन एल के निदेशक (कार्मिक) श्री किशोर चंद्र दास ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

संगोष्ठी में कुल 32 लोगों ने प्रस्तुतीकरण एवं मंतव्य व्यक्त किया। बाद में प्रतिभागियों को 3 समूहों में बांट कर विचार-मंथन हेतु उन्हें विषय से संबंधित तीन उप विषय दिए गए। इन उप विषयों पर समूहों के प्रतिनिधियों ने गहन चर्चा -परिचर्चा की और अपने-अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए। समापन समारोह के मुख्य अतिथि एवं निदेशक (वाणिज्य) श्री पी रायचौधरी ने समसामयिक विषय पर संगोष्ठी के आयोजन एवं सभी प्रमुख संगठनों की भागीदारी के प्रति संतोष व्यक्त किया एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

संगोष्ठी के प्रतिभागियों ने उपरोक्त विषय पर निम्नलिखित सुझाव दिया:

- देश में उपलब्ध कच्चेमाल के पूर्ण उपयोग हेतु प्रौद्योगिकी का विकास
- विशेष श्रेणियों के इस्पात जैसे HSLL, CRGO, Rock bolt, Defence grade,TBQ, Duplex stainless, Pipeline grade etc. का देश में उत्पादन हो।
- ग्रामीण विद्युतीकरण एवं मूल संरचनाओं के विकास पर बल।
- परिवहन क्षेत्र में भारी निवेश की आवश्यकता।
- ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का योजनाबद्ध क्रियान्वयन।
- उत्पादन लागत में कमी लाना।
- क्षेत्रवार मांग बढ़ाने हेतु संभावनाओं की तलाश।
- सुदूर क्षेत्रों में इस्पात की उपलब्धता बढ़ाना।
- स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से इस्पात उपयोग हेतु प्रचार।
- प्रौद्योगिकी आमेलन एवं उन्नयन, आधुनिकीकरण एवं विस्तारण।
- कृषि क्षेत्र में इस्पात के उपयोग पर बल।
- कौशल विकास पर जोर।

जरा गौर करें

उसका जन्म भी वीर-वाँकुरों, कला-साहित्य, रंगमंच-सिनेमा और भारत की विविधताओं को समेटकर चलने में कामयाब पश्चिम बंगाल में हुआ है। **5** जनवरी **1990** को जन्मी इस बच्ची ने जिंदगी की ऊँचाई और ऊँचा उठने की जद्दोजहद को बहुत ही करीब से देखा है। माँ-बाप गरीब किसान हैं। बल्कि यूँ कहें कि अब किसान भी नहीं रह गए हैं तो कोई गलती नहीं होगी। क्योंकि सैकड़ों किसानों की भाँति उनकी जमीन भी सिंगुर में टाटा मोटर्स कंपनी के लिए अधिग्रहित की गई थी। मजबूरी में पिता भोलानाथ और माँ बुलु को सब्जियाँ बेचकर अपनी आजीविका चलानी पड़ी।

एक समय तो ऐसा भी आया, जब माता-पिता ने हार मानकर कह दिया कि अब वे खेल के खर्च को उठाने में असमर्थ हैं और बेहतर यह है कि वह घर चलाने में माँ-बाप का हाथ बँटाए। लेकिन उसके कोच प्रबीर चंद्रा को उसकी लगन और मेहनत पर पूरा भरोसा था। इसलिए उन्होंने हार न मानते हुए उसे सहायता करने का निश्चय किया और आवश्यकतानुसार आर्थिक मदद करते हुए उसके भीतर के एथलीट को मरने नहीं दिया।

बेटी होनहार थी। इसलिए माँ-बाप ने उससे कुछ उम्मीदें पाल लीं और उसे तेज धाविका बनाने के लिए कमर कस लिया। माता-पिता के प्रोत्साहन और उसकी कड़ी मेहनत को पहचान पहली बार सन् **2009** व **2010** में उस समय मिली, जब पश्चिम बंगाल राज्य स्तरीय एथलीट मीट में उसने अपने प्रदर्शन से सबको चौंका दिया। इस महिला एथलीट को सन् **2011** के दौरान राष्ट्रीय खेलों में अपने राज्य से प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला और उसने **100** मीटर एवं **200** मीटर दौड़ प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इस बीच उसके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब हो चुकी थी। वह अब (**2011-12** के दौरान) आर्थिक तंगी से परेशान होकर खेल छोड़ कुछ और करने का लगभग पूरा मन बना लिया था। लेकिन भारतीय रेल ने उसे नौकरी देकर उसे पुन: मैदान में संघर्ष के लिए अवसर प्रदान कर दिया। फिर तो देश ने उससे और बेहतर पाने की उम्मीद पाल ली और उसने भी देश को निराश नहीं किया। उसने **2012** के दौरान दूसरे भारतीय ग्रैंड प्रिक्स चैंपियनशिप में **200** मीटर दौड़ प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता और **2013** के एशियाई खेलों में **200** मीटर दौड़ प्रतिस्पर्धा में कांस्य पदक जीता।

यह एथलीट कोई और नहीं बल्कि आशा रॉय हैं, जिन्होंने अपनी लगन और मेहनत के बलबूते भारत का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है।

RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
VIZAG STEEL
Pride of Steel